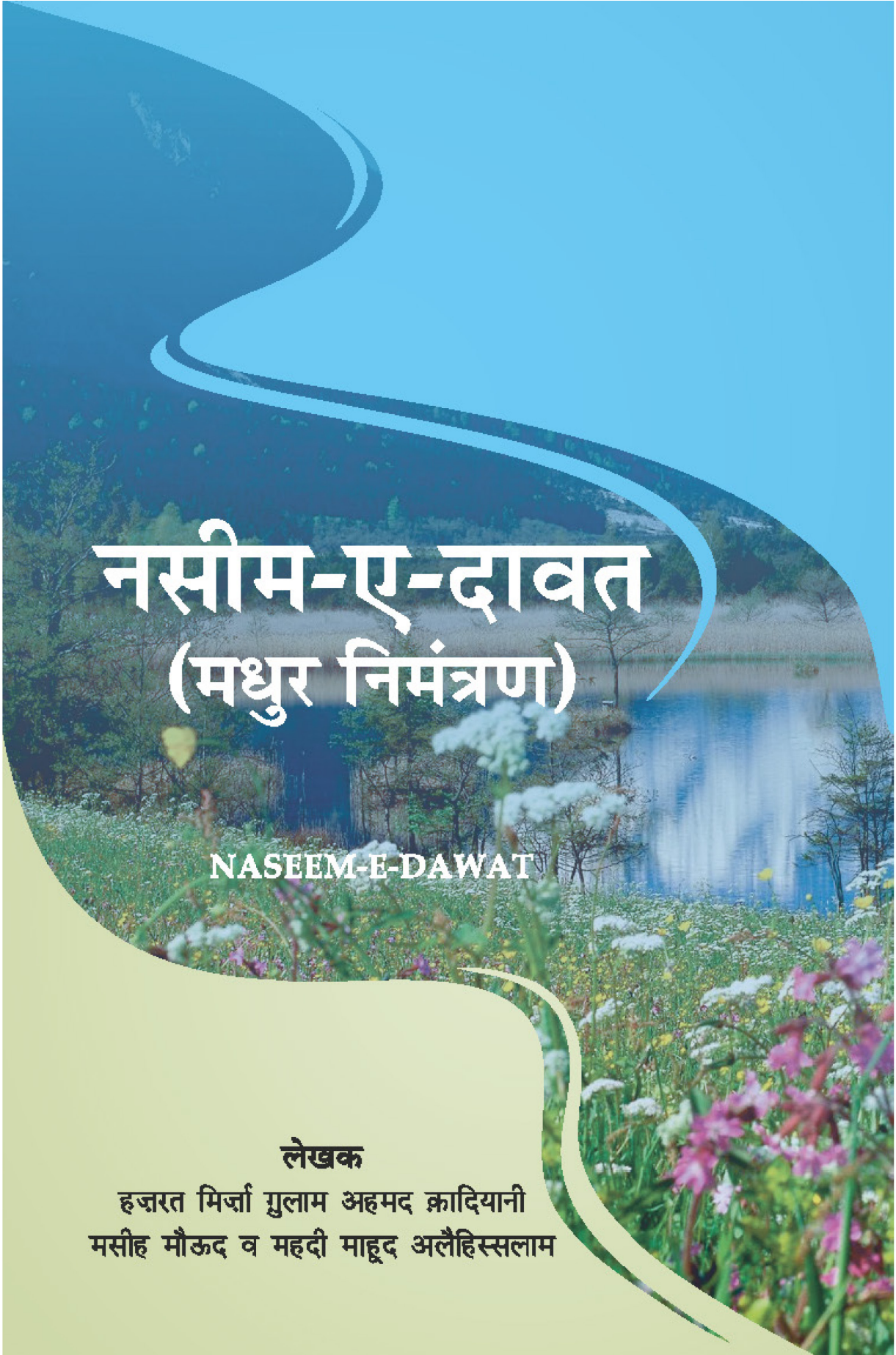

नसीम-ए-दावत
(मधुर निमंत्रण)

NASEEM-E-DAWAT

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नसीम-ए-दावत
(मधुर निमंत्रण)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: नसीम-ए-दावत (मधुर निमंत्रण)
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक	: फ़रहत अहमद आचार्य
टाइप, सैटिंग	: फ़रहत अहमद आचार्य
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) सितम्बर 2020 ई०
संख्या	: 500
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book	: Naseem-e-Dawat (Beautiful Invitation)
Author	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator	: Farhat Ahmad Aacharya
Type Setting	: Farhat Ahmad Aacharya
Edition	: 1st Edition (Hindi) September 2020
Quantity	: 500
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक 'नसीम-ए-दावत' का यह हिन्दी अनुवाद आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य ने किया है। तत्पश्चात आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन एम. ए., आदरणीय नसीरुल हक़ आचार्य, आदरणीय इब्नुल मेहदी लईक एम. ए. और आदरणीय सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद एम.ए., ने इसका रिव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़्दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

नोट

पुस्तक के अंत में पारिभाषिक शब्दावाली दी गई है पाठकगण उसकी सहायता से पुस्तक में प्रयोग किए गए इस्लामिक शब्दों को सरलतापूर्वक समझ सकते हैं।

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने वास्तविक स्वरूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से स्थापित कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत* लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में

---

* **बैअत**- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना- अनुवादक

स्थापित हो चुकी है।

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन तथा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अतः इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद (अल्लाह उनकी सहायता करे) आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

पुस्तक परिचय

नसीम-ए-दावत

1903 ईस्वी के आरंभ में क़ादियान के कुछ नव मुस्लिम मित्रों ने केवल सहानुभूति तथा शुभेच्छा के आधार पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से परामर्श किए बिना "आर्य समाज तथा क़ादियान का मुक़ाबला" के शीर्षक से एक विज्ञापन प्रकाशित किया जिसमें अत्यंत सभ्यता और **शिष्टाचार** और नरमी से आर्यों, हिन्दुओं तथा सिख दोस्तों को दावत दी गई थी कि वे दुआ या मुबाहला या एक धार्मिक कॉन्फ्रेंस के द्वारा अपने-अपने धर्म की सच्चाई का इज़हार करें।

(तारीख अहमदियत जिल्द-3, बहावला अल्हकम, 21 फ़रवरी 1903 ई)

तत्पश्चात 8 फरवरी को आर्य समाज ने इस विज्ञापन के उत्तर में एक विज्ञापन बहुत गन्दा और गालियों से भरा हुआ प्रकाशित किया। इस विज्ञापन में उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में ऐतराज़ करते हुए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपकी जमाअत के सम्मानित दोस्तों के बारे में गाली-गलौज से काम लिया जिनका नमूना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने "नसीम-ए-दावत" में दिया है। (देखो रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 19, पृष्ठ 364 उर्दू एडीशन)

उनके कठोर शब्दों तथा गंदी गालियों को देखते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दिल तो यही चाहता था कि ऐसे गालियाँ देने वाले लोगों को संबोधित न किया जाए परंतु विशेष वह्यी से आपको इसका उत्तर लिखने के लिए आदेश दिया गया। जैसा कि आप फ़रमाते हैं-

"ख़ुदा तआला ने अपनी विशेष वह्यी (ईशवाणी) के द्वारा मुझे संबोधित करके फ़रमाया कि इस लेख का उत्तर लिख और मैं उत्तर लिखने में तेरे साथ हूं। तब मुझे इस ख़ुशख़बरी देने वाली वह्यी से बहुत प्रसन्नता हुई कि उत्तर देने में मैं अकेला नहीं। अत: मैं अपने ख़ुदा से सामर्थ्य पाकर उठा और उसकी रूह

की सहायता से मैंने इस पुस्तक को लिखा और जैसा कि ख़ुदा ने मुझे सहायता दी मैंने यही चाहा कि उन समस्त गालियों को जो मेरे नबी को और मुझे दी गईं नज़र अंदाज़ करते हुए नरमी से उत्तर लिखूं और फिर यह कारोबार ख़ुदा तआला के सुपुर्द कर दूं।"

(देखो रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 19, पृष्ठ 364 उर्दू एडीशन)

विज्ञापन में आर्य समाजियों ने नव मुस्लिमों के बारे में ऐतराज़ किया था कि उनका मुसलमान होना उस समय सही होता जब वे चारों वेद पढ़कर, आर्य धर्म का इस्लाम से मुकाबला करते। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस ऐतराज़ का अकाट्य तर्कों तथा इल्ज़ामी उत्तर देते हुए इस बात पर प्रकाश डाला कि धर्म परिवर्तन के लिए कितने ज्ञान की आवश्यकता है? फ़रमाया- धर्म परिवर्तन के लिए समस्त विषयों की जांच-पड़ताल कुछ अनिवार्य नहीं केवल तीन बातों का देखना आवश्यक है **प्रथम**-यह कि उस धर्म में ख़ुदा के बारे में क्या शिक्षा है अर्थात उसके एकेश्वरवाद और क़ुदरत और ज्ञान और पूर्णता और महानता और दण्ड और कृपा और अन्य संबंधित बातों तथा ख़ुदाई विशेषताओं के बारे में क्या वर्णन है? **द्वितीय-** प्रत्येक व्यक्ति, मानवजाति तथा क़ौम के बारे में क्या शिक्षा देता है। **तृतीय-** क्या वह धर्म कोई मुर्दा और कृत्रिम ख़ुदा तो नहीं प्रस्तुत करता जो केवल किस्सों तथा कहानियों के सहारे माना गया हो। (देखो जिल्द 19 पृष्ठ 373-374)

इन उसूली बातों का वर्णन करने के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बड़े विस्तार से ईसाइयों तथा आर्य समाज की आस्थाओं का इस्लाम की आस्थाओं से मुकाबला करके सिद्ध किया है कि यह तीनों प्रकार की विशेषताएं केवल इस्लाम में पाई जाती हैं। फिर आर्य समाज के कुछ अन्य ऐतराज़ों का भी उत्तर दिया है और नियोग के विषय पर भी चर्चा की है।

यह पुस्तक 28 फरवरी 1903 ईस्वी को एक सप्ताह के भीतर लिख कर तथा छपकर बिल्कुल उस समय प्रकाशित हुई जबकि क़ादियान के आर्य समाज का वार्षिक सम्मलेन (28 फरवरी और 1 मार्च 1903 ई) चल रहा था।

उर्दू प्रथम संस्करण के टाइटल का अनुवाद

वह ख़ुदा जिसने समस्त रूहों तथा आध्यात्मिक व भौतिक जगत के कण कण को पैदा किया उसी ने

अपनी कृपा से इस पुस्तक के विषय वस्तु को हमारे दिल में पैदा किया और

इस का नाम है

नसीम-ए-दावत

नाम इस का नसीम - ए - दावत है,
आर्यों के लिए यह रहमत है।

दिल-ए-बीमार का यह दरमाँ है,
तालिबों का यह यार-ए-ख़लवत है।

कुफ़्र के ज़हर को यह है तिरयाक़,
हर वर्क़ इस का जाम-ए-सेहत है।

ग़ौर कर के इसे पढ़ो प्यारो,
ये ख़ुदा के लिए नसीहत है।

ख़ाकसारी से हमने लिखा है,
न तो सख़्ती न कोई शिद्दत है।

क़ौम से मत डरो ख़ुदा से डरो,
आख़िर उस की तरफ़ ही रिहलत है।

सख़्त दिल कैसे हो गए हैं लोग,
सिर पे ताऊन है फिर भी ग़फ़लत है।

एक दुनिया है मर चुकी अब तक,
फिर भी तौबा नहीं यह हालत है।

प्रकाशन ज़ियाउल इस्लाम क़ादियान में हकीम फ़ज़लदीन साहिब भैरवी के प्रबन्धन में तारीख़ 28 फ़रवरी 1903 ई. छप कर प्रकाशित हुई।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

उस सर्वशक्तिमान और सच्चे और संपूर्ण ख़ुदा को हमारी रूह और हमारे अस्तित्व का कण-कण सजदा करता है जिसके हाथ से प्रत्येक रूह और प्रत्येक कण सृष्टि का अपनी समस्त शक्तियों के साथ अस्तित्व में आया और जिसके अस्तित्व से हर एक वजूद स्थापित है और कोई चीज़ न उसके ज्ञान से बाहर है और न उसकी परिधि से, न उसकी सृष्टि से। और उस पवित्र नबी मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हज़ारों दरूद और सलाम और रहमत और बरकतें अवतरित हों जिसके द्वारा हमने वह जीवित ख़ुदा पाया जो स्वयं वार्तालाप करके अपनी हस्ती का हमें निशान देता है और स्वयं विलक्षण चमत्कार दिखा कर अपनी अनादि और संपूर्ण शक्तियों और ताकतों का हमको चमकने वाला चेहरा दिखाता है। अत: हमने ऐसे रसूल को पाया जिस ने हमें ख़ुदा दिखाया और ऐसे ख़ुदा को पाया जिसने अपनी संपूर्ण शक्ति से हर एक चीज़ को बनाया। उसकी क़ुदरत कितनी महानता अपने अंदर रखती है जिसके बिना कोई चीज़ अस्तित्व में नहीं आई और जिसके सहारे के बिना कोई चीज़ स्थापित नहीं हो सकती। और हमारा सच्चा ख़ुदा अनगिनत बरकतों और क़ुदरतों वाला है और अपार सौंदर्यपूर्ण तथा उपकार करने वाला है उसके सिवा कोई अन्य ख़ुदा नहीं।

तत्पश्चात स्पष्ट हो कि आज क़ादियान के आर्य समाजियों की ओर से प्रकाशित एक विज्ञापन मेरी नज़र से गुज़रा★ जिस पर 7 फरवरी 1903 ई० की तिथि लिखी हुई है और चश्मे नूर प्रेस अमृतसर से छपा है जिसका विषय विज्ञापन पर यह लिखा हुआ है "क़ादियानी पॉप के चेलों की एक डींग का उत्तर" इस विज्ञापन में हमारे सैयद व मौला जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में और मेरे बारे में और मेरी जमाअत के सम्मानित लोगों के बारे में इतने

★ इसके पश्चात् एक और लेख एक अंग्रेज़ी अख़बार में, जो आर्य समाज लाहौर की ओर से निकलता है तथा एक और विज्ञापन तोतीराम नामक एक व्यक्ति की ओर से देखा गया। इसी से।

कठोर शब्दों तथा गालियों का प्रयोग किया है कि बज़ाहिर दिल यही चाहता था कि ऐसे लोगों को संबोधित न किया जाए परन्तु ख़ुदा तआला ने अपनी विशेष वह्यी (ईशवाणी) के द्वारा मुझे संबोधित करके फ़रमाया कि इस लेख का उत्तर लिख और मैं उत्तर लिखने में तेरे साथ हूँ। तब मुझे इस ख़ुशख़बरी देने वाली वह्यी से बहुत प्रसन्नता हुई कि उत्तर देने में मैं अकेला नहीं। अत: मैं अपने ख़ुदा से सामर्थ्य पाकर उठा और उसकी रूह की सहायता से मैंने इस पुस्तक को लिखा और जैसा कि ख़ुदा ने मुझे सहायता दी मैंने यही चाहा कि उन समस्त गालियों को जो मेरे नबी को और मुझे दी गई नज़र अंदाज़ करते हुए नरमी से उत्तर लिखूं और फिर यह कारोबार ख़ुदा तआला के सुपुर्द कर दूं।

परन्तु पूर्व इसके कि मैं इस विज्ञापन का उत्तर लिखूं अपनी जमाअत के लोगों को उपदेश स्वरूप यह कहता हूँ कि जो कुछ इस विज्ञापन के लिखने वालों और उनकी जमाअत ने केवल दिल दुखाने तथा अपमान की नीयत से हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में आरोप लगाते हुए कठोर शब्द लिखे हैं या मेरे बारे में मालखोर, ठग, झूठा और नमक हराम के शब्द प्रयोग किए हैं और मुझे धोखेबाज़ी से लोगों का माल खाने वाला क़रार दिया है और या जो स्वयं मेरी जमाअत के बारे में सूअर और कुत्ते और मुर्दा खाने वाले और गधे और बंदर आदि के शब्द प्रयोग किए हैं और उनका नाम मलेच्छ रखा है, इन समस्त दुख देने वाले शब्दों पर वे सब्र करें और मैं इस जोश तथा उत्तेजनापूर्ण स्वभाव को खूब जानता हूँ कि जो इंसान को इस हालत में पैदा होता है कि जबकि न केवल उसको गालियां दी जाती हैं बल्कि उसके रसूल और पेशवा और मार्गदर्शक को अपमान और तिरस्कार के शब्दों से याद किया जाता है और अत्यंत क्रोध पैदा करने वाले शब्द सुनाए जाते हैं, लेकिन मैं कहता हूँ कि अगर तुम उन गालियों और कठोर शब्दों पर सब्र न करो तो फिर तुम में तथा दूसरे लोगों में क्या अंतर होगा और यह कोई ऐसी बात नहीं कि तुम्हारे साथ हुई और पहले किसी के साथ नहीं हुई, प्रत्येक सच्चा धर्म जो दुनिया में स्थापित हुआ, अवश्य दुनिया वालों ने उससे दुश्मनी की है। अत: चूंकि तुम

सच्चाई के वारिस हो निश्चित है कि तुमसे भी दुश्मनी करें इसलिए होशियार रहो नफ्सानियत (तामसिक वृत्ति) तुम पर ग़ालिब न आ जाए। हर एक सख़्ती की बर्दाश्त करो, हर एक गाली का नरमी से उत्तर दो ताकि आसमान पर तुम्हारे लिए प्रतिफल लिखा जाए। तुम्हें चाहिए कि आर्यों के ऋषियों और बुज़ुर्गों के बारे में कदापि कठोर शब्दों का प्रयोग न करो ताकि वे भी पवित्र ख़ुदा और उसके पवित्र रसूल को गालियां न दें क्योंकि उनको मारिफ़त (अध्यात्मज्ञान) नहीं दी गई इसलिए वे नहीं जानते कि किस को गालियां दे रहे हैं। याद रखो कि हर एक जो तामसिक जोशों के अधीन है संभव नहीं कि उसके होठों से हिकमत और अध्यात्मज्ञान की बात निकल सके बल्कि हर एक कथन उसका फसाद के कीड़ों का एक अंडा होता है सिवाए उसके और कुछ नहीं। अत: अगर तुम रूहुल कुदुस (फ़रिश्ते) के सिखाने से बोलना चाहते हो तो समस्त तामसिक जोश और तामसिक क्रोध अपने अंदर से बाहर निकाल दो तब पवित्र मारिफ़त के भेद तुम्हारे होठों पर जारी हो जाएंगे और आसमान पर तुम दुनिया के लिए एक लाभदायक चीज़ समझे जाओगे और तुम्हारी आयु बढ़ाई जाएगी। उपहासपूर्वक बात न करो और ठट्ठे से काम न लो और चाहिए कि नीचपन और शरारत का तुम्हारी बातों में कुछ भी रंग न हो ताकि हिकमत का स्रोत तुम पर खुले। हिकमत की बातें दिलों को विजयी करती हैं लेकिन तिरस्कार और मूर्खता की बातें उपद्रव फैलाती हैं। जहां तक संभव हो सके सच्ची बातों को नरमी के रूप में बताओ ताकि श्रोताओं के लिए अफ़सोस का कारण न हो। जो व्यक्ति वास्तविकता को नहीं सोचता और अपने उद्दण्ड नफ़्स का ग़ुलाम होकर गाली-गलौज करता है और उपद्रव के षड्यंत्र रचता है, वह अपवित्र है उसको कभी ख़ुदा का मार्ग नहीं मिल सकता और न कभी हिकमत और सच्चाई की बात उसके मुंह पर आती है। अत: अगर तुम चाहते हो कि ख़ुदा की राहें तुम पर खुलें तो तामसिक उद्वेगों से दूर रहो और खेलबाज़ी के तौर पर बहसें मत करो कि यह सब कुछ हैसियत नहीं रखता और केवल समय बर्बाद करना है। बुराई का उत्तर बुराई के साथ मत दो न कथन से न अपने कर्म से, ताकि

ख़ुदा तुम्हारी सहायता करे और चाहिए कि दर्दमंद दिल के साथ सच्चाई को लोगों के दिलों के सामने प्रस्तुत करो न ठट्ठे और हंसी से क्योंकि मुर्दा है वह दिल जो हंसी-ठट्ठा को अपना मार्ग बनाता है और अपवित्र है वह व्यक्ति जो हिकमत और सच्चाई के मार्ग को न स्वयं अपनाता है और न दूसरे को अपनाने देता है। अतः तुम अगर पवित्र ज्ञान के वारिस बनना चाहते हो तो तामसिक भाव से कोई बात मुंह से मत निकालो कि ऐसी बात हिकमत और मारिफ़त से खाली होगी और नीच तथा कमीने लोगों और उपद्रवियों की तरह यह न चाहो कि दुश्मन को अकारण तिरस्कार और उपहास पूर्वक उत्तर दिया जाए बल्कि दिल की ईमानदारी से सच्चा और उपयुक्त उत्तर दो ताकि तुम आसमानी रहस्यों के वारिस ठहरो।

यहाँ वर्णन करना आवश्यक है कि क़ादियान के आर्यों का यह आक्रमण जो मेरे ऊपर किया गया है यह एक अचंभा है। इन दिनों में कोई लेख मेरी ओर से प्रकाशित नहीं हुआ और न मेरी क़लम से और न मेरी शिक्षा से और न मेरी प्रेरणा से किसी ने कोई विज्ञापन प्रकाशित किया। अतः अकारण मुझे निशाना बनाना और मुझे गालियां देना और मेरे सैयद व मोला जनाब मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में अपमान और तिरस्कार के शब्द लिखना और इस प्रकार मुझे दोहरा कष्ट देना, मैं नहीं समझ सकता कि इतना तामसिक जोश क्यों दिखलाया गया। कुछ क़ादियान के आर्य जो मेरे पास आते थे बार-बार मैंने उनको उपदेश किया कि ज़बान की चालाकियों का नाम धर्म नहीं है। धर्म एक पवित्र अवस्था है जो उन लोगों के दिलों में पैदा होती है जो ख़ुदा तआला को पहचान लेते हैं और मैंने उनको बार-बार यह भी कहा कि देखो ताऊन (प्लेग) का ज़माना है और संसार के इतिहास से ज्ञात होता है कि जब यह किसी देश में बड़े ज़ोर से भड़कती रही है तो उसका यही कारण होता रहा है कि धरती पाप और गुनाह से भर जाती थी और ख़ुदा की ओर से जो आता था उसका इन्कार किया जाता था। और जब भी आसमान के नीचे इस प्रकार का कोई बड़ा गुनाह ज़ाहिर हुआ और बेबाकी सीमा से बढ़ गई तभी

यह आपदा प्रकट हुई। अब भी यह गुनाह चरम पर पहुंच गया है। संसार में एक महान अवतार मानवजाति के सुधार के लिए आया अर्थात सैयदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उसने उस सच्चे ख़ुदा की ओर लोगों को बुलाया जिसको दुनिया भूल गई थी लेकिन इस ज़माने में उस पूर्ण अवतार का ऐसा अपमान और तिरस्कार किया जाता है जिसका उदाहरण किसी ज़माने में नहीं मिल सकता। फिर ख़ुदा ने 14वीं शताब्दी के आरंभ में अपने एक बन्दे को जो यही लेखक है, भेजा ताकि इस नबी की सच्चाई और प्रतिष्ठा की गवाही दे और ख़ुदा की तौहीद और पवित्रता को दुनिया में फैलाए उसको भी गालियों का निशाना बनाया गया। अत: यह बुरे दिन जो ज़माना देख रहा है इसका यही कारण है कि दिलों में ख़ुदा का भय नहीं रहा और ज़बानें तेज़ हो गईं हैं। हर एक उत्तेजना केवल क़ौम और समाज के लिए दिखाते हैं। ख़ुदा की प्रतिष्ठा उन लोगों के दिलों में नहीं।

अत: कई बार ऐसे उपदेश क़ादियान के इन आर्यों को किए गए परन्तु परिणाम विपरीत निकला और वह ख़ुदा की प्रतिष्ठा से तनिक भी नहीं डरे। संभवत: दिलों में यह विचार होगा कि यद्यपि ताऊन (प्लेग) क़ादियान के इर्द-गिर्द लोगों को नष्ट कर रही है परन्तु हमें क्या चिंता हम तो टीका लगाने के बाद हमेशा के लिए ताऊन के पंजे से रिहाई पा गए हैं। बड़ा आश्चर्य है कि ऐसे भयानक दिन और फिर यह लोग ज़बान को अपने काबू में नहीं रखते। नहीं सोचते कि जिस नबी को हम गालियां देते हैं और उसका अपमान और तिरस्कार करते हैं अगर वह ख़ुदा की ओर से है, और अवश्य वह ख़ुदा की ओर से है, तो क्या यह गालियाँ देना और अपमान बेकार जाएंगे? सुनो हे अज्ञानियो! हमारा और उन सत्यनिष्ठों का अनुभव, जो हम से पहले गुज़र चुके हैं, गवाही देता है कि ख़ुदा के पवित्र रसूलों के अपमान का परिणाम अच्छा नहीं होता। हर एक नेक फितरत जानता है कि ख़ुदा के पास हर एक बुराई और डींगें मारने का दण्ड उपलब्ध है और हर एक अत्याचार का बुरा परिणाम है।

एक ऐतराज़ (आपत्ति) का उत्तर

अब हम आर्य साहिबों के इस ऐतराज़ का उत्तर देते हैं जो उन्होंने अपने विज्ञापन में हमारी जमाअत के नव मुस्लिम आर्यों पर किया है और वह यह है कि- उनका मुसलमान होना तब सही होता कि पहले वे चारों वेद पढ़ लेते और फिर वेदों के पढ़ने के बाद चाहिए था कि वे आर्य धर्म का इस्लाम से मुक़ाबला करते और फिर इतनी खोजबीन के बाद अगर इस्लाम को सच्चा समझते तो मुसलमान हो जाते। अत: स्पष्ट हो कि हमारे नव मुस्लिम आर्य जहां तक खोजबीन का हक है सब कुछ अदा करके मुसलमान हुए हैं। बाकी रहा यह ऐतराज़ कि उन्होंने चारों वेद कब पढ़े हैं? यह ऐतराज़ उस अवस्था में हो सकता था कि जब आरोप लगाने वाले अपने वेद पढ़े होने का सबूत देते। अफ़सोस कि उन्होंने ऐतराज़ करते समय न्याय तथा ख़ुदा के भय से काम नहीं लिया। भला यदि उन्होंने सच्चाई का पालन करते हुए ऐसे ऐतराज़ को प्रस्तुत किया है तो हमें बताएं कि उनमें से वे समस्त लोग राम-राम करने वाले जो सनातन धर्म पर स्थापित हैं और फिर कुछ साल से वे आर्य बने उन्होंने किस पण्डित से वेद पढ़े हैं? क्योंकि यदि धर्म के परिवर्तन के लिए पहले वेदों का पढ़ लेना आवश्यक शर्त है तो इस शर्त से आर्य कैसे बाहर रह सकते हैं? यह बात किसको मालूम नहीं कि दयानन्द के अस्तित्व से पहले इस देश में समस्त हिन्दू सनातन धर्म मानते थे और अभी तक उनके ठाकुर द्वारे इस गांव में भी मौजूद हैं और उनके पण्डित तथा वेदपाठी आर्यव्रत में बहुत पाए जाते हैं और बहुतों को हमने स्वयं देखा है। और वेद जो उर्दू तथा अंग्रेज़ी में अनुवाद हो चुके हैं उन पर नज़र डालने से ज्ञात होता है कि वेद के अधिकतर अर्थ जो सनातन धर्म वाले करते हैं वही ठीक हैं। अत: इस बहस को इस समय जाने दो। बहरहाल जो ऐतराज़ उन्होंने नव मुस्लिम हिंदुओं पर किया है वही ऐतराज़

उन पर भी होता है क्योंकि एक ज़माना तो वह था कि वह रामचंद्र, कृष्ण जी और अन्य अवतारों को परमेश्वर समझते थे, मूर्ति पूजा को वेद का आदेश समझते थे और सबसे अधिक यह कि वेदांत के सिद्धांतों के अनुसार स्वयं को परमेश्वर से निकला हुआ समझते थे और फिर आर्य बनने के बाद वे सब विचार पलट गए और बजाय इसके कि परमेश्वर में से निकले हों अनादि और स्वयंभू कहला कर स्वयं कदीम और परमेश्वर के भागीदार बन गए। अत: क्या इतने इंकलाब के लिए उनकी आस्था के अनुसार यह आवश्यक न था कि उनमें से हर एक व्यक्ति पहले चारों वेद पढ़ लेता फिर अपने पुराने धर्म अर्थात सनातन धर्म को छोड़ता और आर्य समाज में सम्मिलित होता। अत: यदि क़ादियान के आर्य समाजियों ने नव मुस्लिम आर्यों पर ऐतराज़ करने के समय झूठ और सच्चाई को छुपाने का काम नहीं किया तो हमें दिखाएं कि उनके आर्य संप्रदाय में कितने ऐसे लोग हैं जिनको ऋग्वेद और यजुर्वेद और सामवेद और अथर्ववेद सब कंठ हैं। अगर इस बात में वे सच्चे निकले कि अपना पूरा संप्रदाय उन्होंने 'वेद दान' सिद्ध कर दिया तो कम से कम हम उनको सुशील व्यक्ति मान लेंगे जिन्होंने अपने ऐतराज़ में किसी ऐसी झूठी बात को प्रस्तुत नहीं किया जिसके वे स्वयं पाबंद नहीं थे। यह किसको मालूम नहीं कि यह समस्त समूह क़ादियान वालों का एक बाज़ारी दुकानदारों का समूह है जिनमें से कोई साहूकार का काम करता है और कोई कपड़े बेचने का करता है और कोई करियाने की दुकान रखता है। और जहां तक हम को ज्ञान है उनमें से एक भी वेद का ज्ञानी नहीं। अत: क्या उन लोगों के मुक़ाबले पर शरीफ़ नव मुस्लिम आर्य मूर्ख कहला सकते हैं। जिनमें से कुछ बी. ए. तक शिक्षा प्राप्त हैं और वेदों का अंग्रेज़ी तथा उर्दू अनुवाद पढ़ते हैं और दिन-रात धर्म की शिक्षा पाते हैं।

फिर इसके अतिरिक्त यह हमारा दावा केवल क़ादियान तक सीमित नहीं बल्कि हम इस बात की पूरी जानकारी रखते हैं कि हर एक शहर और कस्बे का आर्य समाज अधिकतर ऐसे ही लोगों से भरा हुआ है और यह विचार कदापि सही नहीं है कि जिन लोगों ने सनातन धर्म को अलविदा कहकर बावजूद अत्यंत

मतभेद के आर्य समाजी बनना स्वीकार किया है, पहले वे अपने घर से चारों वेद पढ़ कर आए थे। बल्कि हम ज़ोर से कहते हैं कि पूरे पंजाब और हिंदुस्तान में सिवाय कुछ लोगों के जिनको उंगलियों पर गिन सकते हैं आर्यों के समस्त संप्रदाय का ऐसा ही हाल है कि हर एक दुकानदार या साहूकार ने आर्यों में नाम लिखा रखा है और स्वयं सिवाय बड़े पेट, लंबी मूछों तथा दुकान के हिसाब के और कुछ याद नहीं।

यह बातें मेरी बिना तहकीक के नहीं बल्कि मैं आर्य समाजियों को 1000 रुपए पुरस्कार स्वरूप देने को तैयार हूँ अगर वे मुझ पर सिद्ध कर दें कि जितने उनके आर्य स्त्री-पुरुष उनकी सूची में लिखित हैं या यह कहो कि जितने आर्य समाजी कहलाने वाले पुरुष तथा स्त्रियां ब्रिटिश इंडिया में मौजूद हैं उनमें से पांच प्रतिशत ऐसे पण्डित पाए जाते हैं जो चारों वेद संस्कृत में जानते हैं। यदि चाहें तो मैं किसी सरकारी बैंक में यह राशि जमा करा सकता हूँ। अब बताओ कि कितनी शर्म की बात है कि स्वयं में कमज़ोरी है और दूसरे को नसीहत करते हैं। अगर शर्म और सच्चाई से काम लिया जाता तो ऐसे ऐतराज़ की क्या आवश्यकता थी जो स्वयं आर्य समाज पर ही होते हैं। हमारे देखने की बात है कि आर्यों का यह समूह केवल इस प्रकार तैयार हुआ है कि महाजनों, साहूकारों तथा कर्मचारियों को भिन्न-भिन्न प्रकार के बहानों से प्रेरित किया गया कि तुम आर्य समाज में नाम लिखा दो। तो बहुत से लाला साहिबों ने इस तरह पर नाम लिखवा रखे हैं और असल हक़ीक़त की कुछ भी ख़बर नहीं और बहुत से लोगों के घरों में देवता परस्ती और मूर्ति पूजा के काम भी उसी प्रकार चल रहे हैं। यह बात ऐसी छुपी हुई नहीं कि जिसकी छानबीन करने के लिए कुछ अधिक कठिनाई की आवश्यकता है। तुम किसी शहर या कस्बे में चले जाओ और छानबीन कर लो कि उन में कितने आर्य समाजी हैं और कितने उनमें से वेद के ज्ञाता हैं। अत: जबकि आर्य समाजी बनने की यह हालत है तो फिर कौन ऐसे शिक्षा प्राप्त आर्यों पर ऐतराज़ कर सकता है जो पहले हिन्दू थे और फिर सनातन धर्म और आर्यों

के सिद्धांतों को खूब समझ कर और उसके मुक़ाबले पर इस्लाम के सिद्धांत देखकर और सच्चाई तथा ईश्वरीय प्रतिष्ठा उनमें देख कर मुसलमान हो गए। केवल ख़ुदा के लिए दु:ख उठाए और पत्नियों, भाइयों और प्यारों से अलग हुए और क़ौम की गालियां सुनी। इन नव मुस्लिम आर्यों के धर्म परिवर्तन का उद्देश्य सांसारिक हितों पर आधारित करना यह व्यंग हिंदुओं का कुछ नया नहीं है बल्कि बहुत पहले से इस धर्म के पक्षपाती लोगों का स्वभाव है कि जब कोई और उचित उत्तर नहीं आता तो यही कह दिया करते हैं कि माल के लिए या किसी औरत के लिए हिन्दू धर्म को छोड़ दिया है और यह भी कह दिया करते हैं के करोड़ों हिन्दू जो मुसलमान हो गए वे मुसलमान शासकों के अत्याचार से हुए थे। कुछ हिन्दू जोश में आकर यह भी कह देते हैं कि मुसलमान होने वाले वास्तव में मुसलमानों का ही वीर्य हैं और नहीं सोचते कि यह ऐतराज़ तो हमारी ही करोड़ों औरतों पर आता है।

आजकल की जांच पड़ताल से सिद्ध है कि इस्लामी शासकों का दौर जो 700 वर्ष तक था यदि अंग्रेज़ों के दौर से जो 100 वर्ष तक अभी गुज़रा है उसकी तुलना की जाए तो इसमें जितने हिन्दू अधिकता से मुसलमान हुए हैं, उसका अनुपात अधिक निकलता है। और ख़ुदग़र्ज़ी का आरोप तो बहुत ही शर्म योग्य है क्योंकि कुछ हिन्दू अमीरों, रईसों और राजाओं ने इस्लाम के बाद कई लाख रुपए धार्मिक सहायता में दिया है और हमारे ग़रीब नव मुस्लिम आर्य हमेशा अपनी कमाई से हमें चंदा देते हैं। फिर आश्चर्य कि यह विरोधी लोग ऐसे बेकार के आरोपों से बाज़ नहीं आते और जिस हालत में अक्सर आर्य अपनी औरतों को छोड़कर इस्लाम की तरफ आते हैं तो इस अवस्था में फिर उनको औरतों का इल्ज़ाम देना। क्या इस प्रकार के ऐतराज़ ईमानदारी के ऐतराज़ हैं। उदाहरणतया तनिक सोचो कि सरदार फज़ल हक़ और शेख अब्दुल रहीम जो नव मुस्लिम आर्य हैं हिन्दू होने की हालत में किस प्रकार की आवश्यकता रखते थे जो इस्लाम के द्वारा पूरी हुई।

धर्म परिवर्तन के लिए जितना ज्ञान चाहिए उसकी वास्तविक दार्शनिकता

अब हम सर्वजन हिताय इस विषय की वास्तविक दार्शनिकता का वर्णन करते हैं कि धर्म परिवर्तन के लिए कितनी जानकारी आवश्यक है? क्या क़ादियान के आर्य समाजियों के कथनानुसार जब उदाहरणस्वरूप एक हिन्दू अपना धर्म परिवर्तन करने लगे तो पहले उसको चारों वेद संस्कृत में पढ़ लेने चाहिए या बुद्धि और न्याय की दृष्टि से उसका कोई अन्य नियम है?

अत: स्पष्ट हो कि जैसा कि हम अभी वर्णन कर चुके हैं यह कदापि सही नहीं है कि धर्म परिवर्तन के लिए एक हिन्दू का यह कर्तव्य है कि पहले चारों वेद एक-एक अध्याय करके किसी पण्डित से पढ़ ले और फिर अगर चाहे तो कोई और धर्म अपनाए। क्योंकि अगर यह सही हो तो धर्म परिवर्तन के लिए केवल वही लोग योग्य होंगे जो वेद के ज्ञाता पण्डित हों। हालांकि सबको मालूम है कि सैंकड़ों हिन्दू जो वेदों का एक पृष्ठ भी नहीं पढ़ सकते सनातन धर्म से निकलकर आर्य समाजी बनते जाते हैं। और अभी हाल ही में जनगणना के अनुसार पंजाब में आर्य मतवाले मर्द नौ हज़ार से अधिक नहीं और इतनी संख्या में संभवत: एक-दो पण्डित हों या न हों शेष समस्त लोग सामान्य हिन्दू हैं और केवल कुछ बातें सुनकर आर्य बन गए हैं तथा अपने प्राचीन धर्म 'सनातन धर्म' को छोड़ दिया है। और जैसा कि आर्य समाजी लोग मुसलमान होने वाले आर्यों का नाम भ्रष्ट और मलेच्छ रखते हैं, यही नाम सनातन धर्म की ओर से उनको मिलता है और धर्म से उनको निष्कासित समझते हैं और वेद के इन्कारी क़रार देते हैं। फिर सनातन धर्म और आर्य समाजियों के इतने अधिक विरोध और आस्थाओं के मतभेद के बावजूद जो सूर्य के समान प्रकट है, एक मूर्ख से मूर्ख सनातन धर्म वाला जब आर्य बनने के लिए आता है तो कोई उसको नहीं कहता कि पहले चारों वेद पढ़ ले। बल्कि उसका आर्य समाजी

बनना सौभाग्य समझते हैं। विशेषकर अगर कोई धनी साहूकार हो चाहे कैसा ही मूर्ख हो तो फिर क्या कहना है। एक शिकार हाथ आ गया उसको कौन छोड़े। भला बताइए कि आपके लाला बुड्ढामल साहिब कितने वेद पढ़े हुए हैं जो सनातन धर्म छोड़कर आर्य बन गए। ऐसा ही दूसरे लाला साहिबान जो उन्हीं के भाई-बंधु हैं अपने-अपने गिरेबानों में झाँक कर सोचें कि उनको वेद के ज्ञान में कितनी प्रतिष्ठा प्राप्त है। इस अवस्था में स्पष्ट है कि जो ऐतराज़ नव मुस्लिमों पर किया जाता है वही वास्तव में आर्यों पर भी होता है। परन्तु याद रखना चाहिए जो आर्य हिन्दू, मुसलमान होता है क्योंकि उसको पहले से मालूम होता है कि उसको बहुत से शत्रुओं का मुक़ाबला करना पड़ेगा इसलिए स्वाभाविक रूप से वह उसी समय मुसलमान होता है जब वह अपने दिल में सच्चाई और झूठ का फैसला कर लेता है।

और यह फैसला चारों वेद पढ़ने पर आधारित नहीं अन्यथा धर्म परिवर्तन का द्वार ही बंद हो जाए। और साथ ही इस अवस्था में यह भी अनिवार्य है कि आर्य समाज वाले सिवाए एक-दो वेद के ज्ञाता पण्डितों के जो उनमें हों शेष समस्त हिंदुओं को सनातन धर्म की ओर वापस लौटा दें और उनको निर्देश करें कि जब तुम वेद पढ़कर आओगे तब तुम्हें आर्य समाज में सम्मिलित किया जाएगा (उससे) पहले नहीं। समझदार इंसान इस बात को जल्दी समझ सकता है कि यदि धर्म परिवर्तन के लिए विद्वान होना आवश्यक है तो हिंदुस्तान के करोड़ों हिन्दू जनसामान्य जो कुछ ज्ञान नहीं रखते और विभिन्न संप्रदायों में विभाजित हैं वे आर्य समाज में सम्मिलित होने के योग्य नहीं हो सकते जब तक सब के सब वेद के ज्ञाता न हों और शास्त्रों को पूर्णतः न पढ़ लें।

अतः सुनो और खूब कान खोलकर सुनो कि धर्म परिवर्तन के लिए समस्त विषयों की जांच-पड़ताल कुछ अनिवार्य नहीं बल्कि सत्याभिलाषी के लिए वर्तमान धर्मों का परस्पर मुक़ाबला करने के समय और फिर उनमें से सच्चे धर्म की पहचान करने के लिए केवल तीन बातों का देखना आवश्यक है। **पहली-** यह कि उस धर्म में ख़ुदा के बारे में क्या शिक्षा है अर्थात उसके

एकेश्वरवाद और क़ुदरत और ज्ञान और कमाल और महानता और दण्ड और कृपा और अन्य संबंधित बातों तथा ख़ुदाई विशेषताओं के बारे में क्या वर्णन है? क्योंकि यदि कोई धर्म ख़ुदा को अद्वितीय क़रार नहीं देता और आकाशीय पिंड समूह या पञ्च महाभूत या किसी मनुष्य या अन्य चीज़ों को ख़ुदा समझता है या ख़ुदा के समान ठहराता है और ऐसी उपासनाओं से नहीं रोकता या ख़ुदा की क़ुदरत को अपूर्ण समझता है। और जहां तक क़ुदरत संभावित है वहां तक क़ुदरत के सिलसिले को नहीं पहचानता या उसके ज्ञान को अपूर्ण समझता है या उसकी अनादि प्रतिष्ठा के विपरीत कोई शिक्षा देता है या दण्ड और दया के क़ानून में अधिकता या न्यूनता के मार्ग को अपनाता है या उसकी सामान्य कृपा जैसा कि व्यावहारिक तौर पर समस्त संसार पर हावी है, उसके विपरीत ख़ुदा के विशेष संबंध तथा आध्यात्मिक उपकार के माध्यमों को किसी विशेष क़ौम से विशिष्ट करता है या ख़ुदाई की विशेषताओं में से किसी विशेषता के विपरीत वर्णन करता है तो वह धर्म ख़ुदा की ओर से नहीं है।

दूसरे- सत्य के अभिलाषी के लिए यह देखना आवश्यक होता है कि उस धर्म में जिसको वह पसंद करे, उसके अस्तित्व के बारे में और ऐसा ही सामान्यत: मानवीय चाल-चलन के बारे में क्या शिक्षा है? क्या कोई ऐसी शिक्षा तो नहीं कि जो मनुष्य के अधिकारों के परस्पर संबंध को तोड़ती हो या व्यक्ति को व्यभिचार की ओर खींचती हो या व्यभिचार संबंधित कर्मों को अनिवार्य ठहराती हो और स्वभाविक लज्जा के विपरीत हो और न कोई ऐसी शिक्षा हो कि जो ख़ुदा के सामान्य क़ानून-ए-क़ुदरत के विपरीत हो और न कोई ऐसी शिक्षा हो जिसका पालन असंभव या कुछ खतरों पर आधारित हो। और न कोई आवश्यक शिक्षा जो उपद्रवियों को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है, त्याग दी गई हो। और साथ यह भी देखना चाहिए कि क्या वह शिक्षा ऐसी बातें सिखाती है या नहीं कि जो ख़ुदा को महान उपकारी क़रार देकर बंदे का मोहब्बत का रिश्ता उससे सुदृढ़ करते हों और अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हों और लापरवाही से सानिध्य तथा

याद की ओर खींचते हों।

तीसरे- सत्य के अभिलाषी के लिए यह देखना आवश्यक होता है कि वह उस धर्म को पसंद करे जिसका ख़ुदा एक कृत्रिम ख़ुदा न हो जो केवल किस्सों और कहानियों के सहारे से माना गया हो और ऐसा न हो कि केवल एक मुर्दा से समानता रखता हो। क्योंकि यदि एक धर्म का ख़ुदा केवल एक मुर्दा के समान है जिसको स्वीकार करना केवल अपनी आस्था के कारण है न इस कारण कि उसने अपने आपको स्वयं प्रकट किया हो, तो ऐसे ख़ुदा का मानना मानो उस पर उपकार करना है। और जिस ख़ुदा की शक्तियां अनुभूत न हों और अपने जीवित होने के लक्षण वह स्वयं प्रकट न करे उस पर ईमान लाना लाभकारी नहीं और ऐसा ख़ुदा मनुष्य को पवित्र जीवन प्रदान नहीं कर सकता और न सन्देहों के अंधकार से बाहर निकाल सकता है और एक मुर्दा परमेश्वर से एक जीवित बैल बेहतर है जिससे खेती का काम कर सकते हैं। अत: यदि एक व्यक्ति बेईमानी और दुनियादारी पर झुका हुआ न हो तो वह जीवित ख़ुदा को ढूंढेगा ताकि उसकी अंतरात्मा पवित्र और प्रकाशमान हो जाए और किसी ऐसे धर्म पर प्रसन्न नहीं होगा जिसमें जीवित ख़ुदा अपनी क़ुदरत का जलवा नहीं दिखाता और अपने तेजमय वाणी से सांत्वना नहीं देता।

ये तीन ज़रूरी बातें हैं जो धर्म परिवर्तन करने के लिए विचारणीय हैं। अत: यदि कोई व्यक्ति किसी धर्म को इन तीन कसौटियों की दृष्टि से अन्य धर्मों पर विजयी पाए तो उसका कर्तव्य होगा कि ऐसे धर्म को अपना ले। और इतनी छानबीन के लिए न किसी बड़े पण्डित बनने की आवश्यकता है और न किसी बड़े पादरी बनने की आवश्यकता है। और ख़ुदा ने जैसा कि शारीरिक जीवन के लिए जिन-जिन वस्तुओं की आवश्यकता है जैसे जल, वायु, अग्नि और खाने-पीने की चीज़ें, वह उनके लिए जो जान-बूझ करना आत्महत्या न करना चाहें, बहुत पैदा कर रखी हैं। इसी प्रकार उसने आध्यात्मिक जीवन के लिए अपने सन्मार्ग के रास्तों को मनुष्यों के लिए बहुत सरल कर दिया है ताकि मनुष्य इस अल्पायु में सामर्थ्य से अधिक कठिनाइयों में न पड़ें। और तीन बातें जो हमने ऊपर वर्णन

की हैं उनके लिए एक आयु ख़र्च करने और विद्वान बनने की आवश्यकता नहीं बल्कि प्रत्येक धर्मावलम्बी अपने जो सिद्धांत प्रकाशित करता है उन्हीं सिद्धांतों से पता लग जाता है कि वह उस कसौटी के अनुसार हैं या नहीं। और यदि वह अपने सिद्धांतों का वर्णन करने में कुछ झूठ बोले या किसी बात को छुपाए तो वह धोखेबाज़ी छुपी नहीं रह सकती क्योंकि यह ज्ञान का ज़माना है और सैंकड़ों उपाय ऐसे हैं जिनसे सच्चाई प्रकट हो जाती है।

अब जबकि उपरोक्त बातों से स्पष्ट प्रमाणित है कि धर्म परिवर्तन के लिए कदापि ऐसी आवश्यकता नहीं कि किसी धर्म के समस्त सिद्धांत और समस्त शाखाओं को मालूम किया जाए बल्कि उपरोक्त तमाम बातों की जानकारी पर्याप्त है। तो इस अवस्था में उन नव मुस्लिम आर्यों का क्या दोष है जो इन आवश्यक बातों की छानबीन करके मुसलमान हुए हैं? और जिस अवस्था में स्वयं आर्य समाज के संप्रदाय में सिख, जट, सुनार और अज्ञानी दुकानदार आर्यों में सम्मिलित हैं जो बिना चारों वेद पढ़े बल्कि इन उपरोक्त तीन बातों की छानबीन किए बिना सनातन धर्म तथा ख़ालसा धर्म को छोड़कर जो उनके पुराने धर्म हैं, आर्य समाज में सम्मिलित हो गए हैं और अधिकतर लोग उनमें से नादान और अज्ञानी हैं। मानो आर्य समाजियों का संपूर्ण संग्रह सिवाय कुछ लोगों के इन्हीं सामान्य लोगों से भरा हुआ है तो फिर क्यों उन गरीब नव मुस्लिम आर्यों पर ऐतराज़ किया जाता है जिन्होंने तीन बातों पर खूब विचार करके इस्लाम धर्म स्वीकार किया है। हम बार-बार लिख चुके हैं कि यह बात लगभग असंभव है कि किसी धर्म को अपनाने के लिए पहले अपने पूर्व धर्म की पुस्तकों और उसकी व्याख्याओं को अच्छी तरह आरंभ से अंत तक पढ़ लेना आवश्यक है। इस शर्त को न कोई आर्य दिखा सकता है और न कोई पादरी बल्कि यह केवल अकारण रुकावट उत्पन्न करना है जो ईमानदारी के विपरीत है। संसार में विद्वान की डिग्री प्राप्त करने वाले तो हर धर्म में थोड़े होते हैं बल्कि ज्ञानरूपी समुद्र में पूर्ण हर एक देश में 10-20 से अधिक नहीं होते, परन्तु दूसरे लोग करोड़ों होते हैं जो न पण्डित कहलाएं और न पादरी के

नाम से प्रसिद्ध हों और न मौलवी होने की पगड़ी सिर पर रखते हैं और उन्हीं में से अधिकतर सत्य के अभिलाषी भी होते हैं और उनके लिए पर्याप्त होता है कि वे इतना देख लें कि किसी धर्म में ख़ुदा के बारे में क्या शिक्षा है? और फिर सृष्टि के बारे में क्या शिक्षा है? और फिर उस शिक्षा का परिणाम क्या है? क्या वह उस ख़ुदा तक पहुंचाती और उस छुपी हुई हस्ती को दिखाती है जो ज़िन्दा ख़ुदा है या उसको केवल किस्सों के सहारे पर छोड़ती है? जैसा कि हम इन तीन उपरोक्त बातों की अभी व्याख्या कर चुके हैं और सद्बुद्धि स्पष्ट रूप से इस बात को समझती है कि जो व्यक्ति इन तीनों बातों में किसी धर्म को पूर्ण पाएगा वही धर्म सच्चा होगा। क्योंकि यह तसल्ली झूठे धर्म में कदापि नहीं मिल सकती।

अब हम पाठकों पर बड़े ज़ोर से इस बात का सबूत ज़ाहिर करते हैं कि यह तीनों प्रकार की विशेषताएं केवल इस्लाम में पाई जाती हैं और शेष जितने भी धर्म संसार में पाए जाते हैं क्या आर्य और क्या ईसाई और क्या कोई अन्य धर्म, वे इन तीनों विशेषताओं से रिक्त हैं। और हम बात को लंबा न करते हुए हर एक विशेषता के अंतर्गत इस्लाम और उन दोनों धर्मों का कुछ वर्णन करेंगे। इंशा अल्लाह तआला

प्रथम

ख़ुदा तआला के बारे में ईसाई साहिबों और आर्य साहिबों की क्या शिक्षा है और पवित्र क़ुरआन की क्या शिक्षा है

ईसाई साहिबान इस बात का इक़रार करते हैं कि उनके निकट हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ही पूर्ण ख़ुदा हैं जिनके अंदर 4 रूहें मौजूद हैं। एक बेटे की, दूसरी बाप की, तीसरी फ़रिश्ते की और चौथी इंसान की और यह मरबअ (चतुष्क) ख़ुदा हमेशा के लिए चतुष्क होगा बल्कि उसको तख्मीस (पांच का मिश्रण) कहें तो उचित है क्योंकि उसके साथ शरीर भी हमेशा ही रहेगा लेकिन अब तक इस बात का उत्तर नहीं दिया गया कि उस ख़ुदा का वह शरीर (का

भाग) जो ख़त्ना करने के समय उससे अलग किया गया था और वह शरीर जो परिवर्तित होता रहा और या हमेशा नाखूनों और बालों के कटाने के कारण कम होता रहा, क्या वह भी कभी उस शरीर के साथ सम्मिलित किया जाएगा या हमेशा के लिए उसको जुदाई का दाग नसीब हुआ? हर एक बुद्धिमान को मालूम है कि यह जीव विज्ञान का प्रमाणित और अनुभव किया हुआ विषय है कि 3 वर्ष तक पहला शरीर परिवर्तित होकर नया शरीर उसका स्थान ले लेता है और पहले कण अलग हो जाते हैं। अत: इस हिसाब से 33 वर्ष की समय सीमा में हज़रत मसीह के 11 शरीर परिवर्तित हुए होंगे और 11 नए शरीर आए होंगे। अब स्वभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है कि वह 11 खोए हुए शरीर फिर हज़रत मसीह के वर्तमान शरीर के साथ सम्मिलित हो जाएंगे या नहीं? और अगर नहीं सम्मिलित होंगे तो क्या किसी गुनाह के कारण वह अलग रखने के योग्य थे या किसी अन्य कारण से अलग किए गए? और इस अकारण प्राथमिकता का क्या कारण है और क्यों उचित नहीं कि उस वर्तमान शरीर को दूर करके वही पहले शरीर हज़रत मसीह को दिए जाएं? और क्या कारण है कि जबकि 11 बार इस बात का अनुभव हो चुका है कि हज़रत मसीह समस्त मनुष्यों के समान तीन वर्ष के बाद नया शरीर पाते रहे हैं और 33 वर्ष तक 11 नए शरीर पा चुके हैं तो फिर क्यों अब बावजूद 2000 वर्ष बीत जाने के वही पुराना शरीर उनके साथ अनिवार्य रहा? अगर इस शरीर के अनश्वर बनने का कारण उनकी ख़ुदाई है तो उन पहले दिनों में भी तो ख़ुदाई मौजूद थी जबकि प्रति 3 वर्ष के बाद शरीर का पहला चोला वह उतारते रहे हैं और वह शरीर जो ख़ुदाई की छाया था मिट्टी में मिलता रहा तो क्यों यह वर्तमान शरीर भी उनसे अलग नहीं होता? फिर यह भी तनिक सोचो कि इंसान के शरीर के पहले कणों का उससे अलग हो जाना तो कोई सामान्य बात नहीं बल्कि गर्भ से निकलते ही एक भाग उसके शरीर का अलग करना पड़ता है और नाख़ुन और बाल हमेशा कटाने पड़ते हैं और कभी-कभी बीमारी के कारण बहुत दुबला-पतला हो जाता है और फिर खाने-पीने से नया शरीर आ

जाता है परन्तु ख़ुदा के 11 शरीर उससे अलग हो जाएं इसमें निसन्देह ख़ुदा का अपमान है। हां जैसा कि चारों रूहों की आस्था में एक भेद स्वीकार किया गया है अगर यहां भी यही उत्तर दिया जाए कि इसमें भी कोई भेद है तो फिर बहस को समाप्त करना पड़ता है। परन्तु बार-बार भेद का बहाना बनाना यह एक बनावट और कमज़ोरी की निशानी है।

फिर दूसरी आश्चर्य की बात यह है कि इस तख्मीस का नाम तस्लीस क्यों रखा गया है जबकि ईसाई आस्था के अनुसार चारों रूहें मसीह के शरीर में शाश्वत और अनश्वर हैं और हमेशा रहेंगी और इन्सानी रूह भी अनश्वर होने के कारण इस संग्रह से कभी अलग नहीं होगी और न कभी शरीर अलग होगा तो फिर यह तो तख्मीस हुई न कि तस्लीम। अब स्पष्ट है कि तस्लीस के रचयिताओं से यह एक भारी ग़लती हुई है जो उन्होंने तख्मीस को तस्लीस समझ लिया। परन्तु अब भी यह ग़लती सही हो सकती है और जैसा कि पिछले दिनों में तस्लीस के शब्द की अपेक्षा 'सालूस' प्रस्तावित किया गया था अब बजाए 'सालूस' के तख्मीस प्रस्तावित हो सकता है। ग़लती का सुधार आवश्यक है परन्तु अफ़सोस के इस 5 पहलू वाले ख़ुदा की कुछ न कुछ मरम्मत ही होती रहती है।

अब सारांश यह कि ईसाई धर्म एकेश्वरवाद से खाली और वंचित है बल्कि उन लोगों ने सच्चे ख़ुदा से मुंह फेर कर एक नया ख़ुदा अपने लिए बनाया है जो एक इस्राईली औरत का बेटा है। परन्तु क्या उनका यह नया ख़ुदा सर्वशक्तिमान है जैसा कि वास्तविक ख़ुदा सर्वशक्तिमान है? इस बात के निर्णय हेतु स्वयं उसकी आपबीती गवाह है क्योंकि अगर वह सर्वशक्तिमान होता तो यहूदियों के हाथ से मार न खाता, रूमी सल्तनत की क़ैद में न डाला जाता और सूली पर न चढ़ाया जाता। और जब यहूदियों ने कहा था कि सलीब से स्वयं उतर आ, हम अभी ईमान ले आएंगे उस समय उतर आता लेकिन उसने किसी अवसर पर अपनी सर्वशक्तिमानी नहीं दिखाई। रहे उसके चमत्कार तो स्पष्ट हो कि उसके चमत्कार दूसरे अधिकतर नबियों की अपेक्षा बहुत ही कम

हैं। उदाहरणस्वरूप अगर कोई ईसाई एलिया नबी के चमत्कारों से जिनका बाइबल में विस्तृत रूप से वर्णन है जिनमें से मुर्दों का जीवित करना भी है, मसीह इब्ने मरियम के चमत्कारों का मुक़ाबला करे तो उसको अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा कि एलिया नबी के चमत्कार वैभव और अधिकता में मसीह इब्ने मरियम के चमत्कारों से बहुत बढ़कर हैं। हां इंजीलों में बार-बार इस चमत्कार का वर्णन है कि ईसा मसीह मिर्गी के रोगियों में से 'जिन्न' निकाला करता था और यह बड़ा चमत्कार उसका गिना जाता है जो शोध करने वालों के निकट एक हंसी का पात्र है। आजकल की जांच पड़ताल से सिद्ध होता है कि मिर्गी की बीमारी दिमागी कमज़ोरी के कारण पैदा होती है या कभी-कभी कोई रसौली दिमाग में पैदा हो जाती है और कभी-कभी किसी और बीमारी के कारण यह होती है। लेकिन इन समस्त शोधकर्ताओं ने कहीं नहीं लिखा कि इस बीमारी का कारण 'जिन्न' भी हुआ करते हैं। पवित्र क़ुरआन का हज़रत मसीह बिन मरियम पर यह भी एहसान है कि उसके कुछ चमत्कारों का वर्णन तो किया लेकिन यह नहीं लिखा कि वह मिर्गी के रोगियों में से जिन्न भी निकाला करता था। और पवित्र क़ुरआन में हज़रत मसीह इब्ने मरियम के चमत्कारों का वर्णन इस उद्देश्य से नहीं है कि उससे चमत्कार अधिक हुए हैं बल्कि इस उद्देश्य से है कि यहूदी उसके चमत्कारों से पूर्णता इन्कारी थे और उसको धोखेबाज़ और मक्कार कहते थे। अत: ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुरआन में यहूदियों के ऐतराज़ को रद्द करने के लिए मसीह इब्ने मरियम को चमत्कारों से युक्त क़रार दिया है और इसी हिकमत के कारण उसकी मां का नाम सिद्दीक़ा (पवित्र) रखा क्योंकि यहूदी उस पर व्यभिचार का आरोप लगाते थे। अत: मरियम का सिद्दीका नाम रखना इस उद्देश्य से नहीं था कि वह दूसरी समस्त पवित्र तथा सत्चरित्र औरतों से श्रेष्ठ थी अपितु उस नाम के रखने में यहूदियों के आरोप का खण्डन और रद्द करना उद्देश्य था। इसी प्रकार जो हदीसों में लिखा गया है कि ईसा और उसकी मां शैतान के स्पर्श से पवित्र थे इस कथन के ये अर्थ नहीं हैं कि अन्य समस्त नबी शैतान के स्पर्श से पवित्र नहीं थे बल्कि उद्देश्य

यह था कि नाऊज़ुबिल्लाह जो हज़रत मसीह पर अवैध संतान होने का आरोप लगाया गया था और हज़रत मरियम को अपवित्र औरत क़रार दिया गया था इस वाक्य में उसका खण्डन करना उद्देश्य है ऐसा ही हज़रत मसीह का जन्म भी कोई ऐसा मामला नहीं है जिससे उनकी ख़ुदाई प्रमाणित हो सके। इसी धोखे के दूर करने के लिए पवित्र क़ुरआन और इंजील में हज़रत ईसा और यह्या के जन्म का किस्सा एक ही स्थान पर वर्णन किया गया है ताकि पढ़ने वाला समझ ले कि दोनों के जन्म यद्यपि विलक्षण रूप से हुए हैं तथापि उनसे कोई ख़ुदा नहीं बन सकता अन्यथा चाहिए कि यह्या भी जिसका ईसाई योहन्ना नाम रखते हैं, ख़ुदा हो। बल्कि ये दोनों बातें इस बात की ओर संकेत था कि नबूवत इस्राईली खानदान में से समाप्त हो जाएगी अर्थात जब ईसा मसीह का बाप बनी इस्राईल में से न हुआ और यह्या की मां और बाप इस योग्य न ठहरे कि अपने वीर्य से संतानोत्पत्ति कर सकें तो यह दोनों बनी इस्राईली सिलसिला से बाहर हो गए। और यह भविष्य में ख़ुदा तआला के इरादा के लिए एक संकेत क़रार पा गया कि वह नबूवत को दूसरे खानदान में स्थानांतरित करेगा। स्पष्ट है कि हज़रत ईसा का कोई इस्राईली बाप नहीं है। अत: वह बनी इस्राईल में से कैसे हो सकता है? इसलिए उसका अस्तित्व इस बात का निषेध करता है कि नबूवत हमेशा इस्राईली सिलसिला में ही रहेगी। ऐसा ही यूहन्ना अर्थात यह्या अपने मां-बाप के सामर्थ्य से नहीं है तो वह भी उसी की ओर संकेत है।

इस समस्त शोध से स्पष्ट है कि मसीह के किसी चमत्कार अथवा जन्म प्रक्रिया में कोई ऐसा अजूबा नहीं कि वह उसकी ख़ुदाई पर प्रमाण हो सके। इसी बात की ओर संकेत करने के लिए ख़ुदा तआला ने मसीह के जन्म का वर्णन करने के साथ यह्या के जन्म का वर्णन कर दिया ताकि ज्ञात हो कि जैसा कि यह्या का विलक्षण रूप से जन्म होना उनको मनुष्य होने से बाहर नहीं ले जाता उसी प्रकार मसीह इब्ने मरियम का जन्म उसको ख़ुदा नहीं बनाता। यह तो स्पष्ट है कि योहन्ना का जन्म हज़रत ईसा के जन्म से कम विचित्र नहीं बल्कि हज़रत ईसा में केवल बाप की ओर से एक विलक्षणता है और हज़रत

यह्या में मां और बाप दोनों की ओर से विलक्षणता है। और इसके साथ यह भी है कि हज़रत यह्या के जन्म का चमत्कार बहुत स्पष्ट रहा है क्योंकि उनकी मां पर कोई व्यभिचार के आरोप नहीं लगाए गए और इसलिए भी कि वह बांझ थी आरोप का कोई अवसर भी नहीं था परन्तु हज़रत मरियम पर आरोप लगाया गया और इस आरोप ने हज़रत ईसा के जन्म की विलक्षणता को मिट्टी में मिला दिया। परन्तु इस आरोप में केवल यहूदियों का दोष नहीं बल्कि स्वयं हज़रत मरियम से एक बड़ी भारी ग़लती हो गई जिसने यहूद को आरोप लगाने का अवसर दिया। और वह यह कि जब उसने अपने स्वप्न में फ़रिश्ते को देखा और फ़रिश्ते ने उसको गर्भवती होने की ख़ुशख़बरी दी तो मरियम ने जानबूझ कर अपने स्वप्न को छुपाया और किसी के समक्ष उसका वर्णन न किया क्योंकि उसकी मां और बाप दोनों ने उसको बैतुल मुक़द्दस की भेंट किया था ताकि वह आजीवन ब्रह्मचारिणी रहकर बैतुल मुक़द्दस की सेवा में व्यस्त रहे और कभी शादी न करे और बतूल* की उपाधि उसको दी गई। और उसने स्वयं भी यही वचन दिया था कि विवाह नहीं करेगी और बैतुल मुक़द्दस में रहेगी। अब इस स्वप्न के देखने से उसको यह भय हुआ कि यदि मैं लोगों के समक्ष यह प्रकट करती हूँ कि फ़रिश्ते ने मुझे यह ख़ुशख़बरी दी है कि तेरे लड़का पैदा होगा तो लोग यह समझेंगे कि यह विवाह करना चाहती है। इसलिए वह इस स्वप्न को अंदर ही अंदर दबा गई। परन्तु वह स्वप्न सच्चा था और साथ ही उसके गर्भ हो गया जिससे मरियम एक समय तक अनभिज्ञ रही। जब पांचवा महीना गर्भ पर बीत गया तब यह चर्चा फैल गई कि मरियम गर्भवती है। तब उसने लोगों को वह स्वप्न सुना दिया लेकिन उस समय सुनाना बे-फायदा था। अंततः बुज़ुर्गों ने बात को छुपाने के लिए यूसुफ नामक एक व्यक्ति से उसका विवाह करा दिया और इस प्रकार यह निशान धुंधला हो गया।

रही हज़रत मसीह की भविष्यवाणियाँ तो वे ऐसी हैं कि यहूदी अब तक उन का मज़ाक उड़ाते हैं क्योंकि ऐसी बातें कि भूकंप आएंगे, अकाल पड़ेंगे,

* **बतूल**- सांसारिक मोह-माया के बंधनों को तोड़ फेंकने वाली। अनुवादक

लड़ाइयां होंगी सामान्य हैं और हमेशा होते रहते हैं और साथ ही यहूदी कहते हैं कि उनकी कोई बात जो भविष्यवाणी के रूप में थी, सच्ची नहीं निकली। अत: यह आरोप उनके अब तक हल नहीं हो सके कि हज़रत ईसा ने 12 हवारियों को जो उनके सामने मौजूद थे, स्वर्ग का वादा दिया था बल्कि उनके लिए 12 तख्त प्रस्तावित किए थे लेकिन अन्तत: 12 में से 11 रह गए और 12वां हवारी जो यहूदा इस्करयूती था वह मुर्तद हो गया और 30 रुपए लेकर हज़रत ईसा को उसने गिरफ्तार करवा दिया। अगर यह भविष्यवाणी ख़ुदा की ओर से होती तो यहूदा मुर्तद न होता। ऐसा ही उनका यह भी ऐतराज़ है कि उनकी यह भविष्यवाणी कि अभी इस ज़माने के लोग जीवित होंगे कि मैं वापस आ जाऊंगा। यह भविष्यवाणी भी बड़ी सफाई से ग़लत सिद्ध हुई क्योंकि उन्नीस सौ वर्ष बीत गए और उस ज़माने के लोग एक लंबा समय हुआ कि मर गए लेकिन वह वापस नहीं आए।

अत: इन समस्त बातों से स्पष्ट है कि वह कदापि किसी बात पर समर्थ नहीं था केवल एक कमज़ोर इंसान था और इंसानी कमज़ोरी और अज्ञानता अपने अंदर रखता था और इंजील से स्पष्ट है कि उसको परोक्ष का ज्ञान भी नहीं था क्योंकि वह एक अंजीर के वृक्ष की ओर फल खाने गया और उसको मालूम न हुआ कि उस पर कोई फल नहीं है। और वह स्वयं इक़रार करता है कि क़यामत की ख़बर मुझे मालूम नहीं। अत: यदि वह ख़ुदा होता तो अवश्य क़यामत का ज्ञान उसको होना चाहिए था। इसी प्रकार कोई ख़ुदा की विशेषता उसमें मौजूद नहीं थी और कोई ऐसी बात उसमें नहीं थी कि दूसरों में न पाई जाए। ईसाइयों को इक़रार है कि वह मर भी गया। अत: कैसा दुर्भाग्यशाली वह धर्म है जिसका ख़ुदा मर जाए। यह कहना कि फिर वह ज़िन्दा हो गया था कोई तसल्ली की बात नहीं जिसने मर कर सिद्ध कर दिया कि वह मर भी सकता है उसके जीवन का क्या भरोसा?

इस समस्त तहक़ीक़ से स्पष्ट है कि ईसाइयों का वर्तमान धर्म कदापि ख़ुदा तआला की ओर से नहीं है क्योंकि जिसको उन्होंने ख़ुदा क़रार दिया है वह किसी

प्रकार ख़ुदा नहीं हो सकता। ख़ुदा पर कदापि मौत नहीं आ सकती और न वह परोक्ष के ज्ञान से वंचित हो सकता है।

अब हम इसी कसौटी पर आर्य धर्म को परखना चाहते हैं कि क्या वह सच्चे और पूर्ण और अद्वितीय 'एक ख़ुदा' को मानते हैं या उससे विमुख हैं? अत: स्पष्ट हो कि पहली निशानी ख़ुदा को पहचानने की एकेश्वरवाद है अर्थात ख़ुदा को उसके अस्तित्व में और विशेषताओं में एक स्वीकार करना और किसी गुण में उसका कोई भागीदार क़रार न देना। परन्तु स्पष्ट है कि आर्य समाजी लोग कण-कण को ख़ुदा तआला की शाश्वत होने की विशेषता में भागीदार क़रार देते हैं।★ और जिस प्रकार ख़ुदा तआला अपने अस्तित्व और हस्ती में किसी सृष्टा का मोहताज नहीं उसी प्रकार उनके निकट जीव अर्थात रूह और परमाणु अर्थात कण भी अपने अस्तित्व और हस्ती में किसी सृष्टा के मोहताज नहीं बल्कि अपनी समस्त शक्तियों के साथ अनादि और शाश्वत हैं और अपने-अपने अस्तित्व के स्वयं ही ख़ुदा हैं। अब स्पष्ट है कि इस आस्था की दृष्टि से न ख़ुदा का एकेश्वरवाद शेष रहता है न उसकी प्रतिष्ठा में से कुछ शेष रह सकता है। बल्कि इस अवस्था में उसकी पहचान पर कोई तर्क भी स्थापित नहीं हो सकता। क्योंकि सृष्टा अपनी सृष्टि से ही पहचाना जाता है। अत: जबकि रूहों और शरीरों की समस्त शक्तियां स्वयंभू और अनादि हैं तो फिर ख़ुदा के अस्तित्व पर कौन सी दलील स्थापित हुई और मानवीय बुद्धि ने कैसे समझ लिया कि वह मौजूद है। यह कहना बेकार है कि वह उन कणों को जोड़ता है और रूह तथा शरीर को परस्पर संबंध प्रदान करता है और इसी से ही वह पहचाना जाता है। क्योंकि केवल जोड़ने से कोई व्यक्ति ख़ुदा नहीं कहला सकता। कारण यह है कि यदि केवल जोड़ने से कोई ख़ुदा कहला सकता तो

★**हाशिया-** यह ऐतराज़ नहीं हो सकता कि मुसलमान भी इंसानी रूहों को अनन्त क़रार देते हैं क्योंकि पवित्र क़ुरआन यह नहीं सिखाता कि इंसानी रूहें अपने अधिकार से शाश्वत हैं बल्कि वह यह सिखाता है कि यह शाश्वत होना इंसानी रूह के लिए ख़ुदा का वरदान मात्र है अन्यथा इंसानी रूह भी दूसरे जीवों की रूहों के समान फना (नष्ट) होने योग्य है। इसी से।

इस अवस्था में तो समस्त बढ़ई और राजगीर ख़ुदा कहला सकते हैं क्योंकि जोड़ने का काम तो उन्हें भी आता है। देखो आजकल के ज़माने में कैसे-कैसे अच्छे अविष्कार यूरोप के वैज्ञानिकों ने किए हैं यहां तक कि जन्मजात अंधों के देखने के लिए भी एक यंत्र निकाला है और आए दिन कोई न कोई नया अविष्कार कर लेते हैं यहां तक कि एक प्रकार के मुर्दा जानवरों में रूह डालने की विधि भी उन्होंने अविष्कार की है। अर्थात जब कोई जानवर इस ढंग से मर जाए कि उसके शारीरिक मुख्य अंग को नुक़सान न पहुंचे और उसकी मौत पर कुछ अधिक समय भी न गुज़रे तो वह उसको अपनी युक्ति से पुनः जीवित करते हैं। यद्यपि वास्तविक रूप से वह ज़िन्दगी नहीं होती तथापि अजूबा दिखाने में क्या सन्देह है। अमेरिका में आजकल यह काम अधिकता से फैल रहा है परन्तु क्या ऐसे अविष्कारों से वे ख़ुदा कहला सकते हैं?

अतः असल बात यह है कि ख़ुदा की क़ुदरत में जो एक विशेषता है जिससे वह ख़ुदा कहलाता है वह आध्यात्मिक और शारीरिक शक्तियों के पैदा करने की विशेषता है। उदाहरणस्वरूप पशुओं के शरीर को जो उसने आंखें प्रदान की हैं उस कार्य में उसका वास्तविक कमाल यह नहीं है कि उसने ये आंखें बनाईं बल्कि कमाल यह है कि उसने शारीरिक कणों में पहले से गुप्त शक्तियां पैदा कर रखी थीं जिन में दृष्टि का नूर पैदा हो सके। अतः यदि वे शक्तियां स्वयंभू हैं तो फिर ख़ुदा कुछ भी चीज़ नहीं क्योंकि किसी व्यक्ति के कथनुसार कि "घी संवारे सालना बड़ी बहू का नाम"। इस 'दृष्टि' को वे शक्तियां उत्पन्न करती हैं ख़ुदा का उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं। और यदि संसार के कण-कण में वह शक्तियां न होती तो ख़ुदाई बेकार रह जाती। अतः स्पष्ट है कि ख़ुदाई का समस्त आधार इस बात पर है कि उसने रूहों और संसारिक कणों की समस्त शक्तियां स्वयं पैदा की हैं और करता है और स्वयं उन में भिन्न-भिन्न प्रकार के गुण रखे हैं और रखता है। अतः वही विशेषताएं जोड़ने के समय अपना करिश्मा दिखाती हैं और इसी कारण कोई स्रष्टा ख़ुदा के समान नहीं हो सकता क्योंकि यद्यपि कोई व्यक्ति रेल का अविष्कार करता हो

या तार का या फोटोग्राफ का या प्रेस का या किसी और कला का, उसको इक़रार करना पड़ता है कि वह उन शक्तियों का सृष्टा नहीं जिन शक्तियों के प्रयोग से वह किसी कला को तैयार करता है बल्कि यह समस्त अविष्कारक बनी बनाई शक्तियों से काम लेते हैं जैसा कि इंजन चलाने में भाप की शक्तियों से काम लिया जाता है। अत: अंतर यही है कि ख़ुदा ने महाभूत आदि में यह शक्तियां स्वयं पैदा की हैं। परन्तु ये लोग स्वयं ताक़तें एवं शक्तियां पैदा नहीं कर सकते। अत: जब तक ख़ुदा को सांसारिक कणों तथा रूहों की समस्त शक्तियों का स्रष्टा न ठहराया जाए तब तक उसकी ख़ुदाई कदापि सिद्ध नहीं हो सकती। और इस अवस्था में उसका मर्तबा एक राजगीर या बढ़ई या लोहार या गिलगो से कदापि अधिक नहीं होगा। यह एक स्पष्ट बात है जो रद्द करने योग्य नहीं। अत: बुद्धिजीवी को चाहिए कि समझ कर उत्तर दे क्योंकि बगैर समझ के जवाब देना केवल बकवास है।

यह नमूना आर्य समाज के एकेश्वरवाद का है और फिर दूसरा मामला कि वे अपने परमेश्वर को शक्तिमान किस सीमा तक समझते हैं स्वयं स्पष्ट है क्योंकि जबकि उनका यह माना हुआ सिद्धांत है कि उनका परमेश्वर न रूहों का स्रष्टा है न शारीरिक कणों का तो इस से स्पष्ट है कि उसकी शक्तियां और उसकी क़ुदरत उनके निकट केवल इस सीमा तक है कि वह शरीर तथा रूह को परस्पर जोड़ता है और जो रूह तथा शरीरों में गुण, विशेषताएं और विचित्र प्रकार की शक्तियां हैं वे उनके निकट अनादि और स्वयंभू हैं, परमेश्वर का उनमें कुछ भी हस्तक्षेप नहीं। अब इससे स्पष्ट है कि उनके निकट उनके परमेश्वर की शक्ति एवं सामर्थ्य बढ़ई और लोहारों आदि कलाकारों से कुछ अधिक नहीं क्योंकि अधिकता तो तब हो कि वह उन शक्तियों और गुणों और विशेषताओं का पैदा करने वाला भी हो और जबकि वे समस्त विशेषताएं और शक्तियां और गुण और भिन्न-भिन्न प्रकार की शक्तियां और शारीरिक कण प्राचीन और अनादि हैं जैसा कि स्वयं रूहें तथा शारीरिक कण प्राचीन और अनादि हैं तो इस अवस्था में मानना पड़ता है कि जिस परमेश्वर ने इन रूहों

और कणों को पैदा नहीं किया उसने उनकी शक्तियों को भी पैदा नहीं किया क्योंकि कोई चीज़ अपनी शक्तियों से अलग नहीं रह सकती। हर एक चीज़ की शक्तियां उसके साथ होती हैं और वही उसकी शक्ल सूरत को स्थापित रखती हैं और जब वह शक्ति और गुण समाप्त हो जाए तो साथ ही वह चीज़ भी समाप्त हो जाती है। अत: अगर यह माना जाए कि परमेश्वर ने रूहों और शारीरिक कणों को पैदा नहीं किया तो साथ ही मानना पड़ता है कि उसने उसकी शक्तियों और गुणों और विशेषताओं को भी पैदा नहीं किया और इस अवस्था में स्पष्ट रूप से यह परिणाम निकलता है कि परमेश्वर की क़ुदरत और शक्ति, इंसानी शक्ति और क़ुदरत से बढ़कर नहीं क्योंकि हम बार-बार कहते हैं कि इंसान से अधिक परमेश्वर में यही बात है कि वह शक्तियों और गुणों और विशेषताओं का अपनी क़ुदरत से पैदा करने वाला है। परन्तु इंसान यद्यपि कैसा ही भिन्न-भिन्न प्रकार के अविष्कार करने में आगे बढ़ जाए परन्तु वह शक्तियों और गुणों और विशेषताओं को रूहों और शरीरों में अपने हित के अनुसार पैदा नहीं कर सकता। हां ख़ुदा की ओर से जो शक्तियां और गुण और विशेषताएं पहले से ही मौजूद हैं (केवल) उन से काम लेता है। परन्तु ख़ुदा ने इंसानो में जिस उद्देश्य का इरादा किया है पहले से उस उद्देश्य की पूर्णता हेतु समस्त शक्तियां स्वयं पैदा कर रखी हैं। उदाहरण स्वरूप इंसानी रूहों में एक शक्ति मुहब्बत की मौजूद है और यद्यपि कोई इंसान अपनी ग़लती से दूसरे (मनुष्य) से मोहब्बत करे और अपनी मुहब्बत का पात्र किसी और को ठहराए लेकिन सद्बुद्धि बड़ी सरलता से समझ सकती है कि यह मोहब्बत की शक्ति इसलिए रूह में रखी गई है कि ताकि वह अपने वास्तविक महबूब से जो उसका ख़ुदा है, अपने सारे दिल और सारी शक्ति और सारे जोश से प्यार करे।

अत: क्या हम कह सकते हैं कि यह मोहब्बत की शक्ति जो इंसानी रूह में मौजूद है जिसकी लहरें असीमित हैं और जिसकी पराकाष्ठा के समय इंसान अपनी जान से भी हाथ धोने को तैयार हो जाता है, यह ख़ुद-ब-ख़ुद रूह में हमेशा से है? कदापि नहीं। यदि ख़ुदा ने इंसान और अपने अस्तित्व में मोहब्बत

का संबंध स्थापित करने के लिए रूह में स्वयं मोहब्बत की शक्ति पैदा करके यह संबंध स्वयं पैदा नहीं किया तो मानो यह बात एक संयोग है कि परमेश्वर के सौभाग्य से रूहों में मोहब्बत की शक्ति पाई गई और यदि उसके विपरीत कोई संयोग होता अर्थात रूहों में मोहब्बत की शक्ति न पाई जाती तो कभी लोगों का परमेश्वर की ओर ध्यान भी न जाता और न परमेश्वर उसमें कोई उपाय कर सकता क्योंकि नेस्ती से हस्ती नहीं हो सकती। परन्तु साथ ही इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि परमेश्वर का भक्ति और उपासना और सत्कर्म के लिए पूछताछ करना इस बात पर दलील है कि उसने स्वयं मोहब्बत तथा आज्ञापालन की शक्तियां मनुष्य की रूह के अंदर रखी हैं। अत: वह चाहता है कि मनुष्य जिसमें उसने स्वयं यह शक्तियां रखी हैं उसकी मोहब्बत और आज्ञा पालन में लगा रहे अन्यथा परमेश्वर में यह इच्छा पैदा क्यों हुई कि लोग उससे मोहब्बत करें, उसका आज्ञापालन करें और उसकी इच्छा के अनुसार अपने चाल-चलन तथा व्यवहार को बनाएं। हम देखते हैं कि परस्पर आकर्षण के लिए किसी प्रकार की एकता आवश्यक है। मनुष्य-मनुष्य के साथ मोहब्बत रखता है और बकरी बकरी के साथ और गाय-गाय के साथ और एक पक्षी अपनी प्रजाति के पक्षी के साथ। अत: जबकि मनुष्य की आध्यात्मिक तथा शारीरिक शक्तियों को परमेश्वर के साथ कोई भी संबंध नहीं तो किस कारण से परस्पर आकर्षण हो, केवल जोड़ने का संबंध पर्याप्त नहीं क्योंकि जैसा कि हम अभी वर्णन कर चुके हैं जोड़ने में परमेश्वर और एक बढ़ई या लोहार बराबर हैं। अगर हमारा कोई अंग अपने ठिकाने से उतर जाए और कोई व्यक्ति उसको असल जगह पर जोड़ दे या उदाहरण स्वरूप यदि किसी की नाक कट जाए और कोई व्यक्ति ज़िन्दा गोश्त उस नाक पर चढ़ा कर नाक को ठीक कर दे तो क्या वह उसका परमेश्वर हो जाएगा? ख़ुदा को पहली पुस्तकों में रूपक के तौर पर पिता अर्थात बाप क़रार दिया गया है और पवित्र क़ुरआन में भी फ़रमाया है-

(अल बक़र: 2/201) فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ

अर्थात तुम ख़ुदा को ऐसा याद करो जैसा कि तुम अपने बापों को याद

करते हो और फ़रमाया-

(अन्नूर - 24/36) اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ

अर्थात ख़ुदा वास्तविक नूर है। हर एक नूर धरती और आकाश का उसी से निकला है। अत: ख़ुदा का नाम रूपक के तौर पर पिता रखना और प्रत्येक नूर की जड़ उसको क़रार देना इसी की ओर संकेत करता है कि इंसानी रूह का ख़ुदा से कोई भारी संबंध है।

अरबी में मनुष्य को इंसान कहते हैं अर्थात जिसमें दो 'उन्स' हैं (अर्थात मोहब्बतें) एक 'उन्स' ख़ुदा की तथा दूसरी 'उन्स' मानवजाति की और इसी प्रकार हिंदी में उसका नाम मानस है जो मानुष का संक्षिप्त है। इससे स्पष्ट है कि इंसान अपने ख़ुदा से स्वभाविक मोहब्बत रखता है और मुश्रिकाना ग़लती भी वास्तव में इसी सच्चे ख़ुदा की तलाश के कारण है। हम अपने पूर्ण ईमान और पूर्ण विवेक से यह गवाही देते हैं कि आर्य समाजियों का यह सिद्धांत कदापि सही नहीं कि रूहें और अणु अपनी समस्त शक्तियों के साथ हमेशा से और अनादि और स्वयंभू हैं। इससे समस्त वह रिश्ता टूट जाता है जो ख़ुदा और उसके बन्दों के बीच है। यह एक नया और अप्रिय धर्म है जो पण्डित दयानन्द ने प्रस्तुत किया है। हम नहीं जानते कि वेद से कहां तक इस धर्म का संबंध है लेकिन हम इस पर बहस करते हैं कि यह सिद्धांत जो आर्य समाजियों ने स्वयं प्रकाशित किया है यह सद्बुद्धि के निकट पूर्ण विवेक और पूर्ण विचार-विमर्श और पूर्ण चिंतन के बाद कदापि सही नहीं। सनातन धर्म का सिद्धांत जो इसके विपरीत है उसको यद्यपि वेदांत की अकारण अतिशयोक्ति ने बुरी शक्ल वाला कर दिया है और वेदांतियों की बहुलता ने बहुत से आरोपों का अवसर दे दिया है तथापि उसमें सच्चाई की एक चमक है। अगर इस आस्था को अधिक बातों से अलग कर दिया जाए तो सारांश इसका यही निकलता है कि हर एक चीज़ परमेश्वर के ही हाथ से निकली है। अत: इस अवस्था में समस्त सन्देह दूर हो जाते हैं और मानना पड़ता है कि सनातन धर्म के सिद्धांत के अनुसार वेद की आस्था भी यही है कि यह समस्त रूहें और कण और उनकी शक्तियां और

ताकतें और गुण और विशेषताएं ख़ुदा की ओर से हैं।

याद रहे कि आर्यवर्त में प्राचीन धर्म जिस का करोड़ों मनुष्य पालन करते हैं सनातन धर्म है, यद्यपि इस धर्म को लोगों ने बिगाड़ दिया है और मूर्ति पूजा और देवियों की उपासना और बहुत सी मुश्रिकाना बिदअतें और अवतारों को ख़ुदा समझना मानो इस धर्म का हिस्सा हो गया है। लेकिन इन कुछ ग़लतियों को अलग करके बहुत सी अच्छी बातें भी इस धर्म में मौजूद हैं। इसी धर्म में बड़े-बड़े ऋषि और मुनि और जोगी होते रहे और साथ ही इस धर्म में बड़े-बड़े जप-तप करने वाले और तपस्या करने वाले पाए गए हैं। अब चाहे कोई स्वीकार करे या न करे परन्तु जिस धर्म को पण्डित दयानन्द ने प्रस्तुत किया है उसमें वह रूहानियत (आध्यात्मिकता) नहीं है जिसको सनातन धर्म के बुज़ुर्गों ने पाया था। यद्यपि अंतत: शिर्क (अनेकेश्वरवाद)को अपनी आस्थाओं में मिलाकर इस आध्यात्मिकता को खो दिया। सृष्टि का ख़ुदा से वास्तविक संबंध तभी होता है जब सृष्टि ख़ुदा के हाथ से पैदा हुई हो। जिस पर किसी और का होने का दाग़ है उसमें एकरूपता कभी नहीं आ सकती। हमने बड़े-बड़े पण्डितों से सुना है कि पण्डित दयानन्द ने जो धर्म प्रस्तुत किया है यह इस देश के अपनी ही राय रखने वाले लोगों का धर्म था जो केवल अपनी अल्प बुद्धि के अनुयायी थे जैसे यूनान के भटके हुए फिलॉस्फर, इसलिए वे वेद की कुछ परवाह नहीं करते थे। अंतत: लोगों को आकर्षित करने के लिए तावील (स्वत: स्पष्टीकरण) के साथ कोई वेद की श्रुति अपने समर्थन में सुनाते थे ताकि इस प्रकार अपनी आस्था को लोगों में फैलाएं अन्यथा असल आस्था वेद की वही है जो सनातन धर्म के अंदर पाया जाता है। उन लोगों में किसी ज़माने में प्रशंसनीय व्यवहारिक विशेषताएं थीं और वे जंगलों में जाकर तपस्या और उपासना भी करते थे और उनके दिलों में नर्मी और सदाचार था क्योंकि उनका धर्म केवल ज़बान तक सीमित नहीं था बल्कि दिलों को साफ करते थे और वह परमेश्वर जिसका पुस्तकों में उन्होंने नाम सुना था, चाहते थे कि इसी संसार में उसका दर्शन हो जाए इसलिए वे बहुत परिश्रम करते थे और उस सच्चाई का नूर उनके मस्तकों

पर दिखता था। फिर इसके बाद एक और ज़माना आया कि मूर्ति पूजा और देवताओं की पूजा, मूर्ति पूजा और अवतारों की पूजा बल्कि हर एक विचित्र वस्तु की पूजा सनातन धर्म का काम हो गया और वे उस मार्ग को भूल गए जो मार्ग राजा रामचंद्र और राजा कृष्ण जी ने अपनाया था, जिन पर उनकी नेकी के कारण ख़ुदा प्रकट हुआ था।

बात यह है कि जो लोग ख़ुदा के हो जाते हैं और वास्तव में अपना अस्तित्व और अपने शरीर का कण-कण ख़ुदा की ओर से समझते हैं उनको ख़ुदा और भी बरकत देता है और जो लोग अपनी आत्मा और अपने शरीर का कण-कण ख़ुदा की ओर से नहीं समझते उनमें अहंकार होता है और वे वास्तव में ख़ुदा के विशेष उपकार और उसके पूर्ण पोषण से इन्कारी होते हैं बल्कि उनके निकट जितना बाप को अपने बेटे से आध्यात्मिक संबंध है उतना भी ख़ुदा को अपने बंदे से संबंध नहीं क्योंकि वे मानते और स्वीकार करते हैं कि बेटा अपने मां-बाप से इतना आध्यात्मिक संबंध रखता है कि उनके शिष्टाचार से हिस्सा लेता है। उदाहरण स्वरूप जब बेटे का बाप बहादुर है तो बेटे में भी वह विशेषता कुछ न कुछ आ जाती है और जिस बाप में विवेक और बुद्धि की प्रतिभा बहुत है बेटा भी उसमें से कुछ हिस्सा पाता है लेकिन आर्य साहिबों का यह धर्म नहीं है कि इंसानी रूह में जो शिष्टाचार और विशेषताएं और शक्तियां हैं वे ख़ुदा से उसको मिली हैं क्योंकि अगर ऐसा कहें तो फिर उन्हें रूह को पैदा की हुई (सृष्टि) मानना पड़े। हालांकि इंसानी शिष्टाचार ख़ुदा के शिष्टाचार का अक्स हैं। जब ख़ुदा ने रूहों को पैदा किया तो जिस प्रकार बाप के शिष्टाचार का बेटों में असर आ जाता है ऐसा ही बन्दों में अपने ख़ुदा का असर आ गया है।

और अभी हम वर्णन कर चुके हैं कि ख़ुदा ने जो इंसान को अपनी ओर बुलाया है इसलिए उसने पहले से उपासना और मोहब्बत के यथोचित शक्तियां उसमें रख दी हैं। अत: वे शक्तियां जो ख़ुदा की ओर से हैं ख़ुदा की आवाज़ को सुन लेती हैं। इसी प्रकार जब ख़ुदा ने चाहा कि इंसान ख़ुदा की वास्तविक पहचान

में तरक्की करे तो उसने पहले से ही इंसानी रूह में पहचान की ज्ञानेंद्रियां पैदा कर रखी हैं और यदि वह पैदा न करता तो फिर कैसे इंसान उस की वास्तविक पहचान कर सकता था। इंसान की रूह में जो कुछ है वास्तव में ख़ुदा से है और वह ख़ुदा की विशेषताएं हैं जो इंसानी दर्पण में प्रकट हैं। उनमें से कोई विशेषता बुरी नहीं बल्कि उनका बुरा प्रयोग और उनमें अधिकता और न्यूनता करना बुरा है। संभवत: कोई जल्दी से यह ऐतराज़ करे कि इंसान में द्वेष है, ईर्ष्या है और दूसरी बुरी विशेषताएं होती हैं फिर वह कैसे ख़ुदा की ओर से हो सकती हैं? तो स्पष्ट रहे कि जैसा कि हम अभी वर्णन कर चुके हैं वास्तव में समस्त मानवीय आचरण ख़ुदा के सद् गुणों की छाया हैं क्योंकि इंसानी रूह ख़ुदा से है लेकिन न्यूनता या अधिकता या ग़लत प्रयोग के कारण वे विशेषताएं कमज़ोर इंसानों में बुरी शक्ल में दिखाई देती हैं। उदाहरण स्वरूप ईर्ष्या मनुष्य में एक बहुत बुरा गुण है जो चाहता है कि एक व्यक्ति से एक अच्छाई कम होकर उसको मिल जाए लेकिन असल व्याख्या ईर्ष्या की केवल इतनी है कि इंसान अपनी किसी ख़ूबी के प्राप्त करने में यह पसंद नहीं करता कि उस ख़ूबी में उसका कोई भागीदार भी हो। अत: वास्तव में यह विशेषता ख़ुदा तआला की है जो हमेशा स्वयं को अद्वितीय और एक देखना चाहता है। तो एक प्रकार के बुरे प्रयोग से यह अच्छी विशेषता घृणा योग्य हो गई है अन्यथा इस प्रकार यह विशेषता बुरी नहीं कि अच्छाई में सबसे आगे बढ़ना चाहे और आध्यात्मिकता में अद्वितीय और 'एक' के पद पर स्वयं को देखना चाहे।

फिर इसके अतिरिक्त यदि ख़ुदा को सर्वशक्तिमान न माना जाए तो फिर उससे सारी उम्मीदें ग़लत हो जाती हैं क्योंकि हमारी दुआओं का स्वीकार होना इस बात पर आधारित है कि ख़ुदा तआला जब चाहे शरीर के कणों में या रूहों में वह शक्तियां पैदा कर दे जो उनमें मौजूद न हों। उदाहरण स्वरूप हम एक बीमार के लिए दुआ करते हैं और बज़ाहिर उसमें मरने के लक्षण दिखाई दे रहे होते हैं। तब हमारी प्रार्थना होती है कि ख़ुदा उसके शारीर में एक ऐसी शक्ति पैदा कर दे जो उसके वजूद को मौत से बचा ले। तो हम देखते हैं कि अधिकतर

वह दुआ स्वीकार होती है और कभी-कभी पहले हमें सूचना दे दी जाती है कि यह व्यक्ति मरने वाला है और उसके जीवन की शक्तियों का अंत है लेकिन जब दुआ बहुत की जाती है और पराकाष्ठा तक पहुंच जाती है और दुआ के जोश और बेचैनी और व्याकुलता से हमारी हालत एक मौत जैसी हो जाती है तब हमें ख़ुदा से वह्यी होती है कि इस व्यक्ति में जीवन की शक्तियां फिर पैदा की गईं हैं। तब वह यकायक स्वस्थ होने के लक्षण प्रकट करने लगता है। मानो मुर्दा से ज़िन्दा हो गया।

ऐसा ही मुझे याद है कि जब मैंने ताऊन (अर्थात प्लेग) के समय दुआ की कि हे सर्वशक्तिमान ख़ुदा! हमें इस बला से बचा ले और हमारे शरीर में वह एक अमृतमयी विशेषता पैदा कर दे जिससे हम ताऊन (प्लेग) की ज़हर से बच जाएं। तब वह विशेषता ख़ुदा ने हम में पैदा कर दी और फ़रमाया कि मैं ताऊन की मौत से तुम्हें बचाउंगा और फ़रमाया कि तेरे घर की चारदीवारी के लोग जो अहंकार नहीं करते अर्थात ख़ुदा के आज्ञापालन से बाहर नहीं और संयमी हैं, मैं उन सब को बचाउंगा और साथ ही मैं क़ादियान को ताऊन के भयंकर फैलाव और सामान्य मारामारी से सुरक्षित रखूंगा अर्थात वह भयंकर तबाही जो दूसरे देहात को नष्ट कर देगी उतनी तबाही क़ादियान में नहीं होगी। अत: हमने ख़ुदा तआला की इन तमाम बातों को देख लिया। अत: हमारा ख़ुदा यही ख़ुदा है जो नई-नई शक्तियां और गुण और विशेषताएं संसार के कण-कण में पैदा करता है। इस से पूर्व 500 वर्ष तक पंजाब में इतने भयंकर ताऊन (प्लेग) का पता नहीं मिलता। उस समय यह कण कहां थे? अब जब ख़ुदा ने पैदा किए तो पैदा हो गए और फिर ऐसे समय पर दूर होंगे जब ख़ुदा तआला उनको दूर करेगा। हमारा यह कर्म प्रत्येक आर्य के लिए एक निशान होगा कि हमने उस सर्वज्ञानी ख़ुदा से सूचना पाकर टीका के मानवीय कोशिश से दूरी बनाई और बहुत से लोग टीका कराने वाले इस संसार से गुज़र गए और हम अब तक ख़ुदा तआला की अनुकम्पा से जीवित मौजूद हैं। अत: इसी प्रकार ख़ुदा तआला कण पैदा करता है जिस प्रकार उसने हमारे लिए

हमारे शरीर में अमृत रूपी कण पैदा किए और इसी प्रकार वह ख़ुदा रूह पैदा करता है जिस प्रकार मुझ में उसने वह पवित्र रूह फूंक दी जिससे मैं जीवित हो गया। हम केवल इस बात के मोहताज नहीं कि वह रूह पैदा करके हमारे शरीर को जीवित करे बल्कि स्वयं हमारी रूह भी एक और रूह की मोहताज है जिससे वह मुर्दा रूह ज़िन्दा हो। अत: उन दोनों रूहों को ख़ुदा ही पैदा करता है जिसने इस भेद को नहीं समझा वह ख़ुदा की शक्तियों से बेख़बर और ख़ुदा से लापरवाह है।

अब हम ने यह देखना है कि ख़ुदा तआला के ज्ञान के बारे में आर्य समाजियों की क्या आस्था है? स्पष्ट हो कि सद्बुद्धि इस बात को आवश्यक समझती है कि ख़ुदा तआला परोक्ष का ज्ञाता हो। और कोई ऐसा छुपी हुई बात न हो जिस पर उसके ज्ञान का प्रभुत्व न हो। परन्तु आर्य साहिबों की आस्था से निश्चित रूप से यही परिणाम निकलता है कि उनका परमेश्वर रूहों और कणों की छुपी हुई शक्तियों तथा विशेषताओं का ज्ञान नहीं रखता क्योंकि अभी तक उसको इतनी ही ख़बर है कि जो कुछ किसी मनुष्य अथवा पशु में गुण और शक्ति और विशेषता है वह पूर्व कर्मों के कारण है। अत: यदि उसको यह भी मालूम होता कि शरीरधारी जीवों के अतिरिक्त स्वयं रूहों में भी विभिन्न प्रकार की शक्तियां और गुण और विशेषताएं हैं जो कभी उनसे दूर नहीं होतीं तो वह उनके लिए भी कोई पुनर्जन्म प्रस्तावित करता और उनको अनादि क़रार न देता। यह तो स्पष्ट है कि किसी चीज़ की विशेषताएं उससे अलग नहीं होतीं। अत: मान लो यदि मानवीय रूह गधे में आ जाती है तो वह अपनी स्वभाविक विशेषता को किसी प्रकार छोड़ नहीं सकती, यद्यपि इस योनि में उन विशेषताओं को प्रकट करे या न करे क्योंकि यदि किसी योनि के बदलने से रूह की वास्तविक विशेषताएं और शक्तियां पूर्णत: उससे दूर हो जाएं तो फिर स्वयं आर्य साहिबों के कथनानुसार उसका लौटना असंभव होगा क्योंकि नेस्ति से हस्ती नहीं हो सकती। जो शक्ति वास्तव में रूह में से समाप्त हो गई उसका पुन: रूह में मौजूद हो जाना वास्तव में नेस्त से हस्त हो जाना है

और यदि आवागमन के चक्कर में पड़कर रूह की शक्तियां समाप्त नहीं होतीं तो आवागमन का उन पर कोई प्रभाव न हुआ। अत: जबकि परमेश्वर ने उन अविभाज्य शक्तियों को आवागमन के चक्कर से बाहर रखा है तो उस से ज्ञात हुआ कि उसको उन गोपनीय शक्तियों और विशेषताओं की ख़बर ही नहीं और न यह मालूम कि किन कर्मों के परिणाम स्वरूप यह शक्तियां और यह गुण और विशेषताएं रूह को मिली हैं। इसके अतिरिक्त यदि परमेश्वर को इस बात का पूर्ण ज्ञान है कि रूह क्या चीज़ है और उसकी विशेषताएं और शक्तियां क्या हैं तो फिर क्यों वह उसके बनाने पर समर्थ नहीं? यह तो आर्य साहिबों के निकट स्वीकार्य विषय है कि रूहें संख्या में सीमित हैं और सीमित समय तक अपना चक्कर पूरा करती हैं। अत: सीमित और ज्ञात चीज़ के बनाने पर ख़ुदा क्यों समर्थ नहीं और यदि ख़ुदा उनका सीमितकर्ता नहीं तो किसने उन रूहों को निर्धारित गणना तक सीमित कर दिया है? यदि वे रूहें ख़ुदा की बनाई हुई नहीं तो उनके बारे में ख़ुदा का ज्ञान ऐसा पूर्ण कैसे हो सकता है जैसा कि बनाने वाले का ज्ञान होता है? क्योंकि स्पष्ट है कि बनाने वाले और न बनाने वाले का ज्ञान समान नहीं होता। उदाहरण स्वरूप जो लोग अपने हाथ से कोई चीज़ बनाते हैं तो जैसे वे लोग उस चीज़ की बारीक से बारीक परिस्थितियों की जानकारी रखते हैं दूसरे लोग ऐसी जानकारी नहीं रखते और यदि पूर्ण रूप से जानकारी रखते तो बना भी सकते।

यह बात प्रमाणित और स्वीकार्य है कि जो बनाने वाले को एक प्रकार का ज्ञान होता है वह दूसरे व्यक्ति को नहीं हो सकता, यद्यपि वह यह समझे कि मैं ज्ञान रखता हूँ तब भी उसका वह विचार ग़लत है और वास्तव में एक प्रकार की अज्ञानता का पर्दा उस पर ज़रूर रहता है। उदाहरण के तौर पर हम प्रतिदिन देखते हैं कि रोटी इस तरह पकाते हैं और हमारे सामने वह रोटी बनाई जाती है और अच्छे और नर्म फुल्के और नान और कुल्चे तैयार होते हैं लेकिन अगर हम कभी अपने हाथ से यह काम करना चाहें तो पहले संभवत: यही होगा कि हम गूंथने के समय आटे को ही ख़राब करेंगे और वह पतला होकर रोटी पकाने के

योग्य ही नहीं रहेगा या गाढ़ा और सख्त होकर इस काम के अयोग्य होगा और या उसमें आटे की गिल्टियां पड़ जाएंगी। और अगर हमने आवश्यकता अनुसार आटा गूंथ ही लिया तो फिर रोटी हमसे हरगिज़ सही नहीं बनेगी। संभवत: बीच में उसके एक टिक्की रहेगी और आसपास उसके बड़े-बड़े कान निकल आएंगे और किसी जगह से पतली और किसी जगह से मोटी और किसी जगह से कच्ची और किसी जगह से जली हुई होगी। अत: क्या कारण है कि बावजूद प्रतिदिन देखने के हम साफ़ रोटी पका नहीं सकेंगे और बावजूद यह कि बहुत समय ख़र्च करेंगे लेकिन काम बिगाड़ देंगे, इसका यही कारण है कि हमारे पास वह ज्ञान नहीं कि जो उस व्यक्ति को है जो 20 वर्ष से हर प्रकार की रोटियां अपने हाथ से पका रहा है।

इसी प्रकार देख लो कि अनुभवी डॉक्टर कैसे-कैसे सूक्ष्म ऑपरेशन करते हैं यहां तक कि गुर्दे में से पथरियाँ निकाल लेते हैं और कुछ डॉक्टरों ने इंसान के सिर की बेकार और ज़ख्मी खोपड़ी को काटकर उतना हिस्सा किसी और जानवर की खोपड़ी का उससे जोड़ दिया। और देखो वह कैसी अच्छाई से कुछ कोमल अंगों को चीरते हैं यहां तक कि आंतों में जो फोड़े निकल आते हैं अत्यंत सफाई से उन पर छुरी चलाते हैं और मोतियाबिंद के मोती को कैसे सफाई से काटते हैं। अब अगर यही काम एक किसान बिना अनुभव तथा ज्ञान के करने लगे तो अगर आंखों पर कोई छुरी चलाए तो दोनों डेले निकाल देगा और अगर पेट पर चलाए तो वहीं कुछ अंगों को काटकर जीवन का अन्त कर देगा। अब स्पष्ट है कि उस किसान और डॉक्टर में अंतर केवल ज्ञान का है क्योंकि डॉक्टर को अधिक अनुभव तथा अभ्यास से एक प्रकार का ज्ञान हो गया है जो उस किसान को प्राप्त नहीं। देखो हमेशा चिकित्सालयों में बीमारों के लिए सेवा करने वाले और पानी आदि पिलाने वाले उपस्थित होते हैं और वे हमेशा देखते हैं कि डॉक्टर किस-किस प्रकार के ऑपरेशन करता है परन्तु यदि वे स्वयं करने लगें तो निस्सन्देह किसी इंसान का खून कर देंगे। अत: इसमें सन्देह नहीं कि निरंतर अभ्यास से एक विशेष ज्ञान हो जाता है जो दूसरे

को नहीं हो सकता। इसी प्रकार आर्य साहिबों को इस बात का इक़रार करना पड़ेगा कि यदि उनका परमेश्वर रूहों और सांसारिक कणों का स्रष्टा होता तो उसका ज्ञान वर्तमान अवस्था से बहुत अधिक होता। इसी प्रकार यह भी उनको इक़रार करना पड़ता है कि उनके परमेश्वर का ज्ञान तुच्छ है क्योंकि बनाने वाला और न बनाने वाला वास्तविकता की पहचान में बराबर नहीं हो सकते और स्वयं जब मान लिया जाए कि परमेश्वर ने न रूहों को बनाया न उनकी शक्तियों को और न उनकी विशेषताओं को और न परमाणु अर्थात कणों को बनाया और न उनकी शक्तियों और विशेषताओं और गुणों को तो इस पर क्या दलील है कि ऐसे परमेश्वर को उनकी शक्तियों और विशेषताओं और गुणों का ज्ञान भी है? केवल यह कहना पर्याप्त नहीं कि हमारी आस्था है कि उसको ज्ञान है क्योंकि केवल आस्था प्रस्तुत करना कोई दलील नहीं है। और यदि कष्ट कल्पना के तौर पर कुछ ज्ञान स्वीकार भी कर लें तो वह ज्ञान उस ज्ञान के बराबर कब हो सकता है जो इस अवस्था में होता कि जबकि परमेश्वर ने रूहों और सांसारिक कणों और उनकी शक्तियों और विशेषताओं को अपने हाथ से बनाया होता। क्योंकि समस्त बुद्धिमानों की मानी हुई बात है कि बनाने वाले और न बनाने वाले का ज्ञान समान नहीं हो सकता जैसा कि अभी हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं। परन्तु पवित्र क़ुरआन हमें सिखाता है कि वह रूहों और सांसारिक कणों की आंतरिक अवस्थाओं और शक्तियों और विशेषताओं को जानता है और पवित्र क़ुरआन में ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं इसलिए रूहों और कणों की आंतरिक अवस्थाओं को जानता हूँ क्योंकि मैं उन सब चीज़ों का बनाने वाला हूँ। लेकिन वेद का परमेश्वर कोई दलील नहीं देता कि बिना संबंध और बिना वास्ते क्यों और किस कारण रूहों की गोपनीय शक्तियों और गुणों और विशेषताओं का उसको ज्ञान है और ऐसा ही क्यों और किस प्रकार कणों की गुप्त से गुप्त विशेषताओं और शक्तियों और गुणों की उसको जानकारी है?

फिर इसके अतिरिक्त हम ख़ुदा तआला के ज्ञान का उसकी ताज़ा-ताज़ा वह्यी से हमेशा दीदार करते हैं और हम प्रतिदिन देखते हैं कि वास्तव में ख़ुदा

तआला परोक्ष का ज्ञाता है और न केवल इतना बल्कि हम उसकी क़ुदरत का भी दर्शन करते हैं परन्तु आर्य साहिबों पर यह द्वार भी बंद है। अत: उनके लिए इस बात पर विश्वास करने के लिए कोई मार्ग खुला नहीं कि उनका परमेश्वर परोक्ष का ज्ञाता है या सर्वशक्तिमान है। और न वेद उनको इस मर्तबा के प्राप्त करने की कोई ख़ुशख़बरी देता है।

ऐसा ही आर्य साहिबान स्वयं इक़रार करते हैं कि उनके परमेश्वर को अपने ख़ुदाई वरदान में पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त नहीं क्योंकि वह हमेशा थोड़े समय के लिए लोगों को मुक्ति गृह में डालता है और फिर कुछ समय के बाद बिना गुनाह के मुक्ति गृह से बाहर निकाल लेता है ताकि आवागमन की प्रक्रिया में कुछ अन्तर न आए। इसलिए उसके दण्ड और दया का नियम भी स्वार्थ की मिलावट से युक्त है क्योंकि वह जानता है कि यदि मैं पूर्ण दया से काम लूँ और सबको शाश्वत मुक्ति दे दूँ तो आवागमन की प्रक्रिया हमेशा के लिए बंद हो जाएगी तो फिर बाद में बेकार बैठना पड़ेगा क्योंकि जिस अवस्था में रूहें सीमित हैं अर्थात् उनकी एक सीमा निर्धारित है तो इस अवस्था में यदि एक भक्त को जो ईश्वर उपासना में अपनी समस्त आयु व्यतीत करता है शाश्वत मुक्ति दी जाए तो स्पष्ट है कि जो रूह मुक्ति पा गई वह हाथ से गई और आवागमन के चक्कर से आज़ाद हुई। तो निश्चित रूप से एक दिन ऐसा आ जाएगा कि समस्त रूहें हमेशा के लिए मुक्ति पा जाएंगी। और यह तो स्वयं माना हुआ विषय है कि परमेश्वर रूह पैदा करने पर समर्थ नहीं। अत: इस अवस्था में सिवाय इसके क्या परिणाम हो सकता है कि किसी दिन समस्त रूहें शाश्वत मुक्ति पाने के बाद परमेश्वरगिरी का समस्त सिलसिला समाप्त हो जाए और आवागमन के लिए एक रूह भी उसके हाथ में न रहे।

अत: इस समस्त तहरीर से सिद्ध होता है कि आर्य साहिबान का परमेश्वर जैसा कि रूहों के पैदा करने पर समर्थ नहीं ऐसा ही वह रूहों को शाश्वत मुक्ति देने पर भी समर्थ नहीं क्योंकि यदि रूहों को शाश्वत मुक्ति दे दी तो उसका समस्त सिलसिला टूटता है। इसलिए अपनी तमाम कार्यवाही के सुरक्षित रखने

के लिए कंजूसी की आदत को उसने अनिवार्य कर लिया है। और अपने नेक उपासकों के साथ कंजूसों के समान व्यवहार करता है और बार-बार सम्मान देने के बाद उनको अपमानित करता है और आवागमन के चक्कर में डालकर बुरी से बुरी मौतों में उनको डालता है, केवल इसलिए कि ताकि उसके साम्राज्य में अंतर न आए। इस बात का आर्य साहिबों को स्वयं इक़रार है कि उसने बार-बार संसार के समस्त मनुष्यों को मुक्ति दे दी है परन्तु फिर कुछ समय के बाद उस मुक्ति गृह से बाहर निकाल कर भिन्न-भिन्न प्रकार की योनियों में उनको डाल दिया है। अब आर्य साहिबान क्रोधित न हों हम ससम्मान निवेदन करते हैं और जहां तक हमें कोमल शब्द मिल सकते हैं उनमें हमारा यह निवेदन है कि इस आस्था पर एक बड़ी आपत्ति होती है और हम आशा नहीं करते कि इस आपत्ति का कोई आर्य साहिब उचित उत्तर दे सकें और यदि उत्तर दें तो हम प्रसन्नता पूर्वक सुनेंगे। और ऐतराज़ यह है कि जबकि स्वार्थ के कारण परमेश्वर का यह स्वभाव है कि वह मुक्ति गृह में हमेशा लोगों को रहने नहीं देता और फिर भिन्न-भिन्न प्रकार की योनियों में डालता है तो उन विभिन्न योनियों से निराधार प्राथमिकता अनिवार्य होगी अर्थात जो लोग परमेश्वर के सच्चे भक्त होकर मुक्ति पा चुके हैं अब मुक्ति गृह से बाहर निकालने के समय किसी को पुरुष बनाना और किसी को स्त्री और किसी को गाय और किसी को बैल और किसी को कुत्ता और किसी को सूअर और किसी को बंदर और किसी को भेड़िया, इसमें न्याय के विपरीत प्रक्रिया ज्ञात होती है। विशेष रूप से जिस अवस्था में प्रत्येक मुक्ति पाने वाला कठिन परीक्षा के बाद मुक्ति पाता है और करोड़ों वर्ष आवागमन के चक्कर में रहकर फिर कहीं उस मुराद तक पहुंचता है तो कम से कम उसके लिए यह छूट तो होनी चाहिए थी कि वह मनुष्य बनाया जाता। यह क्या मामला है कि अपना प्यारा बनाकर और अपना सानिध्य प्रदान करके फिर अंतत: उसको कुत्ता या सूअर बनाकर मुक्ति गृह से बाहर निकाल दिया गया और उसके साथ के लोगों को कुत्ता न बनाया बल्कि मनुष्य बनाया। हालांकि मुक्ति पाने की शर्तें सब ने बराबर पूरी कर ली

थीं, परमेश्वर का किसी पर (कोई) एहसान न था। फिर क्या कारण कि मुक्ति गृह से निकाल कर किसी को मनुष्य और किसी को कुत्ता बनाया गया। इस अवस्था में न दण्ड न्यायपूर्वक दिया गया और न दया।

एक और बात है जो हमें समझ नहीं आती। क्या कोई सज्जन आर्य साहिब हैं जो इसको समझ सकते हैं? और वह यह है कि इस नियम के अनुसार कि मुक्ति प्राप्त लोगों को एक समय सीमा के बाद फिर आवागमन के चक्कर में डाला जाता है और विभिन्न प्रकार की योनियों का कष्ट उनको भोगना पड़ता है, अनिवार्य है कि आर्य साहिबों का कोई प्रतिष्ठित बुज़ुर्ग इस अपमान से बाहर न हो यद्यपि हमारी यह राय नहीं है कि हम किसी क़ौम के प्रतिष्ठित बुज़ुर्गों का अपमान करें बल्कि हमारी यह राय है कि जिस व्यक्ति को कृपालु ख़ुदा अपनी महान कृपा से अपने अध्यात्मज्ञान, मोहब्बत और अपने पवित्र संबंध से पूर्ण भाग प्रदान करता है और अपने सम्मानित जनों में सम्मिलित करता है फिर उसको कभी अपमानित नहीं करता। और संभव नहीं कि वह ख़ुदा तआला के सानिध्य का इतना बड़ा पद प्राप्त करके फिर कुत्ता या बिल्ला या सूअर या बंदर बनाया जाए। परन्तु आर्य साहिबों का यह नियम मांग करता है कि अवश्य पवित्र लोग इन योनियों में आते हैं चाहे वे अवतार कहलाए या ऋषि मुनि के पद तक पहुंचे। हम ससम्मान पूछना चाहते हैं कि क्या वेद के ऋषि जिन पर चारों वेद उतरे थे और राजा रामचंद्र और राजा कृष्ण आदि अवतार इस नियम से बाहर हैं या नहीं? और अगर बाहर हैं तो क्या कारण? और अगर नहीं तो उनको सम्मान पूर्वक याद करने का क्या अर्थ है? क्या सद्बुद्धि इस बात की मांग करती है कि एक पुस्तक को तो सम्मान दिया जाए और उसको ईश्वरीय पुस्तक समझा जाए परन्तु जिस पर वह किताब उतरी थी उसके बारे में यह आस्था रखी जाए कि वह तिरस्कृत और नीच योनियों में चक्कर खाता फिरता है। अत: जो लोग ख़ुदा तआला के निकट एक बार सम्मान का पद पा गए हैं फिर उनको आवागमन के चक्कर में डालना और कुत्ते, बिल्ले, सूअर बनाना यह उस पवित्र ख़ुदा का काम नहीं है जो पवित्र बनाकर फिर गंदा बनाना नहीं

चाहता। अन्यथा इस अवस्था में आर्य समाजियों का कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति भी निश्चित रूप से प्रशंसनीय नहीं ठहरता क्योंकि क्या मालूम कि अब वह किस योनि में है। अत: इस आस्था की दृष्टि से आर्य साहिबों का परमेश्वर न केवल कंजूसी की गंदी विशेषता से युक्त होता है बल्कि कठोर हृदय और अत्याचारी और ईर्ष्या रखने वाला भी ठहरता है कि जिन लोगों ने उसके साथ सच्चे दिल से मोहब्बत की और उसके मार्ग में न्योछावर हुए और उसको हमेशा के लिए अपना लिया, वह उनको भी उसी समय या कुछ दिन बाद मुक्ति गृह से निकाल कर बंदर और सूअर बना देता है। ऐसे परमेश्वर से कौन सी भलाई की आशा हो सकती है। चाहिए कि आर्य साहिबान इस लेख का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें और केवल उत्तेजना तथा क्रोध से वशीभूत होकर उत्तर न दें बल्कि पहले बात को समझ लें फिर कोई शब्द मुंह से निकालें।

आर्य समाजियों का यह दावा है कि वेद में सृष्टि पूजा और ग्रहों की पूजा की शिक्षा नहीं है और उसमें केवल एक तथा अद्वितीय ख़ुदा की उपासना की शिक्षा है। परन्तु उनके मुक़ाबले पर प्राचीन धर्म सनातन धर्म है जो समस्त आर्यवर्त में फैला हुआ है जिसके करोड़ों अनुयायी इस देश में मौजूद हैं और सैंकड़ों पण्डित यत्र-तत्र पाए जाते हैं उनका यह बयान है कि अवश्य सृष्टि पूजा की शिक्षाएं वेद में पाई जाती हैं। और निस्सन्देह वेद यही मार्गदर्शन करता है कि तुम अग्नि की उपासना करो, हवा की उपासना करो, पानी की उपासना करो, धरती की उपासना करो, सूर्य की उपासना करो, चंद्रमा की उपासना करो और इसी कारण आर्यवर्त में अनादिकाल से इन तत्वों के उपासक पाए जाते हैं। अत: गंगा की उपासना करने वाले और कांगड़ा में ज्वालामुखी स्थित अग्नि की उपासना करने वाले और सूर्य के आगे हाथ जोड़ने वाले अब तक हर जगह इन उपासनाओं में व्यस्त हैं और यह सब लोग वेद को मानने का दावा करते हैं। और इसके अतिरिक्त जबकि हम स्वयं भी आस्था और न्याय की दृष्टि से इन वेदों पर विचार करते हैं जो उर्दू और अंग्रेज़ी में अनुवाद करके प्रकाशित किए गए हैं, तो सैंकड़ों श्रुतियों पर नज़र डालकर अवश्य हमें मानना पड़ता है

कि निश्चित रूप से इन वेदों में अग्नि और वायु और सूर्य और चंद्रमा आदि से प्रार्थनाएं की गई हैं और मन्नतों के पाने के लिए उनसे सहायता मांगी गई है। अत: हम कुछ श्रुतियां ऋग्वेद की यहां केवल उदाहरण स्वरूप लिखते हैं और वेद का यह भाग अनुवाद करके संस्कृत पुस्तक से दोबारा मुक़ाबला किया गया है और पण्डितों की गवाहियों के साथ उसकी सच्चाई की पुष्टि की गई है और विश्वविद्यालय में पढ़ाने के लिए स्वीकार किया गया है और वह श्रुतियां यह हैं:-

"मैं अग्नि देवता की जो होम का देवता है और देवताओं को उपहार पहुंचाने वाला और बड़ा धनवान है, महिमा करता हूँ। ऐसा हो कि अग्नि जिसकी महिमा प्राचीन तथा वर्तमान ऋषि करते चले आए हैं, देवताओं को इस ओर ध्यान दिलाए। हे अग्नि जो कि दो लकड़ियों के घर्षण से पैदा हुई है इस पवित्र किए हुए कुशा पर देवताओं को ला। तू हमारी ओर से उनका बुलाने वाला है और तेरी उपासना होती है। हे अग्नि आज हमारी यह स्वादिष्ट कुर्बानी देवताओं को उनके खाने के लिए प्रस्तुत कर। हे अग्नि! वायु, सूर्य आदि देवताओं को हमारी भेंट प्रस्तुत कर। हे निर्दोष अग्नि! तू अन्य देवताओं सहित एक होशियार देवता है जो अपने माता-पिता के पास रहता है और हमें संतान प्रदान करता है। समस्त धन संपत्ति का तू ही प्रदान करने वाला है। हे अग्नि! लाल घोड़ों के स्वामी हमारी स्तुति से प्रसन्न हो 33 देवताओं को यहां ला। हे अग्नि जैसा कि तू है लोग अपने घरों में तुझे सुरक्षित स्थान पर जलाते हैं। हे बुद्धिमान अग्नि! तो पनापत है अर्थात अपने शरीर का स्वयं जलाने वाला है आज हमारी अच्छी कुर्बानी देवताओं को उनके खाने के लिए प्रस्तुत कर। हे इंद्र हे वायु! यह अर्ग तुम्हारे लिए छिड़का गया है, हमारे लिए खाना लेकर इधर आओ। हे इंद्र! कोशिका ऋषि के पुत्र शीघ्र आ और मुझ ऋषि को मालदार कर दे।★

★**हाशिया**- समस्त पुराणों की वंशावली में लिखा है कि कोशिका (ऋषि) का बेटा विश्वामित्र था और सायण वेद का भाष्यकार इसका कारण बताने को कि इन्द्र कोशिका का पुत्र कैसे हो गया, यह किस्सा वर्णन करता है जो कि वेद के परिशिष्ट अनुक्रमणिका में लिखा है कि कोशिका

हे सूर्य तथा चन्द्रमा! हमारे यज्ञ को सफ़ल करो और हमारी शक्ति बढ़ाओ तुम बहुत आदमियों के लाभ के लिए पैदा हुए हो। बहुतों को तुम्हारा ही आसरा है। (विचार करने का स्थान है कि एक ओर इस श्रुति में इक़रार है कि सूर्य तथा चन्द्रमा दोनों सृष्टि और पैदा किए हुए हैं और फिर उनसे अपनी इच्छाओं की मांग भी की गई है) सूर्य के निकलने पर सितारे और रात चोरों की तरह भाग जाते हैं। हम सूर्य के पास जाते हैं जो देवताओं के बीच बहुत अच्छा देवता है। हे चन्द्रमा हमें आरोप से बचा, पाप से सुरक्षित रख, हमारे भरोसे से प्रसन्न होकर हमारा मित्र हो जा। ऐसा हो कि तेरी शक्ति अधिक हो। हे चन्द्रमा! तू धन प्रदान करने वाला और कठिनाइयों से मुक्ति देने वाला है, हमारे मकान पर दिलेर बहादुरों के साथ आ। हे चन्द्रमा और अग्नि तुम पद प्रतिष्ठा में बराबर हो हमारी प्रशंसा को आपस में बांट लो कि तुम हमेशा देवताओं के सरदार रहे हो। मैं जल देवता को जिसमें हमारे पशु पानी पीते हैं बुलाता हूँ। हे धरती देवता ऐसा हो कि तू अत्यंत विस्तृत हो जाए तुझ पर कांटे न रहें और तू हमारे रहने का स्थान हो जाए और हमें बड़ी प्रसन्नता प्रदान कर।"

यह कुछ श्रुतियां हैं जो हमने ऋग्वेद से उदाहरण स्वरूप लिखी हैं जिसका जी चाहे असल संस्कृत पुस्तक से मुक़ाबला कर ले। इस प्रकार की श्रुतियां जो सैंकड़ों वेद में पाई जाती हैं सनातन धर्म वाले हज़ारों पण्डित जो आर्यवर्त में मौजूद हैं उनके यही अर्थ करते हैं कि उनसे सृष्टि पूजा सिद्ध होती है। इसी कारण आर्य क़ौम में अग्नि की पूजा करने वाले और ऐसा ही जल की पूजा करने वाले और सूर्य तथा चंद्रमा के पुजारी भी पाए जाते हैं और इन अर्थों पर केवल इन्हीं की गवाही नहीं बल्कि ब्रह्मू समाज के सैंकड़ों अन्वेषक भी जिन्होंने बड़े परिश्रम से संस्कृत में चारों वेद पढ़े थे, आज तक गवाही देते आए हैं।

अब विचार करना चाहिए कि उन सब के मुक़ाबले पर केवल एक

शेष हाशिया:- अश्रथा (अश्वत्थामा) के पुत्र ने दिल में यह इच्छा करके कि इंद्र के वरदान से मेरा पुत्र हो, जप-तप किया था जिस के परिणाम स्वरूप स्वयं इंद्र ने ही उसके घर जन्म ले लिया और स्वयं ही उसका बेटा बन गया।

पण्डित दयानन्द जिसको कोई वह्यी-इल्हाम नहीं होता था, दावा करता है कि यह सब परमेश्वर के नाम हैं और फिर वह इस दावे को भी अंत तक निभा नहीं सका बल्कि कुछ स्थानों पर जहां किसी प्रकार उसके भावार्थ ने काम न किया स्वयं स्वीकार कर लिया है कि इस स्थान पर अग्नि से अग्नि ही अभिप्राय है या जल से जल ही अभिप्राय है। असल न्याय की यह बात है कि पण्डित दयानन्द वेद के भावार्थ नहीं करता था बल्कि एक दूसरा वेद बनाना चाहता था। आखिर भावार्थ की भी एक सीमा होती है। स्पष्ट है कि वह ख़ुदा के अवतारों में से तो था नहीं जो ख़ुदा से इल्हाम पाते हैं और न उसको ख़ुदा से वार्तालाप का सौभाग्य प्राप्त था और न उसकी सहायता में कोई ईश्वरीय चमत्कार प्रकट हुआ बल्कि वह बिना किसी भेद के सैंकड़ों हिन्दू पण्डितों में से एक पण्डित था। फिर अकारण बिना दलील उसकी बात को मानना न्याय संगत नहीं जबकि हज़ारों पण्डित एक ओर हैं और एक ओर केवल वह, और ख़ुदा की ओर से उसके साथ कोई विशेष चमत्कार नहीं और सिवाए भावार्थ के और कोई काम उसने नहीं किया। तो क्यों बिना जांच-पड़ताल के अकारण उसकी बात मान ली जाए? यह केवल मुसलमानों का आरोप नहीं कि वेदों में सृष्टि पूजा की शिक्षा है बल्कि सनातन धर्म वाले पुराने हिन्दू जिनके धर्म के करोड़ों लोग इस देश में पाए जाते हैं वे भी इस बात के हमेशा से समर्थक चले आते हैं कि वेद में सृष्टि पूजा की शिक्षा है। मैं कदापि समझ नहीं सकता कि अगर वेद में सृष्टि पूजा की शिक्षा न होती तो फिर क्यों यह हज़ारों पण्डित बिल्कुल अंधे हो जाते और सत्य के विरुद्ध वेद पर आरोप लगाते। सृष्टि पूजा की श्रुतियां केवल एक-दो नहीं बल्कि समस्त ऋग्वेद उन से भरा पड़ा है। अब कहां तक इंसान भावार्थ करता चला जाए। अगर दो श्रुतियां होतीं या दस होतीं या 20 होतीं या 50 होतीं तो कोई व्यक्ति कष्ट करके मेहनत करके भावार्थ भी करता परन्तु वेद में तो सैंकड़ों श्रुतियां इसी प्रकार की पाई जाती हैं उनका कहां तक भावार्थ हो सके? पक्षपात का मामला अलग है और पक्षपात में गिरफ्तार व्यक्ति जो चाहे कहे परन्तु न्यायपूर्वक अगर सोचा जाए तो कोई मार्ग भावार्थ

का ज्ञात नहीं होता।

आर्य समाजियों के दिल में अकारण यह भ्रम पैदा हो गया है कि जो कुछ पण्डित दयानन्द ने समझा है वह दूसरे हज़ारों पण्डितों ने नहीं समझा लेकिन यह विचार बिल्कुल व्यर्थ है। वेद सामने उपस्थित है और वह तीन संप्रदायों के हाथ में है। एक सनातन धर्म वाले, दूसरे ब्रह्म समाज वाले, तीसरे वेद के अनुवाद जो उर्दू तथा अंग्रेज़ी में हो चुके हैं। इस अवस्था में कोई स्वीकार कर सकता है कि इस विचार के प्रकट करने में कि वेदों में सृष्टि पूजा है इन समस्त लोगों की बुद्धि मारी गई है और केवल पण्डित दयानन्द साहिब इस धोखे से बच गए? हां मेरे विचार में एक बात आती है अगर इस बात को आर्य समाजी लोग सिद्ध कर सकें तो फिर पण्डित दयानन्द की व्याख्या सही हो सकती है और वह यह कि जिस अधिकता के साथ वेदों में सृष्टि पूजा की शिक्षा है जैसा कि अभी हमने कुछ श्रुतियां उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत की हैं उसके मुक़ाबले पर वेदों में से बहुत सी ऐसी स्पष्ट श्रुतियां प्रस्तुत कर दी जाएं जिनमें यह वर्णन हो कि तुम न तो अग्नि की उपासना करो और न जल की और न सूर्य की और न चंद्रमा की और न किसी अन्य वस्तु की बल्कि केवल परमेश्वर की ही उपासना करो। परन्तु चाहिए कि ऐसी श्रुतियां कम से कम 50 या 60 हों क्योंकि जिस अवस्था में सृष्टि पूजा और सूर्य एवं चंद्र की उपासना के बारे में सैंकड़ों श्रुतियां वेद में पाई जाती हैं तो उनके खण्डन में केवल 2-4 श्रुतियां पर्याप्त नहीं हो सकतीं। क्योंकि भ्रम होता है कि किसी ने वेद के दोष छुपाने के लिए पीछे से मिला दी होंगी। इसी निर्णय के लिए मैंने यह निवेदन किया है। अगर ऐसी श्रुतियां जो सृष्टि पूजा के भ्रम को खण्डित करती हों बहुत ही थोड़ी हों तब भी कम से कम 50 या 60 होनी चाहिए ताकि किसी भ्रम की गुंजाइश न रहे और अगर मुश्रिकाना शिक्षा की अधिकता की अपेक्षा ऐसी श्रुतियों की अधिकता सिद्ध न हो, तो चाहे एक पण्डित दयानन्द नहीं करोड़ों पण्डित दयानन्द हों कदापि वे इन मुश्रिकाना श्रुतियों की व्याख्या में ईमानदारी से उत्तर नहीं दे सकेंगे। स्पष्ट है कि वेद की शिक्षाओं से करोड़ों

लोग गुमराह हो चुके हैं और बीसियों सृष्टि पूजा के धर्म आर्य क़ौम में फैले हुए हैं। अत: यदि अनुमान के तौर पर पण्डित दयानन्द के समान किसी और वेद के भाष्यकार ने भी उन श्रुतियों की वही व्याख्या की हो जो दयानन्द ने की है तो वह भी कदापि स्वीकार योग्य नहीं होगी क्योंकि ऐसी व्याख्या करने वाले को वह्यी और इल्हाम का दावा नहीं। संभव है कि किसी व्यक्ति ने जिसको मुश्रिकाना शिक्षा बुरी लगी हो, वेद की श्रुतियों पर अपनी व्याख्या द्वारा पर्दा डाल दिया हो। तो जबकि उसके मुक़ाबले पर दूसरे भाष्यकारों ने स्वीकार किया है कि अवश्य इस में मुश्रिकाना शिक्षा है तो दो विभिन्न अर्थों के साथ निर्णय कैसे हो और ऐसे असैद्धांतिक विचारों से यद्यपि वह पुराने हों या नए, निश्चित रूप से कदापि यह राय स्थापित नहीं हो सकती कि वेद इस दाग़ से पवित्र है। क्योंकि हम दूसरे भाष्यकारों की गवाहियों को कहां छुपाएं और जिस प्रकार के अर्थ करोड़ों लोग आरंभ से समझते चले आए हैं उन अर्थों से अकारण कैसे विमुख हो जाएं। यह स्वयं वेद का अपना कर्तव्य था कि जिस अवस्था में उसने ऐसे शब्द प्रयोग किए जिससे क़ौम शिर्क की गंदगी से दूषित हो गई तो वह धोखा दूर करने के लिए स्वयं ही 50 या 60 या 100 बार उपदेश के तौर पर बार-बार लिख देता कि तुम सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, जल आदि की उपासना कदापि न करना अन्यथा नष्ट हो जाओगे।

एक और बात है जो पवित्र क़ुरआन की शिक्षा से हमें ज्ञात हुई है और हम विषय की पूर्णता हेतु उसका वर्णन करना भी यहां उचित समझते हैं और हम विचार करते हैं कि संभवत: ऋग्वेद की श्रुतियों की भी यही इच्छा हो और फिर एक ज़माना गुज़रने के बाद वह इच्छा सामान्य नज़रों से छुप गई हो। और साथ ही यह भी संभव है कि प्रारंभिक युग में ऐसी श्रुतियां वेद में बहुत हों जिनका विषय यह हो कि अग्नि और जल और वायु और सूर्य और चंद्र की उपासना नहीं करनी चाहिए। फिर बाद में जबकि आर्यवर्त में ऐसे संप्रदाय बहुत पैदा हो गए जो वेद के बाहरी शब्दों को देखकर सृष्टि पूजक और सूर्य उपासक आदि बन गए तो धीरे-धीरे उन्होंने वह श्रुतियां वेद में से

निकाल दीं क्योंकि स्वाभाविक रूप से मनुष्य में यह आदत है कि जब वह अपनी बुद्धि और समझ की सीमा तक दो विपरीत विषयों को एक पुस्तक में देखता है तो प्रयत्न करता है कि किसी प्रकार उन दोनों को एकरूप करे और जब एकरूपता नहीं दे पाता तो फिर उस प्रयत्न में लग जाता है कि किसी प्रकार उस भाग को निकाल दे जो उसके प्रमाणित भाग के विपरीत है। जैसा कि ईसाई साहिबान भी दिन रात यही प्रयत्न कर रहे हैं और इंजील के वे भाग जिनमें स्पष्ट रूप से गवाही दी गई है कि ईसा इब्ने मरियम मनुष्य था, वह उनको बहुत कष्ट देता है। अगर उनके परामर्श से इंजीलें लिखी जातीं तो बहुत से स्थान इंजील से निकाल देने के योग्य थे और जहां तक सामर्थ्य है अब भी यह कार्रवाही विभिन्न अनुवादों के द्वारा की जाती है। इसी प्रकार इस लेख की दृष्टि से जो हम आगे लिखते हैं, जिसको हमने अपनी ओर से नहीं बल्कि पवित्र क़ुरआन के हवाले से लिखा है, संभव ज्ञात होता है कि वेद भी किसी ज़माने में ख़ुदा की वह्यी हो और यह पुस्तक ख़ुदा की ओर से हो और फिर एक समय के बाद उसके वास्तविक अर्थों के समझने में लोगों ने ग़लती की हो और इस कारण आर्यवर्त में आर्य क़ौम के भीतर यह संप्रदाय पैदा हो गए कि कोई सूर्य की उपासना करता है और कोई अग्नि की पूजा करता है और कोई गंगा से मुरादें मांगता है। और जब इन संप्रदायों ने देखा कि वेद की सैंकड़ों दूसरी श्रुतियां सृष्टि पूजा के विपरीत हैं तब उन्होंने धीरे-धीरे उन समस्त श्रुतियों को वेद से बाहर निकाल दिया और केवल वही श्रुतियां वेद में रहने दीं जो मुश्रिकाना शिक्षा के रंग में थीं। अगर यह बात स्पष्ट रूप से प्रमाणित हो जाए कि वास्तव में ऐसी सैंकड़ों श्रुतियां वेद में से निकाल दी गई हैं तो कम से कम एक ईमानदार को संयम की दृष्टि से वेद को जल्दी से झुठलाना मना होगा और वेद के झुठलाने के लिए केवल इतना पर्याप्त नहीं होगा कि उसमें अग्नि आदि की उपासना, स्तुति और महिमा मौजूद है क्योंकि पवित्र क़ुरआन की कुछ आयतें जैसा कि हम आगे चलकर वर्णन करेंगे वेद के इस ढंग को एकेश्वरवाद में सम्मिलित करती हैं और यद्यपि सृष्टि पूजा के

बारे में कुछ श्रुतियां वेद में इस प्रकार की हैं कि उनकी व्याख्या करना बहुत कठिन है परन्तु इसमें कुछ सन्देह नहीं कि इस प्रकार से जो पवित्र क़ुरआन में संकेत मिलते हैं उनके अनुसार कुछ श्रुतियों की व्याख्या भी हो सकती है। अत: हम इस नियम को आगे लिखेंगे। और उसके साथ हम यह भी अपनी जमाअत को निर्देश करते हैं कि यद्यपि वेद अपनी वर्तमान अवस्था में एक धोखा देने वाली पुस्तक है जो शिर्क की शिक्षा जगह-जगह उसमें दिखाई देती है और करोड़ों लोगों पर उसका यह दुष्प्रभाव पाया जाता है कि वे अग्नि पूजा आदि मुश्रिकाना तरीकों में बढ़ जाते हैं बल्कि ज्ञात होता है कि जो सितारा परस्ती और अग्नि उपासना पारसियों में मौजूद है वह भी वेद से ही उन तक पहुंची है और आश्चर्य नहीं कि रोमियों और यूनानियों में भी यह मुश्रिकाना शिक्षाएं वेद के द्वारा ही रिवाज पकड़ गई हों क्योंकि आर्य क़ौम का विचार है कि वेद अत्यंत प्राचीन हैं। अत: हर एक झूठी और मुश्रिकाना तालीम का मूल स्रोत ऐसी किताब को ही मानना पड़ेगा जो सबसे पुरानी कहलाती है। अत: वह नमूना जो वेद की शिक्षा ने दिखाया है वह उन करोड़ों लोगों की आस्थाओं से प्रकट है जो वेद के अनुसरण का दावा करते हैं और वर्तमान हालत में वेद में एकेश्वरवाद का कोई प्रकाश नज़र नहीं आता। हर एक पृष्ठ पर मुश्रिकाना शिक्षा के शब्द दिखाई देते हैं और सहसा दिल में ख्याल आता है कि यह चार की संख्या ही शिर्क से कुछ संबंध रखती है। इंजील चार थीं उन्होंने एक बनावटी ख़ुदा प्रस्तुत किया और फिर वेद भी चार हैं उन्होंने अग्नि आदि की उपासना सिखाई, लेकिन तथापि संभव है तथा अनुमान के निकट है कि वेदों में फेरबदल किया गया हो और किसी ज़माने में सही रहे हों और ख़ुदा तआला की ओर से हों और फिर आज्ञानियों के हस्तक्षेप तथा फेरबदल से बिगड़ गए हों और वह श्रुतियां उसमें से निकाल दी गई हों जिन में यह वर्णन था कि तुम सूर्य और चंद्र और वायु और अग्नि और जल और आकाश और धरती आदि की उपासना मत करो। यद्यपि इतने परिवर्तन और इंकलाब से यह पुस्तक भयानक और हानिकारक हो गई तथापि किसी ज़माने

में बेकार न थी और जिस व्यक्ति को हिन्दुओं के इतिहास की जानकारी है वह खूब जानता है कि वेद पर बड़े-बड़े परिवर्तन आए हैं और एक ज़माने में वेदों को विरोधियों ने आग में जला दिया था और एक लंबी अवधि तक ऐसे लोगों के क़ब्ज़े में रहे जो सृष्टि पूजा और मूर्ति पूजा के शौकीन थे और सिवाए इस प्रकार के ब्राह्मणों के दूसरों पर उनका पढ़ना हराम किया गया था। अत: इस कारण वेद सामान्य तौर पर मिल नहीं सकते थे बल्कि केवल बड़े-बड़े ब्राह्मणों के पुस्तकालयों में ही पाए जाते थे जो मूर्तिपूजक और जीव उपासक हो चुके थे। इस अवस्था में बुद्धि स्वयं स्वीकार करती है कि उन दिनों में उन ब्राह्मणों ने बहुत कुछ मुश्रिकाना हाशिए वेद पर चढ़ाए होंगे और आर्यवर्त के अधिकतर अन्वेषक इस बात के समर्थक हैं कि कुछ ज़मानों में वेद बढ़ाए गए और कुछ में घटाए गए और किसी समय जलाए गए और जब आर्य क़ौम ने गृह युद्ध से मुक्ति पाई तो बाहरी हुकूमतों के पंजे में फंस गए। इस्लामी हुकूमत भी 700 वर्ष तक इस देश में रही। इस लंबे ज़माने में भी जो कुछ मुसलमानों ने आर्य क़ौम की आस्था देखी वह बुत परस्ती और अग्नि पूजा आदि थी। इसी ज़माने में 'शेख सादी' भी एक बार इस देश में आए थे और मूर्ति पूजा का बड़ा ज़ोर था। अत: वह अपनी किताब 'बोस्तान' में लिखते हैं-

بتک رایکے بوسہ دادم بدست
کہ لعنت برو باد و بر بُت پرست*

गाय के लिए आर्य साहिबों में जितना जोश है वह भी वास्तव में सृष्टि पूजा की एक जड़ है अन्यथा एक जानवर के लिए इतना जोश क्या अर्थ रखता है? लगभग तेरह सौ वर्ष हुए हैं कि मुसलमानों ने इस देश का एक हिस्सा विजय कर लिया था। उस समय भी इस देश में सामान्य रूप से मूर्ति पूजा और अग्नि पूजा आदि फैली हुई थी। अत: जहां तक इतिहास का क़दम रौशनी में है हरगिज़

* **अनुवाद**- शेख़ सादी फरमाते हैं कि एक बार मैंने एक छोटी मूर्ति को हाथ से छुआ, उस मूर्ति पर तथा मूर्ति पूजक पर ख़ुदा की लानत हो। अनुवादक

सिद्ध नहीं होता कि आर्यवर्त में कोई ऐसा ज़माना भी आया था कि वह ख़ुदा के उपासक थे।

मुसलमानों पर आर्यों का यह आरोप कि उनके बादशाहों ने हमारे बुज़ुर्गों को बलपूर्वक मूर्तिपूजा से छुड़ाकर मुसलमान बनाया था यह भी स्पष्ट बता रहा है कि अब तक आर्य साहिबों को मूर्ति पूजा से बहुत प्यार है व्यवहारिक रूप से एकेश्वरवाद से कुछ संबंध सिद्ध नहीं होता इस पर यह दलील पर्याप्त है कि वे मूर्तिपूजकों के मुसलमान होने से बहुत क्रोधित हैं। एक मूर्तिपूजक वास्तव में हकीकत राय का किस्सा भी इसी उद्देश्य से गढ़ा गया है जिसको उनके कथन अनुसार किसी मुसलमान बादशाह ने मूर्ति पूजा से बलपूर्वक छुड़वा कर मुसलमान करना चाहा था परन्तु वह लड़का मूर्ति पूजा पर आशिक़ था और उसी में उसने जान दी।

अत: इस्लामी इतिहास भी लगभग 1000 वर्ष से इस बात का गवाह है कि यह आर्यवर्त देश बुत परस्ती और मूर्तिपूजकों का एक भारी केंद्र है। उस ज़माने का कौन प्रमाण दे सकता है कि जब उन करोड़ों लोगों के समान जो मूर्तिपूजक और जीव उपासक नज़र आते हैं, पवित्र वेद की शिक्षा से इस देश में करोड़ों एकेश्वरवादी भी मौजूद थे। जगन्नाथ जी का पुराना मंदिर और ऐसा ही और कुछ पुराने मंदिर जिन की इमारत हज़ारों वर्ष की मालूम होती है स्पष्ट तौर पर गवाही दे रहे हैं कि यह मूर्ति पूजा और बुत परस्ती का धर्म कुछ नया नहीं बल्कि बहुत प्राचीन है। ऐसा ही भागवत आदि पुस्तकें जो हज़ारों वर्ष की लिखित ज्ञात होती हैं जिनको सनातन धर्म वाले सीधे-साधे हिन्दू बड़े प्यार से पढ़ा करते हैं, इस शिर्क के प्राचीन होने के गवाह हैं। इसके अतिरिक्त पुराने शिलालेख भी इस देश में ऐसे पाए गए हैं कि वे एक प्राचीन ज़माने की हालत को शीशे के समान दिखा रहे हैं और ऊंचे स्वर में गवाही दे रहे हैं कि उस समय भी इस देश में मूर्ति पूजा थी और जहां तक इतिहास का सिलसिला सफाई से चल सकता है यही शिर्क का अंधेरा और सृष्टि पूजा और मूर्ति पूजा की रस्में हर एक ज़माने में पाई

जाती हैं और ऐसे गले का हार हो रही हैं कि जब तक एक हिन्दू मुसलमान न हो जाए यह शिर्क का दाग उससे पूरी तरह दूर ही नहीं हो सकता, यद्यपि आर्य समाजी बने या कुछ और हो जाए। एक लंबे ज़माने से जिसका आरंभ ज्ञात करना कठिन है, मूर्ति पूजा और सृष्टि पूजा का धर्म आर्य क़ौम में चला आता है और दूसरी क़ौमों के अन्वेशकों को कभी यह नसीब नहीं हुआ कि वे गवाही दें कि आर्यवर्त में भी किसी समय एकेश्वरवाद था और उस लंबे ज़माने में अगर हम यह कहें कि करोड़ों पण्डित आर्यवर्त में सृष्टि पूजा के समर्थक गुज़रे हैं तो यह कुछ अतिशयोक्ति न होगी। अत: ऐसे पण्डितों के अस्तित्व से यही परिणाम निकलता है कि हमेशा समस्त देश एक समुद्र के समान बुत परस्ती और सृष्टि पूजा और मूर्ति पूजा से भरा रहा है। और इस देश के भाग्य में एकेश्वरवाद न आया जब तक कि इस्लाम इस देश में न आया। परन्तु जिन बादशाहों ने एकेश्वरवाद को इस देश में फैलाया और मूर्ति पूजा की जड़ खोदी वही आर्य साहिबों की नज़र में बुरे बने। अब तक हिन्दू साहिबान महमूद गज़नवी को भी गालियां देते हैं कि उसने क्यों उनके प्राचीन मंदिरों को तोड़ा। अत: मूर्ति पूजा और सृष्टि पूजा का धर्म इस देश में इतना प्राचीन है कि शोध द्वारा उसका कोई आरंभ निर्धारित करना कठिन है सिवाय इसके कि इस धर्म को वेद के साथ स्वीकार किया जाए परन्तु फिर भी जैसा कि मैंने ऊपर वर्णन किया है मुझे कुछ क़ुरआनी आयतों पर दृष्टि डालकर ख़याल आता है कि संभवत: वेद की असल शिक्षा सृष्टि पूजा से पवित्र हो और सृष्टि की महिमा और स्तुति से अभिप्राय कुछ और हो, परन्तु जैसा कि मैंने वर्णन किया है यह मेरा विचार उस समय विश्वास के स्तर तक पहुंचेगा जबकि वेद की 50 या 60 या 70 श्रुतियों से यह सिद्ध हो जाए कि वह उन समस्त जीवों और ग्रहों की पूजा से जिनकी महिमा और स्तुति ऋग्वेद में मौजूद है, साफ और स्पष्ट शब्दों के साथ मना करता है।

वेद की श्रुतियों की वह व्याख्या जिसके लिखने का हमने वादा किया था

वेद की श्रुतियों की वह व्याख्या जिसका मैं ऊपर वर्णन कर आया हूँ, पवित्र क़ुरआन की आयतों पर विचार करने से मेरे दिल में आती है। पहली आयत यह कि अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन की सूरह फ़ातिहा में फ़रमाता है- 'अल हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन' अर्थात प्रत्येक प्रशंसा उस ख़ुदा के लिए शोभनीय है जिसका प्रशिक्षण समस्त ब्रह्मांड में अर्थात हर एक रंग में हर एक ढंग से और ख़ुदा की बनाई प्रत्येक लाभदायक चीज़ के द्वारा अनुभूत हो रहा है अर्थात जिन-जिन विभिन्न माध्यमों पर इस संसार के लोगों की मुक्ति, सुरक्षा तथा पूर्णता आधारित है। वास्तव में उनके पीछे एक ही दैवीय शक्ति काम कर रही है जिसका नाम अल्लाह (या ईश्वर) है। अत: इस संसार की व्यवस्था की पूर्णता के लिए सूर्य एक प्रकार का प्रशिक्षण कर रहा है जो एक सीमा तक मनुष्य के शरीर को गर्मी पहुंचा कर खून के संचालन की प्रक्रिया को जारी रखता है जिससे इंसान मरने से बचता है और उसकी आंखों के प्रकाश को सहायता देता है। अत: वास्तविक सूर्य जो वास्तविक गर्मी पहुंचाने वाला और वास्तविक प्रकाश प्रदान करने वाला है, वह ख़ुदा है क्योंकि उसी की शक्ति के सहारे से यह सूर्य भी काम कर रहा है और उस वास्तविक सूर्य का केवल यही काम नहीं कि वह रक्त संचार की प्रक्रिया को जारी रखता है जिस पर शारीरिक जीवन का आधार है, इस प्रकार कि इस कार्य का आधार इंसान के दिल को ठहराता है और आकाशीय प्रकाश से आंखों के नूर की सहायता करता है बल्कि वह आध्यात्मिक जीवन को मानवजाति के समस्त अंगों तक पहुंचाने के लिए समस्त मनुष्यों में से एक व्यक्ति को चुन लेता है और समस्त मानवजाति के लिए जो मानो एक शरीर है, उसको बतौर दिल क़रार दे देता है और उसको मानवजाति के समस्त अंगों तक आध्यात्मिक जीवन का खून पहुंचाने के लिए

एक माध्यम निर्धारित कर देता है। अत: वह स्वाभाविक रूप से इस सेवा में लगा रहता है कि एक ओर से लेता है और फिर समस्त उचित दिशाओं में विभाजित कर देता है और जैसा कि वास्तविक और शारीरिक सूर्य आंखों को पूर्ण प्रकाश पहुंचाता और समस्त अच्छी और बुरी चीज़ें उन पर स्पष्ट कर देता है ऐसा ही यह वास्तविक सूर्य दिल की आंख को मारिफ़त के उच्च मीनार तक पहुंचा कर दिन चढ़ा देता है। और जैसा कि वह शारीरिक सूर्य वास्तविक सूर्य के सहारे से फलों को पकाता है और उनमें मिठास डालता और कच्चेपन को दूर करता और बहार के मौसम में समस्त वृक्षों को एक हरी चादर पहनाता और सुंदर फलों से उनको भर देता है और फिर ख़रीफ़ में (पतझड़ में) इसके विपरीत प्रभाव प्रकट करता है और समस्त वृक्षों के पत्ते गिरा देता और उनको कुरूप बना देता और फलों से वंचित करता और उन्हें बिल्कुल नंगे कर देता है सिवाए उन सदाबहार वृक्षों के जिन पर वह ऐसा प्रभाव नहीं डालता। यही काम इस वास्तविक सूर्य के हैं जो समस्त प्रकाशों और अध्यात्म लाभों का मूल स्रोत है। वह अपनी विभिन्न चमकारों से विभिन्न प्रकार के प्रभाव दिखाता है। एक प्रकार की चमकार से वह बहार पैदा कर देता है और फिर दूसरी प्रकार की चमकार से वह पतझड़ लाता है और एक चमकार से वह अध्यात्मज्ञानियों के लिए मारिफ़त (अध्यात्मज्ञान) की मिठास पैदा कर देता है और फिर एक चमकार से कुफ्र और पाप के गंदे तत्त्व संसार से दूर कर देता है। अत: यदि विचार पूर्वक देखा जाए तो वह समस्त काम जो यह शारीरिक सूर्य कर रहा है वह सब काम उस वास्तविक सूर्य (अर्थात ख़ुदा) के प्रतिरूप हैं और यह नहीं कि वह केवल आध्यात्मिक कार्य करता है बल्कि जितने इस शारीरिक सूर्य के कार्य हैं वे उसके अपने कार्य नहीं हैं बल्कि वास्तव में उसी वास्तविक उपास्य की रहस्यमयी शक्ति उसके अंदर वह समस्त काम कर रही है जैसा कि उसी की ओर संकेत करने के लिए पवित्र क़ुरआन में एक महारानी का किस्सा लिखा है जो सूर्य की उपासना करती थी और उसका नाम बिल्कीस था और वह अपने देश की शाषक थी और ऐसा हुआ कि उस समय के नबी ने उसको

धमकी दे भेजी कि तुझे हमारे पास उपस्थित होना चाहिए अन्यथा हमारी सेना तुम्हारे देश पर चढ़ाई करेगी और फिर तेरी खैर नहीं होगी। अत: वह डर गई और उस नबी के पास उपस्थित होने के लिए अपने शहर से रवाना हुई और इससे पूर्व कि वह (महारानी) उपस्थित हो उसको सचेत करने के लिए एक ऐसा महल तैयार किया गया जिस पर अत्यंत स्वच्छ चमकदार शीशे का फर्श था और उस फर्श के नीचे नहर के समान एक गहरी खाई तैयार की गई थी जिसमें पानी बहता था और पानी में मछलियां चलती थीं। जब वह मलिका उस जगह पहुंची तो उसको आदेश दिया गया कि महल के अंदर आ जा। तब उसने निकट जाकर देखा कि पानी ज़ोर से बह रहा है और उसमें मछलियां हैं। इस दृश्य से उस पर ऐसा प्रभाव हुआ कि उसने अपनी पिंडलियों से कपड़ा उठा लिया कि कहीं ऐसा न हो कि पानी में गीला हो जाए। तब उस नबी ने उस महारानी को जिसका नाम बिल्कीस था आवाज़ दी कि हे बिल्कीस! तू किस ग़लती में गिरफ्तार हो गई, यह तो पानी नहीं है जिससे डरकर तूने कपड़ा ऊपर उठा लिया। यह तो शीशे का फर्श है और पानी उसके नीचे है। यहां पवित्र क़ुरआन में यह आयत है-

قَالَ اِنَّهٗ صَرۡحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنۡ قَوَارِيۡرَ ؕ (अन्नमल - 27/45)

अर्थात उस नबी ने कहा कि हे बिल्कीस! तू क्यों धोखा खाती है यह तो शीशमहल के शीशे हैं जो ऊपर की सतह पर बतौर फर्श के लगाए गए हैं और पानी जो ज़ोर से बह रहा है वह तो उन शीशों के नीचे है न कि यह ख़ुद पानी है। तब वह समझ गई कि मेरी धार्मिक ग़लती पर मुझे सचेत किया गया है और मैं वास्तव में अज्ञानता के मार्ग का अनुसरण कर रही थी जो सूर्य की पूजा करती थी।

तब वह अद्वितीय ख़ुदा पर ईमान लाई और उसकी आंखें खुल गईं और उसने विश्वास कर लिया कि वह महान शक्ति जिस की उपासना करनी चाहिए वह तो और है तथा मैं धोखे में रही और सतही चीज़ को उपास्य ठहराया। और उस नबी की बातों का सारांश यह था कि संसार एक शीशमहल है और सूर्य

और चंद्र और सितारे और ग्रह आदि जो कुछ काम कर रहे हैं यह वास्तव में उनके कार्य नहीं यह तो मात्र शीशों के तौर पर हैं बल्कि उनके नीचे एक शक्ति छुपी है जो ख़ुदा है यह सब उसके काम हैं। इस दृश्य को देखकर बिल्कीस ने सच्चे दिल से सूर्य की पूजा से तौबा की और समझ लिया कि वह शक्ति ही कोई दूसरी है जो सूर्य आदि से काम कराती है और यह तो केवल शीशे हैं।

यह तो हमने सूर्य का हाल बताया ऐसा ही चंद्रमा का हाल है जिन विशेषताओं को चंद्रमा की ओर संबद्ध किया जाता है वे वास्तव में ख़ुदा तआला की विशेषताएं हैं। वे रातें जो भयावह अंधकार पैदा करती हैं चंद्रमा उनको प्रकाशित करने वाला है। जब वह चमकता है तो तुरंत अंधेरी रात का अंधकार छट जाता है। कभी वह रात्रि के आरम्भ से ही चमकना शुरू करता है और कभी कुछ अंधकार के बाद निकलता है। यह विचित्र दृश्य होता है कि एक ओर चंद्रमा चढ़ा और दूसरी ओर अंधकार का नामोनिशान न रहा। इसी प्रकार ख़ुदा भी जब अत्यंत पथभ्रष्ट तथा गुमराह लोगों पर जो उसकी ओर झुकते हैं, चमकता है तो उनको इसी प्रकार प्रकाशमान कर देता है जैसा कि चंद्रमा रात्रि को प्रकाशित करता है। और कोई मनुष्य अपनी आयु के प्रथम भाग में ही इस चंद्रमा के प्रकाश से भाग लेता है और कोई अर्ध आयु में और कोई अंतिम आयु में और कुछ दुर्भाग्यशाली अमावस्या की रातों के समान होते हैं अर्थात समस्त आयु उन पर अंधकार ही छाया रहता है। इस वास्तविक चंद्रमा से हिस्सा लेना उनको नसीब नहीं होता। अतः चंद्रमा के प्रकाश का यह सिलसिला उस वास्तविक चंद्रमा के प्रकाश से बहुत समानता रखता है। ऐसा ही चंद्रमा फलों को मोटा करता और उनमें तरावट (मिठास) पैदा करता है। इसी प्रकार वे लोग जो उपासना करके अपने अस्तित्व रूपी वृक्ष में फल तैयार करते हैं चंद्रमा के समान ख़ुदा की रहमत उनके साथ हो जाती है और उस फल को मोटा और ताज़ा कर देती है। और यही अर्थ रहीम के शब्द में छुपे हैं जो सूरह फ़ातिहा में ख़ुदा की दूसरी विशेषता वर्णन की गई है। उसका विवरण यह है कि शारीरिक तौर पर चार प्रकार की रबूबियत (परवरिश) ऐसे हो रही है जिससे संसार का

प्रबंध जुड़ा हुआ है। एक आसमानी रबूबियत अर्थात आकाश से है जो शारीरिक परवरिश का मूल स्रोत है जिससे पानी बरसता है और अगर वह पानी कुछ समय न बरसे तो जैसा कि भौतिक विज्ञान में प्रमाणित किया गया है कि कुएं का पानी भी सूख जाए। यह आसमानी रबूबियत अर्थात आकाश का पानी भी संसार को जीवित करता है और नाबूद को बूद की हालत में लाता है। इस प्रकार आसमान एक पहला रब्बुन्नौ है (अर्थात संसार का रब) जिससे★ पानी बरसता है। जिसको वेद में इंद्र के नाम से याद किया गया है जैसा कि पवित्र क़ुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है-

وَ السَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ (अत्तारिक-86/12)

इस आयत में आसमान से अभिप्राय धरती का वह भाग है जिससे पानी बरसता है। और इस आयत में उस भू भाग की सौगंध खाई गई है जो मींह बरसाता है और 'रजअ' का अर्थ वर्षा है और सारांश इस आयत का यह है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं वह्यी का सबूत देने के लिए आसमान को गवाह ठहराता हूँ जिससे पानी बरसता है अर्थात तुम्हारी आध्यात्मिक अवस्था भी एक पानी की मोहताज है और वह आसमान से ही आता है जैसा कि तुम्हारा शारीरिक पानी आसमान से आता है। अगर वह पानी न हो तो तुम्हारी बुद्धि के पानी भी सूख जाएं, बुद्धि भी उसी आकाशीय पानी अर्थात ख़ुदा की वह्यी से ताज़गी और रोशनी प्राप्त करती है। अत: आसमान जिस सेवा में लगा हुआ है अर्थात पानी बरसाने की सेवा, यह कार्य आकाश का ख़ुदा तआला की पहली विशेषता का एक प्रतिरूप है। जैसा कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि आरंभ हर एक चीज़ का पानी से है। इंसान भी पानी से ही पैदा होता है और वेद की दृष्टि से पानी का देवता आकाश है जिसको वेद की परिभाषा में इंद्र कहते हैं। परन्तु यह समझना ग़लती है कि यह इंद्र कुछ महत्व रखता है बल्कि वही

★ **हाशिया** - पवित्र क़ुरआन की परिभाषा की दृष्टि से जो वायु अर्थात पॉल ऊपर की ओर है जिसमें बादल जमा होकर मींह बरसता है उसका नाम भी आसमान है जिसको हिन्दी में आकाश कहते हैं।

अत्यंत रहस्यमयी महान शक्ति जिसका नाम ख़ुदा है, उसमें काम कर रही है। इसी को वर्णन करने के लिए ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुरआन में अर्थात सूरह फ़ातिहा में यूँ फ़रमाया है- अल्हम्दुलिल्लाह रब्बिल आलमीन अर्थात यह मत विचार करो कि सिवाए ख़ुदा के कोई और भी रब है जो अपनी रबूबियत से संसार का भरण-पोषण कर रहा है बल्कि वही एक ख़ुदा है जो तुम्हारा रब है। उसी की शक्ति प्रत्येक स्थान पर काम करती है। इस जगह इस क्रम की दृष्टि से जो इस सूरह में है इंद्र देवता का रद्द करना अभीष्ट है। क्योंकि पहला प्रशिक्षण इसी से आरंभ होता है इसी को दूसरे शब्दों में आसमान या आकाश कहते हैं। इसी कारण संसार के लोग समस्त तक़दीर को आसमान की ओर सम्बद्ध किया करते हैं और मूर्तिपूजकों के निकट संसार का सबसे बड़ा रब वही है जो इंद्र कहलाता है। अत: इस जगह उसी का रद्द करना अभीष्ट है और यह जताना उद्देश्य है कि वास्तविक इंद्र वही अकेला ख़ुदा है उसी की शक्ति है जो पानी बरसाती है। आसमान को रब्बुल आलमीन कहना मूर्खता है बल्कि रब्बुल आलमीन वही है जिसका नाम अल्लाह है।

अत: ख़ुदा तआला की यह पहली रबूबियत है जिसको अज्ञानियों ने आकाश अर्थात इंद्र की ओर संबद्ध किया है। बात यही है कि अंधों को आकाश से पानी बरसता नज़र आता है परन्तु बरसाने वाली एक और शक्ति है और इस प्रकार बरसाना यह जलवा दिखाना है कि यह भी उसकी एक विशेषता है। अत: आसमान की यह व्यवहारिक रबूबियत और उसके वास्तविक रबूबियत का एक प्रतिरूप है और बिजली की चमक और कड़क आदि का जो सामान बादल में होता है वास्तव में यह सब उसकी विशेषताओं के रंगों में से एक रंग है। फिर दूसरी रबूबियत ख़ुदा तआला की जो धरती पर काम कर रही है रहमानियत है। इस शब्द रहमान से मूर्तिपूजकों के मुक़ाबले पर सूर्य देवता का खण्डन करना अभीष्ट है क्योंकि मूर्ति पूजकों के विचार के अनुसार जैसा कि आकाश अर्थात आसमान पानी के द्वारा वस्तुओं को पैदा करता है ऐसा ही सूर्य बसन्त के दिनों में समस्त वृक्षों को वस्त्र पहनाता

है। मानो यह उसकी वह रहमत है जो किसी कर्म पर आधारित नहीं। अत: सूर्य शारीरिक तौर पर रहमानियत का द्योतक है। क्योंकि वह बसन्त के मौसम में नंगे वृक्षों को पत्तों की चादर पहनाता है और उस समय तक वृक्षों ने अपने तौर पर कोई कर्म नहीं किया होता अर्थात कुछ बनाया नहीं होता ताकि बनाए हुए काम पर कुछ अधिक किया जाए बल्कि वह पतझड़ की मार के कारण केवल नंगे खड़े होते हैं। फिर सूर्य की मोहब्बत की छाया से प्रत्येक वृक्ष स्वयं को सजाना शुरू कर देता है और अंतत: सूर्य की सहायता से वृक्षों का कर्म इस सीमा तक पहुंचता है कि वह फल बना लेते हैं। अत: जबकि वे फल बनाकर अपने कर्म को पूरा कर चुकते हैं तब चन्द्रमा उन पर अपनी रहीमियत का साया डालता है। और रहीम उसको कहते हैं कि कर्म करने वाले को उसके कर्म की पूर्णता हेतु सहायता दे ताकि उसका कर्म अधूरा न रह जाए तथा चंद्रमा वृक्षों के फलों को यह सहायता देता है कि उनको मोटे कर देता है और उनमें अपने प्रभाव से मिठास उत्पन्न करता है। अत: भूगोल विज्ञान में यह प्रमाणित विषय है कि चंद्रमा के प्रकाश में बागबान लोग अनारो के फटने की आवाज़ सुना करते हैं। अत: रूपक के तौर पर चंद्रमा जो द्वितीय सूर्य है रहीम के नाम से नामित हुआ क्योंकि बड़ा कर्म उसका यही है कि मौजूद फलों की सहायता करता है और मोटा-ताज़ा कर देता है फिर जब वह फल तैयार हो जाते और अपनी पूर्णता को पहुंच जाते हैं तो धरती उनको अपनी मालिकाना हैसियत से अपनी ओर गिराती है ताकि वे अपने अंजाम को पहुंचें। अत: यदि वे अच्छे और स्वच्छ फल हैं तो धरती पर उनका बड़ा सम्मान होता है और वे अच्छी-अच्छी जगह रखे जाते हैं और यदि वे रद्दी हैं तो ख़राब स्थानों में फेंक दिए जाते हैं और यह प्रतिफल मानो धरती के हाथ में होता है कि जो ख़ुदा ने उसकी फितरत को दे रखा है कि अच्छे फल की कदर करती है और बुरे फल को तुच्छ स्थान पर रखती है।

अत: वेद में रूपक के तौर पर यह चार नाम हैं जो चार बड़े-बड़े देवताओं

को प्रदान हुए हैं। प्रथम आकाश अर्थात आसमान जिसको इंद्र देवता बोलते★ हैं। वह पानी का दाता है और पवित्र क़ुरआन में है कि-

وَ جَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ؕ (अल अंबिया - 21/31)

अर्थात प्रत्येक वस्तु पानी से ही जीवित है इसलिए यह लाक्षणिक देवता अर्थात इंद्र जिसको आकाश कहना चाहिए समस्त लाक्षणिक देवताओं से बड़ा है जिसकी बगलों में सूर्य और चंद्रमा परवरिश पाते हैं। यह अन्यों की अपेक्षा सामान्य रबूबियत का देवता है। इसके बाद सूर्य देवता है जो रहमानियत का द्योतक है उसकी रबूबियत चंद्रमा से अधिक और आकाश अर्थात इंद्र देवता से कम है। वह काम जो उसके साथ विशेषता रखता है वह यह है कि वह कर्म की मौजूदगी के बिना वृक्षों पर अपनी कृपा प्रकट करता है। क्योंकि वृक्ष नंगे खड़े होते हैं और पतझड़ के मारे हुए ऐसे होते हैं कि मानो मुर्दा हैं जो धरती में गाड़े गए हैं और खाली हाथ फकीरों की तरह एक पाँव पर खड़े हैं। अत: सूर्य देवता बसंत के मौसम में मौज में आकर उनको वस्त्र प्रदान करता है और उनकी झोली फलों तथा फूलों से भर देता है और कुछ दिन में उनके सिर पर फूलों के सेहरे बांधता है और हरे पत्तों की रेशमी पगड़ी उनको पहनाता है और फलों की दौलत से उनको मालामाल कर देता है और इस प्रकार उनको

★ **हाशिया-** कोई यह विचार न करे कि वास्तव में यह सब देवता हैं बल्कि यह सब एक ही मालिक के क़ब्ज़े में हैं और इंसान के लाभ के लिए बनाए गए हैं। हमने यहां देवता का शब्द केवल वेद का रूपक बयान किया है क्योंकि इन चारों के लाभ वेद के अनुसार इस प्रकार जारी हैं कि मानो स्वेच्छा से यह लाभ पहुंचा रहे हैं परन्तु यह सब ख़ुदा की सृष्टि हैं और स्वेच्छा से कोई काम नहीं करते और नहीं जानते कि क्या काम करते हैं, मानो ज़िन्दा के हाथ में मुर्दा के समान हैं। यह चार विशेषताओं के नमूने जो आकाश और सूर्य और चंद्रमा और धरती में पाए जाते हैं मनुष्यों को विचार करने के लिए दिए गए हैं ताकि ख़ुदा की विशेषताओं को समझने में यह सहायक सिद्ध हों। उदाहरण स्वरूप आर्य लोग ख़ुदा की रहमानियत से इन्कारी हैं और हालांकि वेद स्वयं सूर्य में रूपक के तौर पर रहमानियत की विशेषता क़रार देता है। यह इसी उद्देश्य से है ताकि मनुष्यों को इस प्रयोजन से ख़ुदा की रहमानियत पर नज़र पड़े। इसी से।

एक शानदार दूल्हा बना देता है। अत: उसकी रहमानियत में क्या सन्देह रहा जो बिना किसी पूर्व कर्म के नंगे गरीबों पर इतनी कृपा और मेहरबानी करता है। इस प्रकार के रूपक वेद में बहुत हैं कि पहले देखने में पद्य मालूम होते हैं और फिर ज़रा विचार करें तो कोई ज्ञान संबंधी चमक भी उनमें दिखाई देती है।

फिर सूर्य के बाद वेद की दृष्टि से चंद्र देवता है कि वह कमज़ोरों के कर्मों को देखकर अपनी सहायता से उनके कर्मों को पूर्णता तक पहुंचाता है अर्थात बसंत के मौसम में वृक्ष फल तो पैदा कर लेते हैं परन्तु यदि चंद्रमा न होता तो यह कर्म उनका अधूरा रह जाता और फलों में ताज़गी और मोटापा और मिठास कदापि न आती। अत: चंद्रमा उनके कर्म को पूर्ण करता है इसलिए इस योग्य हुआ कि लाक्षणिक तौर पर उसको रहीम कहा जाए। अत: वेद उसको रहीम क़रार देता है तो रूपक के तौर पर इसमें कुछ हर्ज नहीं।

फिर चंद्रमा के बाद धरती देवता है जिसने मुसाफिरों को स्थान देने के लिए अपने धरातल को बहुत विस्तृत कर रखा है। हर एक फल वृक्ष पर मुसाफिर की तरह होता है। अंतत: स्थाई निवास उसका धरती पर होता है और धरती अपने मालिकाना अधिकारों से जहां चाहे उसको अपनी पीठ पर जगह देती है और जैसा कि ख़ुदा ने पवित्र क़ुरआन में फ़रमाया -

وَ حَمَلْنٰهُمْ فِی الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ (बनी इस्राईल - 17/71)

कि हमने इंसानों को धरती पर और दरियाओं को स्वयं उठाया। ऐसा ही धरती भी हर एक चीज़ को उठाती है और प्रत्येक पार्थिव वस्तु का स्थाई निवास धरती पर है। वह जिसको चाहे सम्मान के स्थान पर बिठाए और जिसको चाहे अपमान के स्थान पर फेंक दे। अत: इस प्रकार धरती का नाम "मालिक-ए-यौमिद्दीन" हुआ अर्थात रूपक के तौर पर फितरत की किताब के दर्पण में यह चारों ख़ुदा की विशेषताएं नज़र आती हैं। अत: इसी प्रकार ख़ुदा ने चाहा कि अपनी विशेषताओं को लाक्षणिक रंग में भी प्रकट करे ताकि अभिलाषी उदाहरणों को देख कर सूक्ष्माति सूक्ष्म विशेषताओं पर संतोष प्राप्त कर सकें।

अब इस समस्त जांच-पड़ताल से ज्ञात हुआ कि यह चार लाक्षणिक देवता

जो वेद में वर्णित हैं चार लाक्षणिक विशेषताएं अपने अंदर रखते हैं। अत: आकाश लाक्षणिक तौर पर रबूबियत कुबरा (सर्वश्रेष्ठ पालनहार) की विशेषता अपने अंदर रखता है और सूर्य रहमान (बिना मांगे देने वाले) की विशेषता से सुशोभित है और चंद्रमा रहीमियत की विशेषता से हिस्सा दिया गया है और धरती मालिके यौमुद्दीन की विशेषता से युक्त है। और यह चारों विशेषताएं देखने में आती हैं। इन्हीं बातों के कारण मोटी बुद्धि वालों ने वास्तव में उनको देवता घोषित कर दिया है।★ और उनको संसार का रब और उपासना योग्य समझा है। अत: इन लोगों के खण्डन हेतु ख़ुदा तआला अपनी पवित्र पुस्तक पवित्र क़ुरआन में अर्थात सूरह फ़ातिहा में फ़रमाता है-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۲﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿۳﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿۴﴾
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ﴿۵﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۶﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ
اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ ﴿۷﴾ آمين

प्रशंसा, स्तुति और महिमा उस बड़े रब के लिए विशिष्ट है जिसका नाम अल्लाह है जो रब्बुल आलमीन (अर्थात समस्त ब्रह्मांड का पालनहार) है जो रहमान उल आलमीन (अर्थात समस्त संसार पर बिना मांगे देने वाला) है जो रहीम उल आलमीन है (अर्थात समस्त ब्रह्मांड पर दया करने वाला) है और समस्त संसार के हिसाब किताब का मालिक है अर्थात उपासना का यह मर्तबा ख़ुदा के लिए विशिष्ट है कि उसकी रबूबियत और रहमानियत और रहीमियत और

★**हाशिया-** देवता संस्कृत में रब को कहते हैं जो किसी की रबूबियत अर्थात परवरिश करता है। अत: सूर्य स्वयं में एक रब है अर्थात देवता है और चंद्रमा अपने अस्तित्व में एक रब है अर्थात देवता है। इन समस्त रबों अर्थात देवताओं के सिर पर एक बड़ा रब है जो मुदब्बिर बिल इरादा है अर्थात अपनी इच्छा अनुसार सबको चलाता है और वही ख़ुदा है, उसका नाम रब्बुल आलमीन है अर्थात सबका रब और समस्त रबों का भी रब। स्वेच्छा और अधिकार से काम करने वाला वही एक है शेष सब उपकरण हैं जो उसके हाथ से चलते हैं। अत: उपासना और महिमा के योग्य वही है इसीलिए फ़रमाया- अल हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन। इसी से।

प्रतिफल के लिए मालिकीयत एक संसार और एक रंग में सीमित नहीं बल्कि ये विशेषताएं उसकी अनंत रंगों में प्रकट होती हैं कोई उनका अंत नहीं पा सकता। और आसमान और सूर्य आदि की रबूबियत (अर्थात भरण पोषण) एक विशेष रंग और एक विशेष प्रकार में सीमित है और अपने उस सीमित दायरे से आगे नहीं निकलते इसलिए ऐसी चीज़ें उपासना के योग्य नहीं। इसके अतिरिक्त उनके यह कर्म स्वेच्छा से नहीं हैं बल्कि उन सब के पीछे ख़ुदा की ताकत काम कर रही है। फिर फ़रमाया कि हे वह, सब के रब! कि जो अनंत रंगों में अपनी यह विशेषताएं प्रकट करता है, उपासना के योग्य तू ही है और सूर्य तथा चंद्रमा आदि उपासना के योग्य नहीं हैं। इसी प्रकार दूसरे स्थान पर फ़रमाया -

لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَ لَا لِلْقَمَرِ وَ اسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَهُنَّ

(हा मीम सज्दः - 41/38)

अर्थात न सूर्य को सजदा करो न चंद्रमा को बल्कि उस ख़ुदा को सजदा करो जिसने सूर्य, चंद्रमा, आकाश, अग्नि, जल आदि पैदा किए हैं। चंद्रमा और सूर्य का वर्णन करके फिर उसके बाद बहुवचन का शब्द प्रयोग करना इस उद्देश्य से है कि ये समस्त वस्तुएं जिनकी अन्य क़ौमें उपासना करती हैं तुम कदापि उनकी उपासना मत करो। फिर इस सूरह में अर्थात सूरह फ़ातिहा में इस बात का उत्तर है कि जब आकाश और सूर्य और चंद्रमा और अग्नि और जल आदि की उपासना से रोका गया तो फिर अल्लाह की उपासना में कौन सा लाभ है कि जो उन चीज़ों की उपासना में नहीं? तो दुआ के रूप में इसका उत्तर दिया गया कि वह ख़ुदा व्यवहारिक और आंतरिक नेमतें प्रदान करता है और स्वयं को अपने बंदों पर प्रकट करता है। इंसान केवल अपनी बुद्धि से उसको नहीं पहचान सकता बल्कि वह सर्वशक्तिमान अपनी विशेष चमकार से और अपनी ज़बरदस्त शक्तियों तथा चमत्कारों से स्वयं की पहचान करवाता है। वही है कि जब उसका क्रोध और गुस्सा संसार पर भड़कता है तो अपने भक्तों को उस क्रोध से बचा लेता है। वही है जो इंसानों की बुद्धि को तीक्ष्ण करके और उसको अपने पास से आध्यात्म ज्ञान प्रदान करके अंधकार से मुक्ति देता

है और गुमराह होने नहीं देता। यह सूरह फ़ातिहा का संक्षिप्त अर्थ है जिसको पांच समय मुसलमान नमाज़ में पढ़ते हैं बल्कि वास्तव में इसी दुआ का नाम नमाज़ है और जब तक इंसान इस दुआ को दर्दे दिल के साथ ख़ुदा के समक्ष खड़े होकर न पढ़े और उससे वह कठिनाई का निवारण न चाहे जिस कठिनाई के निवारण के लिए यह दुआ सिखाई गई है तब तक उसने नमाज़ नहीं पढ़ी। और उस नमाज़ में तीन चीज़ें सिखलाई गई हैं-

प्रथम ख़ुदा तआला की तौहीद और उसकी विशेषताओं की तौहीद ताकि मनुष्य चंद्रमा, सूर्य तथा दूसरे झूठे देवताओं से मुंह फेर कर केवल इसी सच्चे देवता का हो जाए और उसकी रूह से यह आवाज़ निकले "**इय्याका नाबुदू व इय्याका नस्तईन**" (अल फ़ातिहा-5) अर्थात मैं तेरा ही उपासक हूँ और तुझसे ही सहायता मांगता हूँ। और **दूसरे** यह सिखाया गया कि वह अपनी प्रार्थनाओं में अपने भाइयों को सम्मिलित करे और इस प्रकार मानवजाति का हक अदा कर दे। इसलिए दुआ में "इहदिना" का शब्द आया है जिसके यह अर्थ हैं कि हे हमारे ख़ुदा! हम सब लोगों को अपना सन्मार्ग दिखा, यह अर्थ नहीं कि 'मुझको' अपना सन्मार्ग दिखा। अत: इस प्रकार की दुआ से जो बहुवचन के रूप में की गई है मानवजाति का हक़ भी अदा हो जाता है और **तीसरी** बात इस दुआ में यह सिखाना अभीष्ट है कि हमारी हालत को केवल शुष्कपन तक सीमित न रख अपितु हमें वह आध्यात्मिक बरकतें प्रदान कर जो तूने पहले नेक लोगों को दी हैं। और फिर कहा कि यह दुआ भी करो कि हमें उन लोगों के मार्गों से बचा जिनको आध्यात्मिक दृष्टि प्रदान नहीं हुई फलस्वरूप उन्होंने ऐसे काम किए जिनसे इस संसार में उनको दण्ड मिला और या इस संसार में दण्ड से तो बच गए परन्तु गुमराही की मौत मरे और परलोक के दण्ड में गिरफ्तार हुए। दुआ का सारांश यह है कि जिसको ख़ुदा आध्यात्मिक बरकतें प्रदान न करे और देखने वाले नेत्र न दे और दिल को विश्वास और अध्यात्मज्ञान से न भरे तो अंतत: वह नष्ट हो जाता है और फिर उसके अहंकार और उसके उपद्रवों के कारण इसी संसार में उस पर तबाही आती है क्योंकि वह पवित्र लोगों को गालियां देता है

और कुत्तों की तरह जीभ निकालता है। अत: वह नष्ट किया जाता है जैसा कि यहूदी अपने उपद्रव और अहंकारों के कारण नष्ट किए गए और बार-बार ताऊन अर्थात प्लेग का अज़ाब उन पर उतरा जिसने उनको तबाह कर दिया। और या अगर वह संसार में अहंकार और उपद्रव न करे और गालियां और शरारत के षड्यंत्र में सम्मिलित न हो तो उसके दण्ड का स्थान परलोक है जब इस संसार से वह चला जाएगा।

अब सारांश यह है कि जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं यह संभव है कि **ऋग्वेद** में इंद्र और सूर्य और चंद्रमा और अग्नि आदि देवताओं से प्रार्थनाएं की गई हैं उस से अभिप्राय वह परम शक्ति 'ख़ुदा तआला' हो जो उनके पीछे काम कर रही है, जो समस्त मिजाज़ी देवताओं का देवता है। क्योंकि हम पवित्र क़ुरआन में कुछ स्थानों पर इस बात की ओर भी संकेत पाते हैं कि इस संसार में जितनी भिन्न-भिन्न वस्तुएं संसार की व्यवस्था को स्थापित रखने के लिए कार्य कर रही हैं वे वास्तव में ख़ुदा तआला के नाम और विशेषताओं के नमूने हैं जो मिजाज़ी रंग में प्रकट हो रहे हैं। मानो आकाशीय पिंड समूह और पंच महाभूत एक किताब के पृष्ठ हैं जिनसे हमें ख़ुदा तआला की विशेषताओं के बारे में अध्यात्म ज्ञान का पाठ मिलता है और ख़ुदा के स्वभाव का पता लगता है। उदाहरण स्वरूप सूर्य 4 फसलों में चार परिवर्तन दिखाता है।

पहला परिवर्तन मौसम-ए-ख़रीफ़ जो कि मौसम-ए-बहार के विपरीत है। इस परिवर्तन से वह वृक्षों की चमक-दमक को वीरान करना आरंभ करता है। अधिकतर वृक्षों के पत्ते गिर जाते हैं और उनके अंदर का जीवनदायी तत्व जो ताज़गी प्रदान करने वाला होता है सूख जाता है। मनुष्यों के शरीर पर भी इस मौसम का यही प्रभाव होता है कि शुष्क और वात संबंधी रोग पैदा होते हैं। अत: इसी प्रकार ख़ुदा की एक **चमकार** भी मौसम-ए-ख़रीफ़ के **समान** है कि एक ज़माना इंसानों पर आता है कि उनके दिलों पर सांसारिकता छा जाती है और भाव-विभोरता तथा ख़ुदा की याद का जीवनदायी तत्व जो आध्यात्मिक उन्नति प्रदान करता है वह कम होना आरंभ हो जाता है यद्यपि खुले-खुले गुनाह और

पाप का **दौर** अभी नहीं आता परन्तु ख़ुदा की **मोहब्बत** का जोश जाता रहता है और दिलों पर मायूसी और मुर्दापन और ठहराव और सांसारिकता हावी हो जाती है और आनंद तथा ख़ुदा की मोहब्बत शेष नहीं रहती। और यह ज़माना ऐसा होता है कि मानो उसको **कलयुग** की पृष्ठभूमि कहना चाहिए।

फिर **दूसरा** ज़माना जो सूर्य के द्वारा ख़रीफ़ के बाद प्रकट होता है वह **सर्दी का मौसम** है जबकि सूर्य अपनी दूरी के कारण कड़ाके की ठंड पैदा करता है। अत: इसी प्रकार उस वास्तविक सूर्य की जिसका नाम ख़ुदा है एक चमकार है जो जाड़े के समान होती है। यह उस समय होता है जब ख़ुदा की मोहब्बत दिलों से पूरी तरह ठंडी हो जाती है और मानवीय स्वभाव उसको छोड़ देते हैं और बजाय इसके प्रत्येक व्यक्ति भौतिक और तामसिक मार्ग को पसंद करता है और शराब खोरी, जुआ, व्यभिचार, झूठ, फरेब, धोखा, गाली-गलौज अहंकार, सांसारिकता, चोरी, ख़यानत, रक्तपात, हंसी ठठ्ठा और प्रत्येक प्रकार का पाप और हर एक प्रकार का गंदा काम संसार में फैल जाता है और समस्त प्रतिभाएं ज़बान की चालाकियों से आज़माई जाती हैं। और जो व्यक्ति ऐसे मार्गों से अपनी चालाकियां दिखाता है वह बड़ा योग्य समझा जाता है और बड़े सम्मान से देखा जाता है और अगर मर भी जाए तो उसकी यादगारें स्थापित होती हैं। ऐसा ही धरती सुनसान पड़ी हुई होती है, न होने के समान कोई धरती पर होता है जो पवित्र हृदय और पवित्र ज़बान और पवित्र विचार हो तथा ख़ुदा से डरने वाला और अध्यात्मज्ञान के पवित्र जल से तृप्त होने वाला हो। यह मौसम ऐसा है मानो उसको कलयुग कह सकते हैं क्योंकि उसमें नेकी का अकाल और बुराई की विजय होती है और धरती पाप और गुनाह से भर जाती है।

फिर **दूसरा** ज़माना जो सूर्य अपने परिवर्तन से जाड़े के बाद प्रकट करता है वह **रबीअ** का ज़माना है। यह वह ज़माना है जबकि मुर्दा पौधे पुन: **जीवित** किए जाते हैं और वनस्पति का सूखा हुआ खून पुन: पैदा किया जाता है। अत: इसी प्रकार वह जो वास्तविक सूर्य है अपना एक भारी चमकार जो मौसम-ए-बहार को दिखाता है, संसार पर प्रकट करता है। तब धरती के जीवित करने के लिए एक नया

जल आकाश से उतरता है और वह जल इस प्रकार उतरता है कि ख़ुदा तआला अपने बंदों में से किसी का चयन करके उसके दिल को उस पानी का **अब्रे बहार** बनाता है। तब वह पानी उस बादल में से ख़ुदा तआला के आदेशानुसार निकलता रहता है और सूखे हुए पौधों पर पड़ता है जिनको ख़रीफ़ की तेज़ हवा ने तबाह और ख़राब कर दिया था और उनमें ख़ुदा की पहचान के नए पत्ते पैदा करता है और विभिन्न प्रकार के मुहब्बत के फूल उनमें निकलते हैं और अंततः सम्मानित शाखाओं को सत्कर्मों के फलों से भर देता है।

फिर **तीसरा** ज़माना जो बहार के ज़माने के बाद सूर्य देवता प्रकट करता है वह **गर्मी** के मौसम का ज़माना कहलाता है और गर्मी के मौसम में सूर्य उन फलों को पका देता है जो बहार के मौसम में अभी कच्चे थे। अतः इसी प्रकार ख़ुदा के चमकार के लिए भी एक गर्मी का मौसम आता है। यह वह मौसम होता है जबकि बहार के दिनों से उन्नति करके सम्मानित पवित्र स्वभाव ख़ुदा तआला की याद में और उसकी मोहब्बत में गर्म होते हैं और स्वभावों में ख़ुदा की याद के लिए जोश पैदा होता है और उन्नतियाँ चरम को पहुंचती हैं और यह ज़माना पूर्ण रूप से **सतयुग** का ज़माना होता है। तब अधिकतर लोग वास्तव में ख़ुदा तआला की इच्छा के अनुसार चलते हैं और उसकी इच्छाओं को अपनी इच्छाएं बनाते हैं।

अब स्पष्ट है कि सूर्य के इन चार परिवर्तनों के मुक़ाबले पर ख़ुदा तआला के भी चार परिवर्तन पाए जाते हैं। अतः इस में **शक** की गुंजाइश नहीं कि जो कुछ आकाशीय पिंड समूहों और पंच महाभूतों में आण्विक तथा नश्वर **विशेषताएं** पाई जाती हैं वे आध्यात्मिक और अनन्त रूप से ख़ुदा तआला में **मौजूद** हैं। और ख़ुदा तआला ने यह भी हम पर स्पष्ट कर दिया है कि सूर्य आदि **अपने आप** कुछ चीज़ नहीं हैं यह उसी की **ज़बरदस्त शक्ति** है जो अदृश्य रूप से हर एक काम कर रही हैं। वही है जो चंद्रमा को अपना **पर्दा** बनाकर अंधेरी रातों को प्रकाश प्रदान करता है जैसा कि वह अंधकार में डूबे दिलों में स्वयं प्रवेश कर उनको प्रकाशमान कर देता है और स्वयं मनुष्य के अंदर बोलता है। **वही है** जो अपनी शक्तियों पर सूर्य का पर्दा डालकर दिन को एक महान प्रकाश का द्योतक बना देता है और विभिन्न

फसलों में अपने विभिन्न काम प्रकट करता है। उसी की शक्ति आसमान से बरसती है जो '**वर्षा**' कहलाती है और सूखी धरती को हरा-भरा कर देती है और प्यासों को **तृप्त** कर देती है। **उसी** की शक्ति आग बनकर जलाती है और **हवा** बनकर जीवन को ताज़ा करती है और फूलों को खिलाती है और बादलों को उठाती है और आवाज़ को कानों तक पहुंचाती है। यह उसी की शक्ति है कि धरती का रूप धारण करके मानवजाति और पशुओं को अपनी पीठ पर उठा रही है परन्तु क्या **ये चीज़ें ख़ुदा हैं?** नहीं, बल्कि **सृष्टि** हैं परन्तु उनके पिण्ड समूह में ख़ुदा की शक्ति ऐसे रूप से प्रवेश कर गई है कि जैसे क़लम के साथ हाथ जुड़ा हुआ है। यद्यपि हम कह सकते हैं कि कलम लिखती है परन्तु क़लम नहीं लिखती बल्कि हाथ लिखता है या उदाहरणतया एक लोहे का टुकड़ा जो अग्नि में पड़कर अग्नि का रूप धारण कर लेता है हम कह सकते हैं कि वह जलाता है और रोशनी भी देता है परन्तु वास्तव में वह विशेषताएं उसकी नहीं बल्कि अग्नि की हैं। इसी प्रकार अन्वेषण की दृष्टि से यह भी सत्य है कि जितने आकाशीय पिंड समूह तथा भौतिक तत्व बल्कि लोक-परलोक का कण-कण अवलोकित तथा अनुभूत नज़र आता है ये सब अपने विशेष गुणों के कारण जो उन में पाए जाते हैं, ख़ुदा के नाम हैं और ख़ुदा की विशेषताएं हैं और ख़ुदा की शक्ति है जो उनके अंदर रहस्यमयी रूप से काम करती है और यह सब आरम्भ में उसी के शब्द थे जिनको उसकी क़ुदरत ने विभिन्न रूपों में प्रकट कर दिया। एक अज्ञानी यह प्रश्न करेगा कि ख़ुदा के शब्द कैसे शारीरिक रूप धारण कर गए और क्या ख़ुदा उनके अलग अलग होने से कम हो गया? परन्तु उसको सोचना चाहिए कि सूर्य से जो एक **उत्तल लेंस**★ अग्नि प्राप्त करता है वह सूर्य में से अग्नि को कम नहीं करता। ऐसा ही जो कुछ चांद के

★**हाशिया**- आर्य साहिबों की यह आस्था है कि परमेश्वर ने धरती तथा आकाश की किसी वस्तु को पैदा नहीं किया केवल उपस्थित चीज़ों को जो प्राचीन थीं परस्पर जोड़ा है जैसा कि जीव जो पुरातन तथा अनादि है और परमाणु या प्रकृति जो अणुओं के छोटे-छोटे भाग हैं और अनादि हैं। परंतु हम ऐसी आस्थाओं के कारण आर्य साहिबों पर इतना गुस्सा नहीं करते जितना हमें उनके दुर्भाग्य पर दया आती है क्योंकि जबकि उन्होंने ख़ुदा तआला की अविष्कार

प्रभाव से फलों में मोटापा आता है इससे चंद्रमा में कोई कमज़ोरी नहीं आती। यही ख़ुदा की मारिफ़त का एक भेद तथा समस्त आध्यात्मिक व्यवस्था का केंद्र बिन्दु है कि ख़ुदा के आदेशों से ही संसार का जन्म हुआ है जबकि यह बात तय हो चुकी है और स्वयं पवित्र क़ुरआन ने यह ज्ञान हमें प्रदान किया तो फिर मेरे निकट संभव है कि वेद ने जो कुछ अग्नि की प्रशंसा की या वायु की प्रशंसा की या सूर्य

शेष हाशिया- की शक्ति को नहीं पहचाना★ तो और क्या पहचाना? और कौन सा सच्चा और पूर्ण ज्ञान उनको प्राप्त हुआ जिसने इतने बड़े-बड़े आकाशीय पिंड समूह आसमान में पैदा किए जैसे सूर्य और चंद्र और इतने सितारे पैदा किए जिनका अब तक मनुष्यों को पता नहीं लगा। क्या वह पैदा करने में किसी माद्दे का मोहताज था? जब मैं उन बड़े-बड़े आकाशीय पिंड समूह को देखता हूं और उनकी महानता और विचित्रता पर विचार करता हूं और देखता हूं कि केवल ख़ुदा के इरादे से और उसके इशारे से ही सब कुछ हो गया तो मेरी रूह सहसा बोल उठती है कि हे हमारे सर्वशक्तिमान ख़ुदा! तू क्या ही प्रतिष्ठावान, सर्वशक्तिमान है। तेरे काम कैसे विचित्र और बुद्धि से परे हैं। नादान है वह जो तेरी शक्तियों से इन्कार करे और मूर्ख है वह जो तेरे बारे में यह ऐतराज़ करे कि उसने इन वस्तुओं को किस माद्दे से बनाया। अफसोस कि आर्य साहिबान यह विचार नहीं करते कि अगर ख़ुदा को सृष्टि की रचना करने में मानवीय माध्यमों की आवश्यकता है तो फिर वह जैसे बिना माद्दे के कुछ बना नहीं सकता वैसे ही वह बिना किसी पर्याप्त समय के कुछ बना नहीं सकता। अत: इस अवस्था में जैसा कि हम एक दीवार के बनाने में आनुमान लगाते हैं कि एक राजगीर इतने दिनों में उसको तैयार कर सकता है उससे पहले नहीं, ऐसा ही हमें यह अनुमान करना पड़ेगा कि ख़ुदा को उदाहरण स्वरूप सूर्य या चंद्रमा बनाने में इतने समय की ज़रूर आवश्यकता रही होगी और उससे पहले उसके लिए असंभव

★**हाशिये का हाशिया -** सौन्दर्य अथवा उपकार के दर्शन किए बिना कोई मोहब्बत पैदा नहीं हो सकती और कोई गुनाह ख़ुदा की मोहब्बत तथा उसके नाराज़ होने के भय के बिना दूर नहीं हो सकता। मोहब्बत गुनाह को ऐसा जलाती है जैसा कि अग्नि मैल को। जिस सोने को प्रतिदिन अग्नि में डालोगे क्या उस पर कोई मैल रह सकती है? परंतु वह व्यक्ति जो न ख़ुदा के हुस्न का समर्थक है अर्थात उसको सर्वशक्तिमान नहीं जानता और न ख़ुदा के उपकार का मानने वाला है अर्थात यह विश्वास नहीं करता कि उसकी रूह जो उसके अंदर बोल रही है वह ख़ुदा की ओर से है, वह ख़ाक अपने परमेश्वर से मोहब्बत करेगा। इसी से।

की महिमा और स्तुति की उसका भी यही उद्देश्य होगा कि **ईश्वरीय शक्ति** ऐसे घनिष्ट संबंध से उनके अंदर काम कर रही है कि वास्तव में उसके मुक़ाबले पर वे **समस्त आकाशीय पिंड समूह छिलके** के तौर पर हैं और वह मग़ज़ (पोस्त) है और समस्त विशेषताएं उसी की ओर लौटती हैं इसलिए उसी का नाम अग्नि रखना चाहिए और उसी का नाम जल और उसी का नाम वायु क्योंकि उनके कर्म,

शेष हाशिया- होगा कि कुछ बना सके। परंतु स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला के लिए यह सीमाएं निर्धारित करना और किसी कार्य के लिए किसी विशेष समयसीमा के अनुमान की और किसी काम के लिए उसको मोहताज समझना कुफ्र है और यद्यपि वह अपनी इच्छा अनुसार कोई काम जल्दी करे या देर से परंतु वह समय का मोहताज नहीं। अत: इस अवस्था में माद्दा का मोहताज कैसे हो गया? मानवीय कमज़ोरी के लिए जो मन्तिक (तर्कशास्त्र) बनाई गई है उस मंतिक से इसके बारे में भी कोई परिणाम निकालना इससे अधिक मूर्खता क्या होगी? मैं कदापि विश्वास नहीं रखता कि वेद की यह शिक्षा हो बल्कि विशेष रूप से पंडित दयानन्द के पेट से यह बात निकली है। पंडित साहिब ने जब देखा कि बिना रोटी खाने के वह जी नहीं सकते और बिना पानी के उनकी प्यास नहीं बुझती और बिना परिश्रम और दिमाग लगाए वेद न पढ़ सके तो उन्होंने समझ लिया कि जैसा वह एक वस्तु के प्राप्त करने के लिए माद्दे के मोहताज हैं, ऐसा ही उनका परमेश्वर भी माद्दे का मोहताज है। मनुष्य का नियम है कि वह दूसरे के कामों को स्वयं पर अनुमान कर लेता है। अत: बाजारी औरतें कदापि समझ नहीं सकती कि दुनिया में सच्चरित्र और पवित्र हृदय स्त्रियां भी होती हैं। जिसको आंखें मिली हैं वह आंखों के बाद स्वयं को अंधा नहीं कर सकता और जिसको कोई ज्ञान और मारिफ़त का कुछ भाग मिला हो वह फिर अज्ञानता को पसंद नहीं कर सकता। हमने सैंकड़ों मामले अपनी आंखों से ऐसे विलक्षण देखे हैं कि अगर हम उसके बाद गवाही न दें कि वास्तव में हमारा ख़ुदा सर्वशक्तिमान है और किसी माद्दे का मोहताज नहीं तो हम अत्यंत पापी होंगे। संभवत: 14 वर्ष के लगभग हो गए या इससे अधिक या कम कि मैंने कश्फ़ (तंद्रावस्था) में देखा था कि एक कागज़ पर मैंने कुछ बातें लिखी हैं इस उद्देश्य से कि ऐसा-ऐसा होना चाहिए और मैंने देखा कि मैंने वह तहरीर अपने सर्वशक्तिमान ख़ुदा के समक्ष प्रस्तुत की कि इस पर हस्ताक्षर कर दे कि ऐसा ही हो जाए। तब मेरे ख़ुदा ने एक क़लम के द्वारा एक लाल स्याही से जो खून के समान लाल थी और मैं समझता था कि वह खून ही है, उस पर अपने हस्ताक्षर कर दिए और हस्ताक्षर

उनके कर्म नहीं बल्कि यह सब उस (ख़ुदा) के कर्म हैं और उनकी शक्तियां उनकी शक्तियां नहीं बल्कि यह सब उस (ख़ुदा) की शक्तियां हैं जैसा कि सूरह फ़ातिहा की इस आयत में कि- अल्हम्दुलिल्लाह रब्बिल आलमीन इसी की ओर संकेत है अर्थात विभिन्न रंगों और शक्लों और जहानों में जो सांसारिक प्रबंध स्थापित रखने हेतु धरती और आकाश की चीज़ें काम कर रही हैं ये वे नहीं काम करतीं बल्कि ख़ुदाई शक्ति उनके नीचे काम कर रही है जैसा कि दूसरी आयत में भी फ़रमाया-

صَرۡحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنۡ قَوَارِيۡرَ ؕ (अन्नमल - 27/45)

अर्थात संसार एक **शीश महल** है जिसके शीशों के नीचे ज़ोर से पानी बह रहा है और मूर्ख समझता है कि यही शीशे पानी हैं हालांकि पानी उनके नीचे है। और जैसा कि पवित्र क़ुरआन में एक तीसरी जगह भी फ़रमाया-

وَ حَمَلۡنٰهُمۡ فِى الۡبَرِّ وَ الۡبَحۡرِ (बनी इस्त्राईल- 17/71)

अर्थात यह विचार मत करो कि धरती तुम्हें उठाती है या कश्तियां दरिया में तुम्हें उठाती हैं बल्कि हम ख़ुद तुम्हें उठा रहे हैं।

शेष हाशिया- से पहले क़लम को छिड़क दिया और वे खून के छींटे मुझ पर पड़े। तब भावुकता तथा प्रेम के शौक से मेरी आंख खुल गई कि ख़ुदा ने मेरी इच्छा पूरी कर दी और मेरी तहरीर पर अविलंब हस्ताक्षर कर दिए। उस समय मेरे पास एक दोस्त मौजूद थे अर्थात मियां अब्दुल्लाह सनौरी। उसने शोर मचाया कि यह लाल कतरे कहां से गिरे और जैसा कि कश्फ़ (तंद्रावस्था) में देखा था वास्तव में व्यवहारिक रूप से भी वह लाल बूँदें गीली-गीली मेरे कुर्ते पर पड़ी थी और कुछ अब्दुल्ला पर भी। अब बताओ कि यह तो पूरा कश्फ़ी मामला था ज़ाहिर में उन खून की बून्दों का वजूद कैसे पैदा हो गया और किस माद्दे से वह खून पैदा हुआ। आर्य साहिबान सिवाए इसके क्या उत्तर दे सकते हैं कि यह किस्सा झूठा है और स्वयं गढ़ लिया है। और यही किस्सा मैंने सुरमा चश्म आर्य में लिखा है क्योंकि उन्हीं दिनों में वह पुस्तक प्रकाशित हुई थी और चूंकि बिल्कुल आर्य साहिबान के मुकाबले पर यह चमत्कार प्रकट हुआ था इसलिए मेरे विचार में यह पंडित लेखराम के मारे जाने की ओर संकेत था और ताऊन (प्लेग) के फैलने की ओर भी संकेत था। इसी प्रकार सैंकड़ों निशान (चमत्कार) हैं जो ऐसी कुदरतों पर दलालत करते हैं जो बिना किसी माद्दा के प्रकटन में आईं। जिसने यह कुदरतें नहीं देखी उसने अपने ख़ुदा का क्या देखा। इसी से।

सारांश यह कि हम उन अर्थों को जो ऊपर वर्णन हुए वेद के बारे में स्वीकार कर सकते हैं और हम विचार कर सकते हैं कि जैसा कि पवित्र क़ुरआन ने हमारा मार्गदर्शन किया है, वेद का भी यही उद्देश्य है परन्तु दो बातों का सिद्ध होना आवश्यक है (1) प्रथम यह कि वेद का भी यही धर्म हो जो क़ुरआन ने प्रकट किया है कि यह समस्त वस्तुएं क्या ग्रह नक्षत्र और क्या धरती के जीव और क्या कण-कण सृष्टि का ख़ुदा के हाथ से निकला है क्योंकि यदि ऐसा स्वीकार न करें तो फिर उन चीज़ों की विशेषताएं परमेश्वर की विशेषताएं नहीं हो सकतीं और उन चीज़ों के गुण परमेश्वर के गुण नहीं कहला सकते और उन चीज़ों की शक्तियां परमेश्वर की शक्तियां नहीं कहला सकतीं। परन्तु अफसोस कि आर्य समाजी सिद्धांत के अनुसार कण अर्थात परमाणु और जीव अर्थात रूह यह सब अनादि और स्वयंभू हैं। इसलिए उनके गुण और विशेषताएं और शक्तियां भी स्वयंभू और अनादि हैं परमेश्वर को उन में कुछ भी हस्तक्षेप नहीं। अत: यदि वेद का यही धर्म है तो स्वीकार करना पड़ता है कि वेद ने अग्नि की विशेषताएं वर्णन करके अग्नि पूजा सिखाई है और सूर्य की स्तुति और महिमा वर्णन करके सूर्य की उपासना सिखाई है। हां यदि इन समस्त वस्तुओं को परमेश्वर की पैदा की हुई मान लें और उनकी शक्तियों को उस (ख़ुदा) की शक्तियां मान लें तो फिर ऐतराज़ शेष नहीं रहता। और याद रहे कि उसके साथ दूसरी शर्त भी है और वह यह है कि वेद में उन सैंकड़ों श्रुतियों के मुक़ाबले पर जिन में सूर्य तथा अग्नि आदि की स्तुति और महिमा उपस्थित है 50 या 60 या 70 ऐसी श्रुतियां भी पाई जाएं जिनका यह अर्थ हो कि यह चीज़ें कदापि उपासना के योग्य नहीं और न उन से मुरादें मांग सकते हैं। इन दो बातों के सिद्ध हो जाने से वेद इस योग्य होगा कि इस आरोप से उसको बरी कर दिया जाए और वह 'फर्द क़रार दादे जुर्म' उस पर से उठा ली जाए जो बड़े-बड़े बुद्धिजीवी उस पर लगा रहे हैं। और यदि ये बातें सिद्ध नहीं तो आरोप सिद्ध है।

फिर एक अन्य ऐतराज़ आर्य साहिबों के सिद्धांत पर है और हम आशा

करते हैं कि वे उस की ओर भी ध्यान देंगे और वह यह है कि यह घोषित किया गया है कि यद्यपि संसार एक अनादि और अनन्त श्रंखला है जो कभी समाप्त नहीं होता परन्तु परमेश्वर ने हमेशा से यही विधान निर्धारित कर रखा है कि वह हमेशा संसार के आरम्भ में ईश्वरीय पुस्तक संस्कृत भाषा में तथा आर्यवर्त में भेजता रहता है। यह कथन तीन प्रकार से ग़लत है (1) पहला ख़ुदा तआला की सामान्य रहमत (दया) के विपरीत है अर्थात जिस अवस्था में संसार में विभिन्न शहर और विभिन्न भाषाएं पाई जाती हैं और एक देश के निवासी दूसरी क़ौम की भाषा से अपरिचित हैं बल्कि इस युग से पहले तो यह हालत रही है कि एक देश दूसरे देश के अस्तित्व से भी अनभिज्ञ था और आर्यवर्त में यह विचार था कि हिमालय पर्वत के परे कोई आबादी नहीं तो इस हालत में जबकि संसार की भिन्नता की यह अवस्था थी, हमेशा और करोड़ों वर्षों से ईश्वरीय पुस्तक को एक ही देश तक सीमित रखना यह ख़ुदा की उस रहमत के विपरीत है जो उसके रब्बुल आलमीन होने की शान को शोभा देता है। इसके विपरीत जो पवित्र क़ुरआन ने फ़रमाया है वह अत्यंत बुद्धिसंगत और न्याय संगत है और वह यह है कि वह फ़रमाता है-

وَ اِنۡ مِّنۡ اُمَّۃٍ اِلَّا خَلَا فِیۡھَا نَذِیۡرٌ ؕ (सूरः फातिर - 35/25)

अर्थात कोई बस्ती और कोई आबाद देश नहीं जिसमें अवतार नहीं भेजा गया। और फिर फ़रमाता है-

یَتۡلُوۡا صُحُفًا مُّطَہَّرَۃً ۙ فِیۡھَا کُتُبٌ قَیِّمَۃٌ (सूरः अल बय्यिना 98/3, 4)

अर्थात यह पुस्तक जो पवित्र क़ुरआन है यह उन समस्त पुस्तकों का संग्रह है जो पहले भेजी गई थीं। इस आयत से अभिप्राय यह है कि ख़ुदा ने पहले भिन्न-भिन्न रूप से हर एक क़ौम के लिए अलग अलग धर्मविधान भेजा और फिर चाहा कि जैसा कि ख़ुदा एक है वे (समस्त इन्सान) भी एक हो जाएं तब सबको इकट्ठा करने के लिए क़ुरआन को भेजा और सूचना दी कि एक युग आने वाला है कि ख़ुदा समस्त क़ौमों को एक क़ौम बना देगा और समस्त देशों को एक देश बना देगा और समस्त भाषाओं को एक भाषा बना देगा। अतः

हम देखते हैं कि दिन प्रतिदिन दुनिया इस सूरत के निकट आती जाती है और विभिन्न देशों के संबंध परस्पर बढ़ते जाते हैं, भ्रमण के लिए माध्यम उपलब्ध हो गए हैं जो पहले नहीं थे, विचारों के आदान-प्रदान के लिए बड़ी-बड़ी सुविधाएं हो गई हैं। एक क़ौम दूसरी क़ौम में ऐसी धंस गई है कि मानो वे दोनों एक होना चाहती हैं। बड़ी और कठिन यात्राएं बहुत सरल और आसान हो गई हैं। अब रूस की ओर से एक रेल तैयार हो रही है जो चालीस दिन में समस्त संसार का एक चक्कर पूरा कर लेगी। और संदेश पहुंचाने के विलक्षण माध्यम पैदा हो गए हैं। इससे पाया जाता है कि ख़ुदा तआला इन विभिन्न क़ौमों को जो किसी समय एक थीं फिर एक ही बनाना चाहता है ताकि जन्म का चक्र पूरा हो जाए और ताकि एक ही ख़ुदा हो और एक ही नबी हो और एक ही धर्म हो। यह बात अत्यंत बुद्धिसंगत है कि अलग होने के ज़माने में ख़ुदा ने हर एक देश में भिन्न-भिन्न नबी भेजे और किसी देश से पक्षपात नहीं किया परन्तु अंतिम युग में जब समस्त देशों में एक क़ौम बनने के सामर्थ्य पैदा हो गए तब समस्त हिदायतों को इकट्ठा करके एक ऐसी भाषा में जमा कर दिया जो समस्त भाषाओं की जननी है अर्थात अरबी भाषा। क्या कोई कांशंस इस बात को स्वीकार कर सकता है कि संस्कृत भाषा और आर्यवर्त में तो करोड़ों बार वेद ने, जो आर्यों के कथनानुसार परमेश्वर की वाणी है, जन्म लिया परन्तु किसी और भाषा में तथा किसी और देश में एक बार भी उसका प्रादुर्भाव न हुआ। यदि आवागमन का विषय कुछ वास्तविकता है तो उससे ही सबूत देना चाहिए कि परमेश्वर ने इस देश के लोगों से इतना प्यार क्यों किया और दूसरे देशों से क्यों ऐसा परायों जैसा व्यवहार किया। कौन से अच्छे और पवित्र कर्म यह देश हमेशा करता रहा है जिनके कारण वेद का सम्मान सर्वदा उसको दिया जाता है। क्या परमेश्वर जानता है या नहीं कि दूसरे देश भी इस बात के मोहताज हैं कि कभी उनकी भाषा में भी ख़ुदा की वाणी अवतरित हो? और उनमें भी ख़ुदा की वह्यी पाने वाले पैदा हों और अगर जानता है तो फिर क्या कारण कि हमेशा आर्यवर्त में ही वेद आता है और संस्कृत भाषा में ही अवतरित होता

है? बताना तो चाहिए कि यह पक्षपात क्यों है और अन्य देशों का क्या दोष है जिनके भाग्य में यह नेमत नहीं और हमेशा के लिए वे इस गर्व से अभागे हैं कि उनके देश में और उनकी भाषा में ख़ुदा की पुस्तक अवतरित हो।

फिर **(2) दूसरा** पहलू ऐतराज़ का यह है कि अगर असंभव को संभव मानकर यह भी विचार किया जाए कि वेद समस्त संसार के लिए आया है और ख़ुदा तआला पर यह पक्षपात वैध रखा जाए कि उसने अन्य देशों और क़ौमों को अपनी वाणी से हमेशा के लिए वंचित रखा तो इस अवस्था में इतना तो चाहिए था कि परमेश्वर वह भाषा अपनाता जो समस्त भाषाओं की जननी हो और जीवित भाषा हो न कि संस्कृत जो कि किसी प्रकार भी समस्त भाषाओं की जननी नहीं कहला सकती और न वह जीवित भाषा है बल्कि एक अवधि हुई कि मर गई और किसी देश में वह बोली नहीं जाती। हां समस्त भाषाओं की जननी होने का यह दर्जा अरबी भाषा को प्राप्त है और वही आज इन समस्त भाषाओं में से जिनमें ईश्वरीय पुस्तकें वर्णन की जाती हैं, ज़िन्दा भाषा है और हमने बड़ी तहकीक से समस्त भाषाओं का मुक़ाबला करके बहुत से ठोस तर्कों के साथ सिद्ध किया है कि वास्तव में अरबी भाषा ही समस्त भाषाओं की जननी है। इसलिए वही भाषा इस योग्य है कि समस्त क़ौमों को उस भाषा में संबोधित किया जाए और हमने अरबी भाषा के 'समस्त भाषाओं की जननी' होने के बारे में एक पुस्तक लिखी है और जो व्यक्ति उस पुस्तक को पढ़ेगा मैं विचार नहीं करता कि सिवाए स्वीकार करने के किसी प्रकार भी उसको बचने का मार्ग मिल सके क्योंकि उसमें उत्तम श्रेणी के अन्वेषण से और हज़ारों मुफरदात के मुक़ाबले से और साथ ही उस ज्ञान संबंधी ख़ज़ाने से जो अरबी मुफरादात में पाया जाता है अरबी का समस्त भाषाओं की जननी होना सिद्ध कर दिया है।

(3) तीसरा कारण आर्य साहिबों के इस सिद्धांत के ग़लत होने का, कि वेद पर परमेश्वर की मुहर लग चुकी है और उसके बिना ख़ुदा की वह्यी का द्वार बंद है, हमारा व्यक्तिगत अनुभव हमारे हाथ में है कि लगभग प्रतिदिन ख़ुदा तआला हमसे बात करता है और अपने परोक्ष के भेद तथा अध्यात्म ज्ञान से

सूचित करता है। अत: यदि ये बेकार की बातें वास्तव में वेद में है कि भविष्य में वह्यी या इल्हाम का द्वार बंद हो गया है तो बाद इसके हमें उसके झूठा होने के लिए किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं क्योंकि अनुभव के विपरीत कहने वाला निश्चित रूप से अत्यंत झूठा होता है। जिस महान वह्यी से हमें ख़ुदा ने गौरवान्वित किया है हम वेद में उसका नमूना नहीं देखते। यह ईशवाणी विलक्षण बातों और परोक्ष के ज्ञान से भरी है जैसा कि समुद्र पानी से, और अधिकतर अरबी में जो नबूवत के कलाम की आधारशिला है, उतरती है और कभी उर्दू में और कभी फारसी में और कभी-कभी अंग्रेज़ी भाषा में भी हुआ है। और यदि आर्य साहिबान यह कहें कि कौन सा निशान है जिस से ज्ञात हो कि यह ख़ुदा की वाणी है? तो मैं कहता हूँ कि क्या पण्डित लेखराम के बारे में जो भविष्यवाणी थी जिसमें उसके मारे जाने का दिन और तिथि भी दर्ज थी क्या वह आर्य साहिबों को भूल गई? क्या वह एक ही भविष्यवाणी आर्य साहिबों के लिए पर्याप्त नहीं थी? ऐसी भविष्यवाणियां एक लाख से भी अधिक हैं और एक फौज गवाहों की उनके साथ है जिनमें से कई सम्माननीय आर्य साहिबान भी हैं। अत: इससे अधिक हम ख़ुदा की वाणी का और क्या प्रमाण दे सकते हैं बल्कि हम इसी स्थान के कुछ आर्य साहिबों को बल्कि कई लाख और आर्य साहिबों को भी गवाही के लिए प्रस्तुत करते हैं।

और यहाँ इस बात का वर्णन करना भी अनुचित न होगा कि कुछ अज्ञानी एक लाख भविष्यवाणियों के मुक़ाबले पर एक-दो भविष्यवाणियों का वर्णन करके कहते हैं कि वह पूरी नहीं हुईं परन्तु यह स्वयं उनकी समझ का दोष है बल्कि कोई भी ऐसी भविष्यवाणी नहीं कि वह अपने शब्दों के अनुसार पूरी नहीं हो चुकी या उसमें से कोई हिस्सा पूरा नहीं हो चुका, जो इस बात पर गवाह है कि दूसरा हिस्सा भी किसी समय पूरा होगा। सच्ची गवाही को छुपाना और झूठी हुज्जतें प्रस्तुत करना उन लोगों का काम नहीं जो ख़ुदा से डरते हैं। विशेष रूप से आर्य साहिबों को वह निशान नहीं भूलना चाहिए जो ख़ुदा ने उनको अपने ज़बरदस्त हाथ से दिखाया और कई करोड़ इंसानों को उस पर

गवाह बना दिया। ऐसे ज़बरदस्त निशानों का इन्कार करके फिर झुठलाना यह ख़ुदा के साथ लड़ाई है।

वेद की शिक्षाएं हमने नमूना के तौर पर वर्णन की हैं और हम लिख चुके हैं कि पवित्र क़ुरआन की शिक्षाएं इसके विपरीत हैं। वह (क़ुरआन) संसार में एकेश्वरवाद की स्थापना करने आया है इसमें एकेश्वरवाद की शिक्षा नंगी तलवार के समान मौजूद है। उसको आरंभ से अंत तक पढ़ो वह यह नहीं सिखाता कि ख़ुदा के बिना किसी चीज़ की उपासना करो और उससे मुरादें मांगो और उसकी महिमा और स्तुति करो। वह ईश्वरीय पुस्तकों को न किसी विशेष देश से सीमित करता है और न किसी विशेष क़ौम से। वह कहता है कि वह एक सीमा को समाप्त करने आया है जिसके अंश भिन्न-भिन्न रूप में समस्त संसार में मौजूद थे। अब उन समस्त अंशों में लकीर खींच कर उन सब को एक दायरे के समान बनाता है और इस प्रकार समस्त क़ौमों को एक क़ौम बनाना चाहता है लेकिन समय से पहले नहीं बल्कि ऐसे समय में जबकि स्वयं ज़माना गवाही देता है कि अब अवश्य यह समस्त क़ौमें एक क़ौम हो जाएंगी।

नंबर - 2

प्रत्येक अस्तित्व के बारे में और साथ ही मानवजाति तथा क़ौम के बारे में ईसाई साहिबों और आर्य साहिबों की क्या शिक्षा है तथा पवित्र क़ुरआन की क्या शिक्षा

ईसाई साहिबों की शिक्षा को यहाँ विस्तृत रूप से लिखने की आवश्यकता नहीं मसीह के ख़ून और कफ़्फ़ारे का एक ऐसा विषय है जिसने उनको न केवल समस्त धार्मिक कृत्यों और धर्म-कर्म से मुक्त कर दिया है बल्कि अधिकतर दिलों में गुनाह करने की दिलेरी भी पैदा हो गई है क्योंकि जबकि ईसाई साहिबों के हाथ में पूर्ण रूप से पापों को क्षमा किए जाने का एक नुस्खा है अर्थात 'मसीह के खून पर विश्वास' तो स्पष्ट है कि इस नुस्खा ने क़ौम में क्या-क्या दुष्परिणाम पैदा किए होंगे और तामसिक वृत्ति को गुनाह करने के लिए कितनी हिम्मत दी

होगी। इस नुस्खे ने जितना यूरोप और अमेरिका की व्यवहारिक पवित्रता को नुकसान पहुंचाया है, मैं समझता हूँ कि उसके वर्णन की मुझे आवश्यकता नहीं विशेष रूप से जब से इस नुस्खे का दूसरा भाग शराब भी उसके साथ मिल गई है, तब से तो यह नुस्खा एक भयानक और भड़कने वाला तत्व बन गया है। उसके समर्थन में यह वर्णन किया जाता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम शराब पिया करते थे इसलिए प्रत्येक सच्चे ईसाई का यह कर्तव्य है कि वह भी शराब पिए और अपने मार्गदर्शक का अनुसरण करे।

अत: इस नुस्खे के प्रयोग से इन देशों की व्यवहारिक पवित्रता पर जो भूकंप आया है और जो कुछ तबाही क़ौम में फैली है उसका वर्णन करने से भी शरीर काँपता है। अफ़सोस कि शराब और कफ़्फ़ारा दोनों मिलकर एक ऐसा तेज़ और शीघ्र भड़कने वाला बारूद बन गया है जिसके आगे संयम और आंतरिक पवित्रता ऐसे उड़ जाती है मानो तेज़ आंधी के आगे कूड़ा करकट। और इसमें आंतरिक पवित्रता के उड़ाने के लिए उस तोप से भी अधिक शक्ति है जो दस मील तक मार कर सकती है क्योंकि तोपें तो अधिकतर दो-तीन मील तक फ़ायर कर सकती हैं परन्तु इन तोपों की सीमा तो दस हज़ार मील से भी अधिक पहुंच गई है। यूरोप की शराब की गर्म बाज़ारी ने इस देश को भी लपेट में ले लिया है अधिक वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। फिर इसके अतिरिक्त औरतों की सामान्य रूप से बेपर्दगी ने मर्द तथा औरतों को उस तोप का निशाना बना दिया है। यह तो स्पष्ट है कि पवित्र ह्रदय रखने वाले तथा ख़ुदा से डरने वाले संसार में बहुत कम लोग होते हैं और अधिकतर मनुष्य उस कुत्ते के समान हैं जो दूध या किसी और अच्छी चीज़ को देखकर उसमें मुंह डालने से रुक नहीं सकता। उसकी तामसिक वृत्ति उस पर हावी होती है, कामवासना का इच्छुक और आंखें अंधी होती हैं और शराब ऐसी भावनाओं को और भी बांस पर चढ़ा देती है। तब ख़ुदा तआला का भय दिल से जाता रहता है और जवानी तथा भावनाओं के दिन और साथ ही शराब के जाम अंधा कर देते हैं। इस अवस्था में जवान मर्दों तथा जवान स्त्रियों का

इस प्रकार बिना रोक-टोक मिलना मानो कि वे पति-पत्नी हैं ऐसे लज्जाजनक दोष पैदा करता है जिन से अब यूरोप भी दिन प्रति दिन परिचित होता जाता है। अंतत: जैसे बहुत से अनुभव के बाद तलाक का क़ानून पास किया गया इसी प्रकार किसी दिन देख लोगे कि तंग आकर इस्लामी पर्दे के समान यूरोप में भी कोई क़ानून बनाया जाएगा अन्यथा परिणाम यह होगा कि स्त्रियाँ तथा पुरुष पशुओं के समान हो जाएंगे और यह पहचानना कठिन हो जाएगा कि अमुक व्यक्ति किसका पुत्र है। और वे लोग कैसे पवित्र हृदय हों, पवित्र हृदय तो वे होते हैं जिनकी आंखों के आगे हर समय ख़ुदा रहता है और न केवल एक मौत उनको याद होती है बल्कि वे हर समय ख़ुदा की महानता के प्रभाव से मरते रहते हैं परन्तु यह हालत शराब ख़ोरी में कैसे पैदा हो? शराब और ख़ुदा का भय एक वजूद में इकट्ठे नहीं हो सकते। मसीह के ख़ून की दिलेरी और शराब का जोश संयम की धज्जियां उड़ाने में सफ़ल हो गए हैं हम अनुमान नहीं लगा सकते कि कफ़्फ़ारे की आस्था ने यह ख़राबी अधिक पैदा की है या शराब ने। यदि इस्लाम की तरह पर्दे की रस्म होती तो फिर भी कुछ ढका-छुपा रहता परन्तु यूरोप तो पर्दा की रस्म का शत्रु है। हम यूरोप की इस फिलॉसफी को नहीं समझ सकते अगर वह इस हठधर्मी से बाज़ नहीं आते तो शौक से शराब पिया करें कि उसके माध्यम से कफ़्फ़ारे के लाभ बहुत प्रकट होते हैं क्योंकि मसीह के खून के सहारे पर जो लोग पाप करते हैं, शराब के माध्यम से उनकी संख्या बढ़ती है। हम इस बहस को अधिक लंबा नहीं करना चाहते क्योंकि फितरत की मांग अलग-अलग है। हमें तो अपवित्र वस्तुओं के प्रयोग से किसी बड़ी बीमारी के समय भी डर लगता है और कहां यह कि पानी की जगह भी शराब पी जाए। मुझे इस समय एक अपना बीता हुआ किस्सा याद आया है और वह यह कि मुझे कई साल से शूगर की बीमारी है। 15-20 बार प्रतिदिन पेशाब आता है और कभी-कभी सौ-सौ बार एक-एक दिन में पेशाब आया है और क्योंकि पेशाब में शक्कर है कभी-कभी खुजली की बीमारी भी हो जाती है और अधिकतर

पेशाब के बाद बहुत कमज़ोरी तक नौबत पहुंच जाती है। एक बार मुझे एक दोस्त ने यह परामर्श दिया कि शूगर में अफीम लाभदायक होती है इसलिए इलाज के उद्देश्य से कोई दोष नहीं (कि अफीम) शुरू कर दी जाए। मैंने उत्तर दिया कि यह आपने बड़ी कृपा की कि सहानुभूति दिखाई। परन्तु यदि में मधुमेह (शूगर) के लिए अफीम खाने की आदत डाल लूँ तो मैं डरता हूँ कि लोग हंसी-ठठ्ठा करके यह न कहें कि पहला मसीह तो शराबी था और दूसरा अफीमी।

अत: इस प्रकार जब मैंने ख़ुदा पर भरोसा किया तो ख़ुदा ने मुझे उन बुरी चीज़ों का मोहताज नहीं किया और बहुत बार जब मेरी यह बीमारी बहुत बढ़ी तो ख़ुदा ने फ़रमाया कि देख मैंने तुझे शिफ़ा दे दी। तब उसी समय मुझे आराम हो गया। इन्हीं बातों से मैं जानता हूँ कि हमारा ख़ुदा हर एक चीज़ पर समर्थ है।★ झूठे हैं वे लोग जो कहते हैं कि न उसने रूह पैदा की और न शारीरिक कण। वे ख़ुदा से अनभिज्ञ हैं। हम हर रोज़ उसकी नई पैदाइश देखते हैं और उन्नति से नई-नई रूह वह हम में फूंकता है। अगर वह नेस्त से हस्त करने वाला न होता तो हम तो जीवित ही मर जाते। विचित्र है वह ख़ुदा जो हमारा ख़ुदा है कौन है जो उसके समान है? और विचित्र हैं उसके काम कौन है जिसके काम उसके समान हैं? वह सर्वशक्तिमान है हां कभी-कभी उसकी हिकमत एक काम करने से उसे रोकती है। अत: उदाहरण के तौर पर वर्णन करता हूँ कि मुझे दो बीमारियां लगी हुई हैं। एक शरीर के ऊपरी भाग में कि सर दर्द और खून का बहाव कम होकर हाथ पैर ठंडे हो जाना, नब्ज़ कम हो जाना। दूसरी शरीर के निचले भाग में कि पेशाब अधिकता से आना और अधिकतर दस्त रहते हैं। यह दोनों बीमारियां लगभग 20 वर्ष से हैं। कभी दुआ से ऐसा आराम आ जाता है

★ **हाशिया-** मनुष्य जब तक स्वयं ख़ुदा की चमकार से और ख़ुदा के माध्यम से उसके अस्तित्व की सूचना न पाए तब तक वह ख़ुदा की उपासना नहीं करता बल्कि अपने अनुमान की उपासना करता है। केवल अनुमान की उपासना करना आंतरिक मलिनता को स्वच्छ नहीं करता। ऐसे लोग तो स्वयं परमेश्वर के परमेश्वर बनते हैं कि स्वयं ही उसका पता लगाते हैं। इसी से।

कि मानो दूर हो गईं परन्तु फिर शुरू हो जाती हैं। एक बार मैंने दुआ की कि यह बीमारियां बिल्कुल दूर कर दी जाएं तो उत्तर मिला ऐसा नहीं होगा। तब मेरे दिल में ख़ुदा तआला की ओर से यह डाला गया कि मसीह मौऊद के लिए यह भी एक निशानी है क्योंकि लिखा है कि वह दो पीली चादरों में उतरेगा। अत: यह वही दो पीले रंग की चादरें हैं एक शरीर के ऊपरी भाग पर और एक शरीर के निचले भाग पर। क्योंकि अहले ता'बीर (स्वप्न का अर्थ करने वाले) समस्त लोग इस पर सहमत हैं कि तन्द्रावस्था में जो नबूवत का संसार है यदि पीली चादरें देखी जाएं तो उनसे अभिप्राय बीमारी होती है। अत: ख़ुदा ने न चाहा कि यह निशानी मसीह मौऊद की मुझसे अलग हो।

कोई यह न समझे कि हमने यहां इंजील की शिक्षा का वर्णन नहीं किया क्योंकि निर्णय हो चुका है कि मसीह केवल अपने खून का लाभ पहुंचाने के लिए आया था अर्थात इसलिए कि ताकि गुनाह करने वाले उसके मरने से मुक्ति पाते रहें अन्यथा इंजील की शिक्षा एक सामान्य बात है जो पहले से बाइबिल में मौजूद है मानो दूसरे शब्दों में यह कहना चाहिए कि यह केवल दिखावे के दांत हैं इसका पालन करना उद्देश्य ही नहीं और यही सच है। क्या न्यायालय इसका पालन करते हैं? क्या स्वयं पादरी साहिबान इसका पालन करते हैं? क्या सामान्य ईसाई इसके पाबंद हैं? हां कफ़्फ़ारा और ख़ूने मसीह के अनुसार अवश्य पालन हो रहा है और इससे यूरोप और अमेरिका दोनों लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त यह भी बड़ी ग़लती है कि इंजील की शिक्षा को पूर्ण कहा जाए। वह मानवीय स्वभाव के वृक्ष की पूरी तरह सिंचाई नहीं कर सकती और केवल एक शाखा को अनुचित तौर पर लंबा करती है और शेष को काटती है और जिन-जिन शक्तियों के साथ मनुष्य इस संसार में आया है इंजील उन सब शक्तियों की परवरिश नहीं करती है। मानव स्वभाव पर नज़र डालकर ज्ञात होता है कि उसके विभिन्न अंग इस उद्देश्य से दिए गए हैं कि ताकि वह विभिन्न समयों में आवश्यकता अनुसार तथा समयानुकूल उन शक्तियों को प्रयोग करे। उदाहरण स्वरूप मनुष्य में अन्य गुणों के अतिरिक्त एक गुण

बकरी के स्वभाव के समान है और दूसरा गुण शेर की विशेषता से समानता रखता है। अत: ख़ुदा तआला इंसान से यह चाहता है कि वह बकरी बनने के अवसर पर बकरी बन जाए और शेर बनने के अवसर पर शेर बन जाए और ख़ुदा तआला कदापि नहीं चाहता कि वह हर समय और हर अवसर पर बकरी बना रहे और न यह कि हर जगह वह शेर ही बना रहे। और जैसा कि वह नहीं चाहता कि हर समय इंसान सोता ही रहे या हर समय जागता ही रहे या हरदम खाता ही रहे या हमेशा खाने से मुंह बंद रखे, उसी प्रकार वह यह भी नहीं चाहता कि इंसान अपनी आंतरिक शक्तियों में से केवल एक ही शक्ति पर ज़ोर देकर और दूसरी शक्तियां जो ख़ुदा की ओर से उसको मिली हैं उनको व्यर्थ समझे। अगर इंसान में ख़ुदा ने एक शक्ति रहम और नरमी और क्षमा और धैर्य की रखी है तो उसी ख़ुदा ने उसमें एक शक्ति क्रोध और बदले की भावना की भी रखी है। अत: क्या उचित है कि एक ईश्वर प्रदत्त शक्ति को तो सीमा से अधिक प्रयोग किया जाए और दूसरी शक्ति को अपने स्वभाव में से पूर्णता काट कर फेंक दिया जाए। इससे तो ख़ुदा पर आरोप आता है कि मानो उसने कुछ शक्तियां मनुष्य को ऐसी दी हैं जो प्रयोग के योग्य नहीं क्योंकि यह विभिन्न शक्तियां उसी ने तो मनुष्य में पैदा की हैं। अत: याद रहे कि मनुष्य में कोई भी शक्ति बुरी नहीं है बल्कि उनका अनुचित प्रयोग बुरा है। अत: इंजील की शिक्षा अत्यंत निम्न कोटि की है जिसमें एक ही भाग पर बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त दावा तो ऐसी शिक्षा का है कि एक ओर थप्पड़ खाकर दूसरा भी फेर दें परन्तु इस दावे के अनुकूल कर्म नहीं है। उदाहरण स्वरूप एक पादरी साहिब को कोई थप्पड़ मार कर देख ले कि फिर अदालत के द्वारा वह क्या कार्रवाई कराते हैं। अत: यह शिक्षा किस काम की है जिसके अनुसार न न्यायालय चल सकते हैं न पादरी चल सकते हैं। वास्तविक शिक्षा पवित्र क़ुरआन की है जो युक्ति तथा अवसर की अनुकूलता पर आधारित है। उदाहरण स्वरूप इन्जील ने तो यह कहा है कि हर समय तुम लोगों के थप्पड़ खाओ और किसी परिस्थिति में भी बुराई का मुक़ाबला न करो परन्तु पवित्र क़ुरआन

उसके मुक़ाबले पर यह कहता है -

جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَ اَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ

(अश्शूरा- 42/41)

अर्थात अगर कोई तुम्हें कष्ट पहुंचाएं उदाहरण स्वरूप दांत तोड़ दे या आंख फोड़ दे तो उसका दण्ड उतना ही है जो उसने किया। परन्तु अगर तुम ऐसी अवस्था में पाप क्षमा कर दो कि उस क्षमा का कोई अच्छा परिणाम निकले और उससे कोई सुधार हो सके। अर्थात उदाहरण स्वरूप मुजरिम भविष्य में इस आदत को छोड़ दे तो इस अवस्था में माफ करना ही बेहतर है और उस क्षमा करने के बदले ख़ुदा से उत्तम प्रतिफल मिलेगा।

अब देखो इस आयत में दोनों पक्षों का ध्यान रखा गया है और क्षमा तथा प्रतिशोध को समय की अनुकूलता से संबंधित कर दिया गया है तो यही बुद्धिमत्ता पूर्ण शिक्षा है जिस पर संसार का समस्त प्रबंधन चल रहा है। समय और अवसर की अनुकूलता से गर्म और ठंडा दोनों का प्रयोग करना यही बुद्धिमानी है। जैसा कि तुम देखते हो कि हम निरन्तर एक ही प्रकार के भोजन पर ज़ोर नहीं डाल सकते बल्कि यथा अवसर गर्म और ठंडा भोजन बदलते रहते हैं और जाड़े और गर्मी के समय में कपड़े भी यथा अवसर बदलते रहते हैं। अत: इसी प्रकार हमारी व्यवहारिक अवस्था भी यथा अवसर परिवर्तन को चाहती है। एक समय रोब दिखाने का अवसर होता है वहां नरमी और क्षमा से काम बिगड़ता है और दूसरे समय नरमी और विनम्रता का अवसर होता है और वहां रोब दिखाना मूर्खता समझी जाती है। अत: प्रत्येक समय और प्रत्येक अवसर एक बात को चाहता है। इसलिए जो व्यक्ति समय की अनुकूलता की रियायत नहीं करता वह जानवर है न कि इंसान और वह असभ्य है न कि सभ्य।

अब हम आर्य धर्म पर बात करते हैं कि उसमें मानवीय पवित्रता और इंसानी शिष्टाचार के लिए क्या शिक्षा है। अत: स्पष्ट हो कि आर्य समाज के सिद्धांतों में से अत्यंत गंदा और लज्जा जनक नियोग का विषय है जिसको पण्डित दयानन्द ने बड़ी हिम्मत के साथ अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है और उसको

वेद की गर्व करने योग्य शिक्षा ठहराया है और यदि वे इस विषय को केवल विधवा औरतों तक सीमित रखते तब भी हमें कुछ मतलब नहीं था कि हम उस पर बात करते परन्तु उन्होंने तो इस मानवीय स्वभाव के दुश्मन सिद्धांत को चरम तक पहुंचा दिया और लज्जा और शर्म को पूर्णत: त्याग कर यह भी लिख दिया कि एक औरत जिसका पति जीवित है और वह किसी शारीरिक बीमारी के कारण पुत्र उत्पन्न नहीं कर सकता उदाहरण स्वरूप लड़कियां ही पैदा होती हैं, या वीर्य के पतला होने के कारण संतान ही नहीं होती या वह व्यक्ति यद्यपि रति क्रीड़ा पर समर्थ है परन्तु बांझ स्त्रियों के समान है या किसी और कारण से पुत्रोत्पत्ति में रुकावट हो गई है तो उन समस्त अवस्थाओं में उसको चाहिए कि अपनी औरत को किसी दूसरे से हमबिस्तर कराए और इस प्रकार वह अन्य पुरुष के वीर्य से 11 बच्चे★ प्राप्त कर सकता है। मानो लगभग 20 वर्ष तक उसकी औरत दूसरे से हमबिस्तर होती रहेगी जैसा कि हमने विस्तृत पुस्तक के उद्धरण से यह समस्त वर्णन अपनी पुस्तक आर्य धर्म में कर दिया है और लज्जावश हम यहां वह समस्त विवरण नहीं लिखते। अत: इस कर्म का नाम नियोग है।

अब स्पष्ट है कि यह सिद्धांत मानवीय पवित्रता की धज्जियां उड़ाता है और औलाद पर अवैध संतान होने का दाग़ लगाता है और इंसानी फितरत इस निर्लज्जता को किसी प्रकार स्वीकार नहीं कर सकती कि एक इंसान की एक विवाहिता स्त्री हो जिसको ब्याहने के लिए वह गया था और माता-पिता ने सैंकड़ों या हज़ारों रुपया ख़र्च करके उसका विवाह किया था, जो उसका मान-सम्मान थी और उसके आदर सत्कार का आधार थी, वह बावजूद इसके कि उसकी पत्नी है और वह स्वयं जीवित मौजूद है उसके सामने रात को दूसरे से हमबिस्तर हो और कोई अन्य पुरुष उसके होते हुए उसी के घर में उसकी पत्नी से मुंह काला करे और

★मुझे ठीक-ठीक ज्ञात नहीं कि नियोग में अर्थात अपनी पत्नी को दूसरे से हमबिस्तर करवा कर केवल ग्यारह बच्चे तक प्राप्त करने का आदेश है या अधिक। लम्बा समय हो गया कि मैंने सत्यार्थ प्रकाश में पढ़ा तो था परन्तु स्मरण शक्ति अच्छी नहीं, याद नहीं रहा। आर्य साहिबान स्वयं सूचित कर दें क्योंकि प्रतिदिन अभ्यास कराने के कारण उन्हें ख़ूब याद होगा। इसी से।

वह आवाज़ें सुने और प्रसन्न हो कि अच्छा कर रहा है। और यह समस्त अवैध कर्म उसकी आंखों के सामने हों और उसको कुछ भी जोश न आए। अब बताओ कि क्या ऐसा व्यक्ति जिसकी औरत तथा सेहरों के साथ ब्याही हुई पत्नी उसकी आंखों के सामने दूसरे के साथ अपवित्र हो। क्या उसका मानवीय स्वाभिमान इस निर्लज्जता को स्वीकार करेगा? देखो राजा रामचंद्र ने अपनी पत्नी सीता के लिए कितना स्वाभिमान दिखाया। हालांकि रावण एक ब्राह्मण था और सीता की अभी कोई औलाद नहीं हुई थी और इस नियम के अनुसार ब्राह्मण से नियोग वैध था फिर भी रामचंद्र के स्वाभिमान ने अपनी पवित्र पत्नी के लिए रावण का वध कर दिया तथा लंका को जला दिया। वह मनुष्य इंसान कहलाने के योग्य नहीं जिसको अपनी पत्नी के लिए भी स्वाभिमान नहीं और क्या कारण कि उसका नाम दय्यूस (बेगैरत) न रखा जाए। जानवरों में भी यह स्वाभिमान देखा गया है, पक्षियों में भी देखा गया है कि एक पक्षी पसंद नहीं करता कि दूसरा पक्षी उसकी मादा के साथ संबंध स्थापित करे। फिर मनुष्य होकर यह लज्जा से दूर कर्म! क्या कोई पवित्र स्वभाव इसको स्वीकार करेगा? और दयानन्द का यह लिखना कि यह वेद की श्रुति है हम नहीं स्वीकार कर सकते कि ऐसी कोई श्रुति वेद में होगी। अज्ञानियों के बीच पण्डित दयानन्द ने जितनी चाहे व्यर्थ बातें कर लीं। अन्यथा पूर्ण रूप से ज्ञान में प्रतिष्ठा प्राप्त करना जो मनुष्य के हृदय को प्रकाशमान करती है हर एक का काम नहीं। कुछ शब्दों के बहुत से अर्थ होते हैं और एक मूर्ख अपनी शीघ्रता तथा अपनी मूर्खता से एक अर्थ को पसंद कर लेता है तो ऐसा व्यक्ति जिसमें लज्जा का तत्व कम हो उसे आभास नहीं होता कि यह मेरा कथन सम्मानित और पवित्रता से दूर है। परन्तु इस जगह स्वभाविक रूप से यह प्रश्न पैदा होता है कि ऐसे लज्जा जनक विषय पर दयानन्द ने क्यों ज़ोर दिया और क्यों दिलेरी दिखा कर यह गंदी शिक्षा अपनी किताब सत्यार्थ प्रकाश में लिख दी। अत: जहां तक मैंने विचार किया है मेरे ख्याल में इसका यह उत्तर है कि चूंकि पण्डित दयानन्द समस्त आयु सन्यासी रहा है और विवाह नहीं किया। अत: उसको इस स्वाभिमान की ख़बर नहीं थी कि जो एक सम्मानित और स्वाभिमानी व्यक्ति को अपनी पत्नी के बारे में हुआ करता है।

इसी कारण उसके अनुभवहीन स्वभाव ने आभास न किया कि मैं क्या लिख रहा हूँ। दयानन्द को मालूम नहीं था कि अपनी पत्नियों के बारे में तो कंजरो को भी स्वाभिमान होता है बल्कि बहुत से लोग जो बाज़ारी औरतों से अवैध संबंध रखते हैं जब किसी पहचान वाली कंजरी के बारे में उनको सन्देह होता है कि वह दूसरे के पास गई तो कभी-कभी गुस्से में आकर उसका नाक काट देते हैं या वध कर देते हैं। तो फिर क्या बुद्धि स्वीकार कर सकती है कि एक स्वाभिमानी आर्य की स्त्री ऐसे काम करे तो वह लोगों को मुंह दिखाने के योग्य रहे। इसी सिद्धांत से तो दुनिया में खुला खुला दुराचार फैलता है। और अंततः अधिकारियों को भी इन गंदे सिद्धांतों के रोकने के लिए हस्तक्षेप करना पड़ता है जैसा कि अंग्रेज़ी सरकार ने हुकूमत के आरंभ में ही जल प्रवाह और सति प्रथा को बलपूर्वक हटा दिया था।

इसी प्रकार आवागमन★ का विषय भी यदि सही माना जाए तो इसी

★**हाशिया**- आवागमन के विषय जैसा और कोई झूठा विषय नहीं क्योंकि उसका आधार भी ग़लत है और परीक्षा के तौर पर भी यह ग़लत सिद्ध होता है और मानवीय पवित्रता की दृष्टि से भी ग़लत ठहरता है और ख़ुदा की कुदरत में हस्तक्षेप करने के कारण भी हर एक अध्यात्मज्ञानी का यह कर्तव्य है कि इसको ग़लत समझे।

इसका आधार इस प्रकार ग़लत है कि सत्यार्थ प्रकाश में बताया गया है कि रूह औरत के पेट में इस प्रकार आती है कि वह ओस की बूंदों के साथ किसी साग-पात पर गिरती है और उस साग पात के खाने से रूह भी साथ **खाई जाती** है। अतः इससे तो यह अनिवार्य ठहरता है कि रूह दो टुकड़े होकर धरती पर गिरती है। एक टुकड़े को संयोग से मर्द खा लेता है और दूसरे टुकड़े को औरत खाती है। क्योंकि यह प्रमाणित विषय है कि बच्चे को आध्यात्मिक शक्तियां और आध्यात्मिक शिष्टाचार पुरुष तथा स्त्री दोनों से मिलते हैं न केवल एक से। अतः दोनों के लिए आवश्यक है कि वे ऐसे साग पात को खाएं जिसमें रूह हो और केवल एक का खाना पर्याप्त नहीं। अतः स्पष्ट रूप से यह बात रूह के विभाजित होने के लिए अनिवार्य है और रूह का विभाजित होना झूठ है इसलिए **आवागमन झूठा** है।

और परीक्षा के तौर पर यह विषय इस प्रकार ग़लत ठहरता है कि जिस तरह हर प्रकार की रूहें पैदा होती रही हैं उन समस्त अवस्थाओं में संभव ही नहीं कि ओस की बूंदों के साथ

खराबी का कारण होगा जैसा कि नियोग★ क्योंकि इस अवस्था में करोड़ों बार ऐसा हो जाएगा की एक व्यक्ति एक ऐसी औरत से विवाह करे जो वास्तव में उसकी मां थी या दादी थी या बेटी थी जो मर चुकी थी और फिर वह पुन: जन्म लेकर संसार में आई। अत: यदि आवागमन का विषय सही था तो इतना तो परमेश्वर को करना चाहिए था कि नया जन्म लेने वाली को इस बात का ज्ञान दे देता कि वह अमुक-अमुक व्यक्ति से पूर्व जन्म में संबंध रखती थी ताकि दुराचार तक नौबत न पहुंचती।

इस जगह याद रहे कि आवागमन का विषय अपनी जड़ से झूठा है। वह तब सच हो सकता है जब यह बात सच हो कि रूह दो टुकड़े होकर किसी साग पात पर गिरती है और फिर भोजन के रूप में खाई जाती है। परन्तु मरतबों में कमी-बेशी (अर्थात किसी का छोटा-बड़ा होना या अमीर-गरीब होना) आवागमन

शेष हाशिया- रूहें पैदा होती हों। उदाहरण स्वरूप हम देखते हैं कि बालों में जुएं पड़ जाती हैं वे रूहें किस ओस की बूंदों के साथ खाई जाती हैं। ऐसा ही गेहूं के खेतों में सरी पड़ जाती हैं तो वे करोड़ों रूहें जो खेतों के अंदर पैदा हो जाती हैं वे किस ओस के साथ खेत के अंदर उतरती हैं और कौन उनको खाता है? ऐसा ही हम देखते हैं कि पेट में कद्दू दाने पैदा होते हैं और कभी-कभी दिमाग में कीड़े पैदा हो जाते हैं और भौतिक विज्ञान के अनुभव से जल की प्रत्येक बूंद में हज़ारों कीड़े सिद्ध होते हैं। यह किस ओस से पड़ते हैं? अनुभव बता रहा है कि प्रत्येक वस्तु में एक प्रकार का कीड़े का माद्दा मौजूद है। पशमीना में (रेशम में) भी एक प्रकार का कीड़ा लग जाता है, लकड़ी में भी, अनाज में भी, फलों में भी और कुछ फलों में फल के जन्म के साथ-साथ ही कीड़ा पैदा होता है जैसा कि गूलर का वृक्ष। वह किस ओस के कीड़े से आते हैं? और अनुभवी लोगों ने यह सिद्ध किया है कि कुछ उपायों से हजारों बिच्छू पैदा कर सकते हैं वह किस ओस से आते हैं। अफसोस पंडित दयानन्द साहिब की मोटी अकल ने बहुत कुछ नाराज़गी और अपमान आर्य साहिबों को पहुंचाया है। स्वयं तो ऐसी ग़लत तथा व्यर्थ बातें करके शीघ्र ही संसार से

★ **हाशिया**- नियोग की अधिकता स्त्रियों के लिए इसलिए भी हानिकारक है कि इससे झिझक खुल जाएगी और कुछ वर्ष पराए मर्द के पास जाकर फिर हमेशा के लिए यही आदत रहेगी। इसी से।

पर तर्क नहीं। यह मर्तबे का मतभेद तो निर्जीव वस्तुओं में भी पाया जाता है। इस संशय का उत्तर यही है कि क़यामत के दिन कम हिस्सा वाले को पूरा हिस्सा दिया जाएगा और अधिक हिस्से वाले से हिसाब लिया जाएगा। अत: कुछ दिन संसार की कमी-बेशी आवागमन पर कैसे तर्क हो सकती है?

और नियोग के उत्तर में यह कहना कि मुसलमानों में भी 'मुतआ' है। यह विचित्र उत्तर है। मैं नहीं जानता कि आर्य साहिबान ने मुतआ किस चीज़ को समझा हुआ है। स्पष्ट हो कि ख़ुदा ने पवित्र क़ुरआन में सिवाए निकाह के हमें कोई और आदेश नहीं दिया। हां शीओं में से एक संप्रदाय है कि वे निश्चित समय रूपी निकाह कर लेते हैं अर्थात अमुक समय तक निकाह और फिर तलाक होगी और उसका नाम 'मुतआ' रखते हैं। परन्तु ख़ुदा तआला की पुस्तक से उनके पास

शेष हाशिया- चले गए और दूसरों को जिन्होंने उन्हीं का मत अपनाया था, अपमान का निशाना बना गए।

देखो पवित्रता की दृष्टि से भी आवागमन का विषय कैसा खराब है। क्या जब कोई लड़की पैदा होती है उसके साथ कोई सूची भी अंदर से निकलती है जिस से ज्ञात हो कि यह लड़की अमुक पुरुष की मां या दादी या बहन है, उससे वह शादी करने से बचे।

और यह **आवागमन** का विषय परमेश्वर की कुदरत में भी बहुत कुछ हस्तक्षेप करता है। ख़ुदा वह ख़ुदा है कि चाहे तो एक लकड़ी में जान डाल दे जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का डंडा एक पल में लकड़ी और एक पल में सांप बन जाता था। परंतु रूहों के अनादि होने की अवस्था में हिंदुओं का परमेश्वर कदापि परमेश्वर नहीं रह सकता क्योंकि वह केवल दूसरों के सहारे से अपनी ख़ुदाई चला रहा है, उसकी ख़ुदाई की खैर नहीं वह आज भी नहीं और कल भी नहीं। और यह कहना कि आवागमन का चक्कर जो कई अरब वर्षों से आर्य साहिबों की आस्था के अनुसार जारी है उसका कारण पिछले जन्मों के पाप हैं। यह विचार भौतिक विज्ञान के अनुभव से अत्यंत व्यर्थ और लचर और झूठ सिद्ध होता है। यह स्पष्ट है कि रूहों के जन्म में भी ख़ुदा तआला का एक प्रबंध है जो कभी आगे पीछे नहीं होता। उदाहरण स्वरूप बरसात के दिनों में हज़ारों कीड़े पैदा हो जाते हैं और गर्मी के दिनों में बहुत अधिकता से मक्खियां पैदा हो जाती हैं तो क्या इन्हीं दिनों में हमेशा संसार में पाप अधिक होते हैं और अत्यंत घोर पाप के कारण मनुष्यों को मक्खियां और बरसात के कीड़े बनाया जाता है? इस प्रकार के हजारों तर्क हैं जिनसे आवागमन खंडित होता है चाहिए कि आर्य साहिबान ध्यान पूर्वक इन बातों को सोचें।

इसका कोई प्रमाण नहीं। अत: वह तो एक निकाह है जिसकी तलाक का समय ज्ञात है। और नियोग को तलाक के विषय से कुछ संबंध नहीं। तलाक के बाद पति-पत्नी के समस्त संबंध पूर्णत: टूट जाते हैं और एक दूसरे के बारे में यह समझा जाता है कि वह मर गया और यह तलाक का विषय इंसानी आवश्यकताओं के कारण प्रत्येक धर्म में पाया जाता है। अत: विदेशों में भी तलाक का क़ानून पास हो गया है। और यह आरोप कि मुसलमान कई पत्नियां कर लेते हैं इसको भी नियोग से कुछ संबंध नहीं। हिन्दू धर्म के राजे और बड़े-बड़े आदमी प्राचीन काल से कई पत्नियां करते रहे हैं और अब भी करते हैं। और यह आरोप कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी ज़ैनब का आकाश पर निकाह हुआ था, इससे भी आरोप लगाने वाले की केवल अज्ञानता सिद्ध होती है। ख़ुदा के नबियों और अवतारों के आकाश पर ही निकाह होते हैं क्योंकि ख़ुदा उनको समय से पूर्व निकाह का आदेश देता है और अपनी स्वीकृति प्रकट करता है जबकि आप लोगों का एक ब्राह्मण बीच में आकर निकाह करा जाता है तो क्या ख़ुदा को अधिकार नहीं? आरोप तो इस अवस्था में होना चाहिए था कि ख़ुदा किसी दूसरे की स्त्री से जो उसके निकाह में है और उसने तलाक नहीं दिया, बलपूर्वक किसी अवतार को दे दे। परन्तु तलाक के बाद यदि ख़ुदा के आदेश से तथा दोनों पक्षों की स्वीकृति से निकाह हो तो इस पर क्या आपत्ति है?

और यदि आर्य साहिबान के निकट अपने जीवन में अपनी पत्नी को किसी दूसरे से संसर्ग कराना इसके समान है कि जब मनुष्य अपनी पत्नी को उसकी अपवित्रता, दुराचार या किसी अन्य कारण से तलाक देता है, तो इसका निर्णय बहुत सरल है क्योंकि इस देश में ऐसे मुसलमान और दूसरे लोग बहुत अधिकता से पाए जाते हैं जो अपनी औरतों से मतभेद होने के कारण परेशान होकर उन को तलाक दे देते हैं और फिर वे स्त्रियां उस अंग के समान हो जाती हैं जो काट कर फेंक दिया जाता है और उनसे कुछ संबंध नहीं रहता। और यदि आर्य साहिबान चाहें तो हम ऐसे मुसलमानों बल्कि हिंदुओं के नामों की भी बहुत सी सूचियां दे सकते हैं जिन्होंने इन कठिनाइयों के कारण दुराचारी स्त्रियों को तलाक

देकर उनसे जीवन के समस्त संबंध तोड़ लिए हैं।

ऐसा ही आर्य साहिबान को चाहिए कि हमें उन सुशील, सभ्य और सम्मानित आर्य साहिबों की सूची दिखाएं★ जिन्होंने अपने जीवन में अपनी स्त्री से नियोग करवाए हैं और अन्य पुरुषों से हमबिस्तर करवा कर उनसे औलाद प्राप्त की है। परन्तु चाहिए कि इस सूची के साथ नियोग की औलाद की एक सूची भी नाम के साथ प्रस्तुत कर दें। हम पूछना चाहते हैं के विशेषकर क़ादियान में जो आर्य साहिबान रहते हैं कितनों ने अब तक उनमें से अपनी पत्नियों से नियोग कराया है और कितना उन्होंने इस पवित्र कर्म से हिस्सा लिया है और कितने अवैध पुरुषों से अपनी पत्नियों को हमबिस्तर करा कर उनसे औलाद प्राप्त की है। क्योंकि यदि वास्तव में यह कर्म अच्छा और गर्व करने योग्य और पवित्र वेद का आदेश है तो अवश्य प्रत्येक आर्य साहिबों ने इस आदेश से भाग लिया होगा और लेना चाहिए।

याद रहे कि नियोग के आदेश के मुक़ाबले पर पवित्र क़ुरआन में पत्नियों के लिए पर्दा करने की हिदायत है जैसा कि वह फ़रमाता है-

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ (सूरः अन्नूर - 24/31)

وَ قُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ

(सूरः अन्नूर -24/32)

अर्थात मोमिनों से कह दे मर्द हों या औरतें हों कि अपनी आंखों को अन्य स्त्रियों तथा पुरुषों की ओर देखने से रोको और कानों को अन्य पुरुषों की अवैध ध्वनि सुनने से रोको तथा अपने गुप्तांगों की सुरक्षा करो कि इस के द्वारा तुम पवित्र हो जाओगे।

★**हाशिया-** कुछ समय हुआ कि एक आर्य साहिब ने एक अखबार के माध्यम से संभवतः फिरोज़पुर से इस विषय का एक पत्र प्रकाशित किया था कि यदि कोई आर्य साहिबों में से अपनी पत्नी से नियोग कराना चाहते हैं या स्वयं पत्नी ही इस पवित्र कर्म की इच्छुक है तो वह पत्र द्वारा उससे संपर्क कर ले। हमें मालूम नहीं कि क़ादियान से भी इस निवेदन का कोई उत्तर भेजा गया था या नहीं। इसी से।

अब हे आर्य साहिबान! न्याय पूर्वक विचार करो कि पवित्र क़ुरआन तो इस बात से भी मना करता है कि कोई मर्द पराई स्त्री पर नज़र डाले और या औरत पराए मर्द पर नज़र डाले या उसकी ध्वनि अवैध रूप से सुने परन्तु आप लोग प्रसन्नता पूर्वक अपनी पत्नियों को पराए मर्दों से हम बिस्तर कराते हैं और इसका नाम नियोग रखते हैं। इन दोनों शिक्षाओं में कितना अंतर है स्वयं विचार कर लो। और अत्यंत खेद है कि यदि आप पर सहानुभूति पूर्वक ऐतराज़ किया जाए कि ऐसा गंदा काम स्त्रियों से क्यों कराते हो तो आप तलाक का विषय प्रस्तुत कर देते हैं और नहीं जानते कि तलाक की आवश्यकताएं तो समस्त संसार में एक समान हैं। जिस स्त्री से परस्पर वैवाहिक संबंध तोड़ दिया गया वह तो मानो तलाक दी हुई के हिसाब से मर गई। और यदि आप लोग केवल इस सीमा तक रहते कि आवश्यकताओं के समय में आप लोग अपनी उन औरतों को तलाक देते जो आप लोगों की अवज्ञा करे या मतभेद करे या दुराचारी होती या जानी दुश्मन होती तो कोई भी आप पर ऐतराज़ न करता क्योंकि स्त्री पुरुष का सम्बन्ध संयम तथा पवित्रता की सुरक्षा के लिए है और स्त्री पुरुष एक दूसरे के धर्म और पवित्रता के सहायक होते हैं और एक दूसरे के सच्चे दोस्त और वफादार होते हैं। और जब उनमें वह पवित्र संबंध शेष न रहे जो निकाह का वास्तविक उद्देश्य है तो फिर सिवाए तलाक के और क्या इलाज है। जब एक दांत में कीड़ा पड़ जाए और दर्द पहुंचाए तो अब वह दांत नहीं है बल्कि एक बुरी चीज़ है उसको बाहर निकालना चाहिए ताकि जीवन कठिन न हो।

چوں بدندانِ تو کرمے اوفتاد
نیست آں دندان بکن اے اوستاد ★

(अनुवाद- जब तेरे दांत में कीड़ा लग जाए और तुझे कष्ट पहुंचे तो अब वह तेरा दांत नहीं बल्कि एक अपवित्र वस्तु है, हे बुद्धिमान उसे निकाल फेंक- अनुवादक)

★ **हाशिया**- वास्तव में इस्लामी पवित्रता ने ही तलाक की आवश्यकता का आभास किया है अन्यथा जो लोग बेगैरतों के समान जीवन व्यतीत करते हैं उनके निकट यद्यपि उनकी स्त्री कुछ करती फिरे तलाक की आवश्यकता नहीं। इसी से।

तृतीय

जिस ख़ुदा की ओर ईसाई धर्म या वेद या पवित्र क़ुरआन मार्गदर्शन करता है, उन तीनों धर्मों में से कौन सा ऐसा धर्म है जो सच्चे ख़ुदा को दिखाता है और केवल किस्से प्रस्तुत नहीं करता

स्पष्ट रहे कि (किसी) धर्म को अपनाने का वास्तविक उद्देश्य यह है कि ताकि वह ख़ुदा जो मुक्ति का स्रोत है उस पर ऐसा पूर्ण विश्वास हो जाए कि मानो उसको आंख से देख लिया जाए। क्योंकि गुनाह की दुष्ट आत्मा मनुष्य को नष्ट करना चाहती है और मनुष्य गुनाह की भयानक ज़हर से किसी प्रकार बच नहीं सकता जब तक उसको उस पूर्ण और जीवित ख़ुदा पर पूरा विश्वास न हो जाए और जब तक ज्ञात न हो कि वह ख़ुदा है जो पापी को दण्ड देता है और सदाचारी को शाश्वत प्रसन्नता पहुंचाता है। यह सामान्य तौर पर प्रतिदिन देखा जाता है कि जब किसी वस्तु के विनाशकारी होने पर किसी को विश्वास हो जाए तो फिर वह व्यक्ति उस वस्तु के निकट नहीं जाता। उदाहरण स्वरूप कोई व्यक्ति जानबूझ कर विषपान नहीं करता, कोई व्यक्ति खूंखार शेर के सामने खड़ा नहीं हो सकता और कोई व्यक्ति जानबूझ कर सांप के बिल में हाथ नहीं डालता। फिर जानबूझ कर गुनाह क्यों करता है? उसका यही कारण है कि वह विश्वास उसको प्राप्त नहीं जो उन दूसरी वस्तुओं के बारे में प्राप्त है। अत: सब से पहले मनुष्य का यह कर्तव्य है कि ख़ुदा पर विश्वास प्राप्त करे और उस धर्म को अपनाए जिसके द्वारा विश्वास प्राप्त हो सकता है ताकि वह ख़ुदा से डरे और गुनाह से बचे। परन्तु ऐसा विश्वास प्राप्त कैसे हो? क्या यह केवल किस्से कहानियों से प्राप्त हो सकता है? कदापि नहीं। क्या यह केवल बुद्धि के अनुमानित तर्कों से प्राप्त हो सकता है? कदापि नहीं। अत: स्पष्ट हो कि विश्वास के प्राप्त करने हेतु केवल एक मार्ग है और वह यह है कि मनुष्य ख़ुदा तआला

से **वार्तालाप** के द्वारा उसके विलक्षण निशान देखे★ और बार-बार के अनुभव से उसकी महाशक्ति तथा क़ुदरत पर विश्वास करे या ऐसे व्यक्ति की संगत में रहे जो इस स्तर तक पहुंच गया है।

अब मैं कहता हूँ कि मारिफ़त का यह मर्तबा न किसी ईसाई साहिब को प्राप्त है और न किसी आर्य साहिबों को और उनके हाथ में केवल किस्से और कहानियां हैं और जीवित ख़ुदा के जीवित चमकार के नज़ारे से वे सब बेनसीब हैं। हमारा ज़िन्दा हय्यो क़य्यूम ख़ुदा हम से इंसान की तरह बातें करता है। हम (उससे) एक बात पूछते तथा दुआ करते हैं तो वह क़ुदरत के भरे हुए शब्दों के साथ उत्तर देता है। यदि यह सिलसिला हज़ार बार तक भी निरंतर चलता रहे तब भी वह उत्तर देने से विमुख नहीं होता। वह अपनी वाणी में विचित्र से विचित्र परोक्ष की बातें प्रकट करता है और विलक्षण क़ुदरतों के नज़ारे दिखाता है। यहां तक कि वह विश्वास करा देता है कि वह वही है जिसको ख़ुदा कहना चाहिए। दुआएं स्वीकार करता है और स्वीकार करने की सूचना देता है। वह बड़ी-बड़ी कठिनाइयां हल करता है और जो मुर्दों के समान बीमार हों उनको भी दुआ की अधिकता से जीवित कर देता है। और अपने यह समस्त इरादे समय पूर्व अपनी वाणी द्वारा बता देता है। ख़ुदा वही ख़ुदा है जो हमारा ख़ुदा है वह अपनी वाणी से जो भविष्य की घटनाओं पर आधारित होती हैं, हम पर सिद्ध करता है कि धरती तथा आकाश का वही ख़ुदा है। वही है जिसने मुझे संबोधित करके कहा कि मैं तुझे ताऊन अर्थात प्लेग की मौत से बचा लूंगा और साथ उन सबको जो तेरे घर में सदाचार और संयम के साथ जीवन

★ नबुव्वत के ज़माने के बाद कुछ समय तक उसी नबी की भविष्यवाणियाँ जो संसार से चला गया चमत्कारों के तौर पर लोगों के दिलों को तसल्ली देती रहती हैं जो दूसरी नस्ल के सामने पूरी होती रहती हैं। परन्तु यह दृश्य बहुत समय तक नहीं रहता और मात्र किस्से-कहानियां मनुष्य को पवित्र नहीं बना सकते। यद्यपि केवल लकीर पर चलने वाला कौमी पक्षपात में बढ़ सकता है और दुष्ट व्यक्ति के समान बढ़-बढ़ कर बोलने वाला हो सकता है परन्तु वास्तविक पवित्रता जो अपने फल प्रकट करे, कभी उसके दिल में नहीं आ सकती। इसी से।

व्यतीत करते हैं, बचा लूंगा। इस ज़माने में कौन है जिसने मेरे अतिरिक्त ऐसा इल्हाम प्रकाशित किया और अपने लिए और अपनी पत्नी और अपने बच्चों और दूसरे पवित्र लोगों के लिए जो उसकी चारदीवारी के अंदर रहते हैं ख़ुदा की ज़िम्मेदारी प्रकट की। अब तक मेरे एक लाख निशान (चमत्कार) प्रकट हो चुके हैं और उनमें से एक बड़े हिस्से के गवाह यहां के आर्य साहिबान लाला **शरमपत** और लाला **मलावामल** भी हैं। यदि वे इन्कार करेंगे तो हम एक और पुस्तक के द्वारा दिखाएंगे कि उनका रद्द करना धर्म★ है या हठधर्मी। क़ौम के डर से झूठ बोलना गंदगी खाने से भी बदतर है फिर क़ौम भी कब उस गवाही से बाहर है। उनके बहादुर पण्डित ने अपनी मौत से सबको गवाह बना दिया। गरीब **शरमपत** और मलावामल किस गिनती में हैं।

याद रहे कि ताऊन के बारे में और महान भविष्यवाणी प्रकटन में आई है और वह यह है कि आज से 6-7 वर्ष पहले मैंने अपनी एक पुस्तक में ख़ुदा तआला से इल्हाम पा कर प्रकाशित किया था कि ताऊन के द्वारा बहुत से लोग मेरी जमाअत में सम्मिलित होंगे। अत: ऐसा ही हुआ और अब तक दस हज़ार से अधिक ऐसे लोग मेरी जमाअत में सम्मिलित हुए हैं जो ताऊन से डरकर इस ओर आए हैं। ख़ुदा तआला ने मेरे सिलसिले को नूह की कश्ती से समानता दी थी इस कश्ती में लोग बैठते जाते हैं। नूह की कश्ती में हर एक जानवर तथा परिंदे बैठ गए थे, यह नहीं कि नूह शिकारियों की तरह उनको जंगलों से पकड़

★**हाशिया**- मैं देखता हूँ कि आर्य साहिबों की गाली-गलौज अब बढ़ती जाती है और उन्होंने अब वेद के देवताओं के अतिरिक्त अपनी क़ौम को भी एक देवता बना लिया है। मैं जानता हूँ कि अब वह समय आ गया है कि वह जीवित और हय्यो क़य्यूम ख़ुदा सच्चाई के समर्थन में आसमान से अपनी कोई क़ुदरत दिखाए। वेद के ख़ुदा की कमज़ोरी तो उन्हें 6 मार्च को ज्ञात हो चुकी थी परन्तु इस नए देवता ने वह घटना भुला दी। अब वह मुझसे कैसा निशान मांगते हैं खुले तौर पर चैलेंज करें। फिर जिस प्रकार से ख़ुदा चाहे वह सर्वशक्तिमान है कि उनके चैलेंज का उत्तर दे। ख़ुदा पर और उसकी वह्यी पर हंसी करना अच्छा नहीं। यद्यपि उनके कथन अनुसार वेद ख़ुदा का कलाम नहीं परन्तु ख़ुदा का कलाम मुझ पर उतरता है, देखें और परखें और हंसे नहीं। इसी से।

लाया था बल्कि वह जान के भय से स्वयं ही कश्ती में बैठ गए थे। अब भी इस कश्ती में हर प्रकार के डरने वाले लोग बैठ रहे हैं।

सुनो हे धरती पर रहने वाले समस्त लोगो! आप लोग आर्य साहिबों और ईसाई साहिबों से पूछ कर न्यायपूर्वक कहें कि उनके हाथ में सिवाए पुराने घिसे-पिटे किस्सों के कुछ और भी है? यही तो कारण है कि एक **संप्रदाय** ने उनमें से एक मनुष्य (अर्थात हजरत ईसा अलैहिस्सलाम- अनुवादक) को ख़ुदा बना रखा है जो वास्तव में मुझसे अधिक नहीं। यदि वह मुझे देखता तो ख़ुदा की नेमतों को यहां अधिक पाता। यह तो ईसाइयों का जाली ख़ुदा है परन्तु आर्यों ने एक बनावटी ख़ुदा इंसान के समान कमज़ोर अपनी ओर से गढ़ लिया है जो रूहों और शारीरिक कणों के पैदा करने पर समर्थ नहीं। यदि उनको ख़ुदा तआला के नवीन क़ुदरतों की जानकारी होती तो वे जानते कि वह मनुष्य नहीं और हर एक बात पर समर्थ है। रूह क्या चीज़ है जो उसको पैदा न कर सके और परमाणु क्या चीज़ हैं जो उनके बनाने पर समर्थ न हो। रूहों के अंदर एक और रूहें हैं तथा कणों के अंदर एक और प्रकार के कण हैं सबका वही पैदा करने वाला है। वह कभी अपनी इच्छा से और कभी अपने सानिध्य प्राप्त बन्दों की दुआ सुन कर नवीन से नवीन अविष्कार करता रहता है। जिसने उसको इस प्रकार नहीं देखा वह अंधा है जैसा कि वह स्वयं कहता है-

مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى (बनी इस्राईल- 17/73)

अर्थात जिसको इस लोक में उसका दर्शन नहीं हुआ उसको परलोक में भी उसका दर्शन नहीं होगा और वह दोनों लोकों में अंधा रहेगा। ख़ुदा के देखने के लिए इसी लोक में आंखें तैयार होती हैं और स्वर्गीय जीवन इसी संसार से आरंभ होता है।

इन विज्ञापनों में जो मुझ पर आक्रमण करने के लिए आर्य साहिबों ने प्रकाशित किए हैं मेरी कुछ भविष्यवाणियों पर नासमझी से कुछ ऐतराज़ भी किए हैं। वे कहते हैं कि निकट समय में या सर्वप्रथम लड़का होने की भविष्यवाणी थी और लड़की पैदा हुई। तो इतना उत्तर पर्याप्त है कि यदि वे

(मेरी) पुस्तकों को देखकर ईमानदारी से काम लेते तो ऐसा ऐतराज़ कभी न करते। मुझे तो ऐसा इल्हाम कोई याद नहीं कि जिसका यह विषय हो कि अब अवश्य अविलम्ब लड़का पैदा होगा और अगर उनको याद है तो वह प्रस्तुत कर दें वरना झूठों पर ख़ुदा की लानत हो। हमारी ओर से यही उत्तर पर्याप्त है। ख़ुदा ने समस्त पुस्तकों में क़यामत (महाप्रलय) की भविष्यवाणी प्रकाशित की हुई है। आर्य साहिबान भी महाप्रलय के समर्थक हैं परन्तु वह भविष्यवाणी अब तक पूरी नहीं हुई बल्कि संसार पहले से अधिक आबाद होता जाता है। जो पहले जंगल थे अब वहां निवास स्थान तथा शहर हैं। परन्तु क्या हम कह सकते हैं कि वह भविष्यवाणी झूठी निकली? ख़ुदा की बातों में एक समय होता है वह अपने समय पर पूरी होती हैं और अज़ाब की भविष्यवाणी में तौबा और पश्चाताप से कभी विलंब भी हो जाता है। मनुष्य की अभद्रता के लिए इससे बढ़कर और कोई प्रमाण नहीं कि ऐतराज़ करने के समय झूठ बोले। ऐसा ही आथम की मौत की भविष्यवाणी पर तब ऐतराज़ होता कि मैं उससे पहले मर जाता और वह अब तक जीवित होता क्योंकि इल्हाम का निष्कर्ष यह है कि जो धर्म में झूठा है वह पहले मरेगा। इल्हामी शर्त के अनुसार उसने थोड़े दिन लाभ उठाया फिर भविष्यवाणी के अनुसार मर गया। उसने सभा में लगभग 70 लोगों के समक्ष जिनमें लगभग आधे ईसाई भी थे, अपने बड़बोलेपन से तौबा की और फिर मियाद (निश्चित अवधि) के अंत तक डरता और रोता रहा, उसको कुछ मोहलत दी गई और यह मोहलत ख़ुदा की शर्त के अनुसार और इल्हाम में दर्ज थी और अंततः क़ब्र ने उसको बुला लिया। परन्तु आश्चर्य कि आर्य साहिबान क्यों आकारण दूसरों के किस्से प्रस्तुत करते हैं, आप बीती को क्यों इतनी जल्दी भूल गए और क्यों वे पण्डित लेखराम की भविष्यवाणी से लाभ नहीं उठाते। तनिक पण्डित लेखराम की पुस्तक खोल कर देखें कि उसने मेरे बारे में विज्ञापन प्रकाशित किया था कि मुझे परमेश्वर ने सूचना दी है कि यह व्यक्ति तीन वर्ष तक हैज़े से मर जाएगा। और मैंने भी ख़ुदा तआला से इल्हाम पाकर कई पुस्तकों में प्रकाशित कर दिया था कि पण्डित लेखराम

छः वर्ष के समय तक कत्ल के द्वारा मारा जाएगा और वह दिन ईद के दिन से मिला हुआ होगा और कुछ समय बाद इस देश में ताऊन फैलेगी। अतः वे सब बातें पूरी हो गईं और आप लोगों का बहादुर पण्डित लेखराम आपको लज्जित करने वाला 6 मार्च को इस संसार से चला गया। देखो! इस्लाम का ख़ुदा कैसा सच्चा और विजयी निकला। यदि यह मनुष्य का काम था तो क्यों लेखराम की भविष्यवाणी पूरी न हुई। मैं आर्य साहिबों से विनम्रतापूर्वक पूछता हूँ कि यह भविष्यवाणी पण्डित लेखराम साहिब की जो मेरे बारे में थी कि यह व्यक्ति 3 वर्ष के भीतर हैज़े से मर जाएगा, क्या यह वास्तव में परमेश्वर की ओर से थी? फिर ऐसे मुक़ाबले के समय लेखराम का परमेश्वर क्यों कमज़ोर पड़ गया? और अगर पण्डित जी ने झूठ बोला था और परमेश्वर पर झूठ गढ़ा था तो क्या ऐसे झूठ गढ़ने वाले की यादगारें स्थापित करना उचित है जिसने परमेश्वर पर झूठ बोला? देखो इस मुक़ाबले में हमारे ख़ुदा की कैसी स्पष्ट भविष्यवाणी पूरी हुई और मैंने लिख दिया था कि समस्त आर्य साहिबान अब मिलकर लेखराम के बचाने के लिए अपने परमेश्वर से दुआ कर लें परन्तु परमेश्वर बचा न सका। अब व्यवहारिक रूप से हम इसी पर समाप्त करते हैं। जो सन्मार्ग का अनुसरण करे उस पर सलामती हो।

समापन

आर्य साहिबों के कुछ आरोपों के उत्तर

मनुष्य जब बिना सोचे समझे केवल नुक्ताचीनी के उद्देश्य से विरोध की दृष्टि से देखे तो यद्यपि कैसा ही कोई मामला सीधा और साफ हो उसकी नज़र में आपत्ति योग्य ठहर जाता है ऐसा ही आर्य साहिबों का हाल है कि वे इस अपमान की कुछ भी परवाह नहीं करते जो एक ऐतराज़ के ग़लत और अनुचित सिद्ध होने में एक लज्जावान व्यक्ति के दिल पर सदमा पहुंचाता है। अब सुनिए ऐतराज़ यह हैं जो हमेशा इस्लाम जैसे पवित्र और संपूर्ण धर्म पर निपट अज्ञानता पूर्वक करते हैं। और हम इस समय वह ऐतराज़ लिखते हैं जो उन्होंने 28 फरवरी

1903 ईस्वी को क़ादियान में जलसा करके इस्लाम पर किए और इस प्रकार यह सिद्ध कर दिया कि उनके पक्षपात और नासमझी और अकारण द्वेष की कहां तक नौबत पहुंची है:-

ऐतराज़ (आरोप)

1) मुसलमान ख़ुदा का अपमान करते हैं क्योंकि उनकी आस्था है कि ख़ुदा अर्श पर बैठा हुआ है और चार फरिश्तों ने उस के तख़्त को उठाया हुआ है। इस प्रकार सिद्ध होता है कि ख़ुदा सीमित है और स्वयं में स्थित नहीं और जब सीमित है तो उसका ज्ञान भी सीमित होगा और हर स्थान पर उपस्थित तथा सब कुछ देखने वाला न होगा।

उत्तर

हे सज्जनो! मुसलमानों की यह आस्था नहीं है कि अर्श कोई शारीरिक तथा बनाई हुई चीज़ है जिस पर ख़ुदा बैठा हुआ है। समस्त पवित्र क़ुरआन को आरंभ से अंत तक पढ़ो उसमें कदापि नहीं पाओगे कि अर्श भी कोई सीमित और बनाई हुई चीज़ है। ख़ुदा ने बार-बार पवित्र क़ुरआन में फ़रमाया है कि प्रत्येक वस्तु जो कोई अस्तित्व रखती है उसका मैं ही पैदा करने वाला हूँ। मैं ही धरती और आकाश और रूह और उनकी समस्त शक्तियों का स्रष्टा हूँ। मैं अपने अस्तित्व में स्वयं स्थापित हूँ और प्रत्येक वस्तु मेरे साथ स्थापित है। और प्रत्येक वस्तु जो मौजूद है वह मेरी ही बनाई हुई है परन्तु यह कहीं नहीं फ़रमाया कि अर्श भी कोई शारीरिक वस्तु है जिसका मैं पैदा करने वाला हूँ। यदि कोई आर्य पवित्र क़ुरआन में से निकाल दे कि अर्श कोई शारीरिक और बनाई हुई वस्तु है तो मैं उसको इससे पूर्व कि वह क़ादियान से बाहर जाए एक हज़ार रुपए पुरस्कार स्वरूप दूंगा। मैं उस ख़ुदा की सौगंध खाता हूँ, जिसकी झूठी सौगंध खाना लानती (अभागे) का काम है, कि मैं पवित्र क़ुरआन की आयत दिखाते ही हज़ार रुपया हवाले कर दूंगा अन्यथा में सविनय कहता हूँ कि ऐसा व्यक्ति स्वयं लानत का पात्र होगा जो ख़ुदा पर झूठ बोलता है।

अब स्पष्ट है कि इस ऐतराज़ का आधार तो केवल इस बात पर है कि अर्श कोई अलग वस्तु है जिस पर ख़ुदा बैठा हुआ है और जब यह बात सिद्ध न हो सकी तो कुछ ऐतराज़ न रहा। ख़ुदा स्पष्ट कहता है कि वह धरती पर भी है और आकाश पर भी और किसी चीज़ पर नहीं बल्कि अपने वजूद से स्वयं स्थापित है और प्रत्येक चीज़ को उठाए हुए है और प्रत्येक वस्तु को अपनी परिधि में लिए हुए है। जहां 3 हों तो चौथा उनका ख़ुदा है। जहां 5 हों तो छठा उनके साथ ख़ुदा है और कोई स्थान नहीं जहां ख़ुदा नहीं। और फिर फ़रमाता है-

فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ (अलबक़र: 116)

जिस ओर तुम मुख करो उसी ओर ख़ुदा को पाओगे। तुमसे तुम्हारी रगे जान* से भी अधिक निकट है। वही है जो सबसे पहले है और वही है जो अंतिम है और वह समस्त वस्तुओं से अधिक स्पष्ट है और वह गुप्त से अधिक गुप्त है। और फिर फ़रमाता है-

وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ

(अल बक़र: - 187)

अर्थात जब मेरे बंदे मेरे बारे में पूछें कि वह कहां है तो उत्तर यह है कि ऐसा निकट हूँ कि मुझसे अधिक कोई निकट नहीं। जो व्यक्ति मुझ पर ईमान लाकर मुझे पुकारता है तो मैं उसका उत्तर देता हूँ। प्रत्येक वस्तु की बनावट मेरे हाथ से है और मेरा ज्ञान सब पर हावी है। मैं ही हूँ जो धरती और आकाश को उठा रहा हूँ। मैं ही हूँ जो तुम्हें थल और जल में उठा रहा हूँ।

यह समस्त आयतें पवित्र क़ुरआन में मौजूद हैं। बच्चा-बच्चा मुसलमानों का उनको जानता है और पढ़ता है जिसका जी चाहे वह हमसे आकर अभी पूछ ले। फिर इन आयतों को स्पष्ट न करना और एक रूपक को लेकर उस पर ऐतराज़ कर देना क्या यही आर्य समाज की **ईमानदारी** है ऐसा संसार में कौन मुसलमान है जो ख़ुदा को सीमित समझता है या उसके व्यापक और असीमित

* **रगे जान**- वह सबसे बड़ी रग जिससे समस्त रगों में रक्त पहुँचता है- अनुवादक

ज्ञान से इन्कारी है। अब याद रखो कि पवित्र क़ुरआन में यह तो कहीं भी नहीं कि ख़ुदा को कोई फरिश्ता उठा रहा है बल्कि जगह-जगह यह लिखा है कि ख़ुदा प्रत्येक चीज़ को उठा रहा है। हां कुछ स्थानों पर यह रूपक वर्णित है कि ख़ुदा के अर्श को जो वास्तव में कोई शारीरिक या बनाई हुई वस्तु नहीं, फ़रिश्ते उठा रहे हैं। बुद्धिमान इस स्थान से समझ सकता है कि जबकि अर्श कोई शारीरिक वस्तु ही नहीं तो फ़रिश्ते किस चीज़ को उठाते हैं। अवश्य यह कोई रूपक होगा, परन्तु आर्य साहिबों ने इस बात को नहीं समझा क्योंकि इंसान स्वार्थ और पक्षपात के समय अंधा हो जाता है। अब वास्तविकता सुनो कि पवित्र क़ुरआन में शब्द अर्श का जहां-जहां प्रयोग हुआ है उससे अभिप्राय ख़ुदा की महानता और प्रतिष्ठा और बुलंदी है। इसी कारण उसको बनाई हुई चीज़ों में सम्मिलित नहीं किया और ख़ुदा तआला की महानता और प्रतिष्ठा के **द्योतक★चार** हैं जो वेद की दृष्टि से 4 देवता कहलाते हैं परन्तु क़ुरआनी परिभाषा की दृष्टि से उनका नाम **फ़रिश्ते** भी है और वह यह हैं- **आकाश** जिसका नाम इंद्र भी है, **सूर्य** देवता जिसको अरबी भाषा में शम्स कहते हैं, **चंद्रमा** जिसको अरबी में 'क़मर' कहते हैं, **धरती** जिसको अरबी में 'अर्ज़' कहते हैं। यह चारों देवता जैसा कि हम इस पुस्तक में वर्णन कर चुके हैं ख़ुदा की चार विशेषताओं को जो उसकी

★**हाशिया** :- ख़ुदा तआला की चार विशेषताएं हैं जिनसे रबूबियत का पूर्ण वैभव नज़र आता है और पूर्णत: उस अनादि और अनंत अस्तित्व का चेहरा दिखाई देता है। अत: ख़ुदा तआला ने चार विशेषताओं को सूरह फातिहा में वर्णन करके अपनी हस्ती को उपास्य क़रार देने के लिए इन शब्दों से लोगों को इक़रार करने का निर्देश दिया है कि 'इय्याक नाबुदु व इय्याक नस्तईन' अर्थात हे वह ख़ुदा जो इन चार विशेषताओं से युक्त है हम विशेष रूप से तेरी ही उपासना करते हैं क्योंकि तेरी रबूबियत समस्त संसार को अपनी परिधि में लिए हुए है और तेरी रहमानियत भी समस्त ब्रह्मांड पर हावी है और तेरी रहीमियत भी समस्त संसार पर हावी है। और तेरी कर्मफल देने की मालिकाना विशेषता भी समस्त संसार पर हावी है। और तेरे इस सौंदर्य तथा उपकार में भी कोई भागीदार नहीं इसलिए हम तेरी उपासना में भी किसी को भागीदार नहीं करते।

अब स्पष्ट हो कि ख़ुदा तआला ने इस सूरह में इन चार विशेषताओं को अपनी ख़ुदाई का पूर्ण द्योतक करार दिया है और इसीलिए केवल इतने वर्णन पर यह परिणाम निकाला है

जबरूत (प्रताप) और महानता का संपूर्ण द्योतक है उनको दूसरे शब्दों में अर्श कहा जाता है, उठा रहे हैं। अर्थात संसार पर यह प्रकट कर रहे हैं। व्याख्या की आवश्यकता नहीं इस वर्णन को हम विस्तृत लिख आए हैं और पवित्र क़ुरआन में तीन प्रकार के फ़रिश्ते लिखे हैं- (1) पार्थिव शारीरिक कण तथा रूहों की शक्तियां (2) आकाश, सूर्य, चंद्रमा, धरती की शक्तियां जो काम कर रही हैं। (3) उन सब पर श्रेष्ठ शक्तियां जो जिब्राइल, मीकाईल व इज़राईल आदि का नाम रखती हैं, जिनको वेद में जम लिखा है परन्तु इस स्थान पर फरिश्तों से यह

शेष हाशिया- कि ऐसा ख़ुदा जो यह चार विशेषताएं अपने अंदर रखता है वही उपासना के योग्य है और वास्तव में यह विशेषताएं हर प्रकार से पूर्ण हैं और एक चक्र के तौर पर ख़ुदाई के समस्त अंशों और शर्तों पर फैली हुई है। क्योंकि इन विशेषताओं में ख़ुदा की प्रारंभिक विशेषता का भी वर्णन है और मध्य समय की रहमानियत और रहीमियत का भी वर्णन है और फिर अंतिम समय की विशेषता, मजाज़ात (लाक्षणिक) का भी वर्णन है। और सैद्धांतिक रूप से कोई कर्म अल्लाह तआला का इन चार विशेषताओं से बाहर नहीं। अत: यह चार विशेषताएं ख़ुदा तआला की पूरी सूरत दिखाती हैं जो वास्तव में "इस्तवा अलल अर्श" के यही अर्थ हैं कि ख़ुदा तआला की यह विशेषताएं जब संसार को पैदा करके प्रकट हो गईं तो ख़ुदा तआला इन अर्थों से अपने अर्श पर पूर्ण रूप से बैठ गया कि ख़ुदाई की अनिवार्य विशेषताओं में से कोई विशेषता शेष नहीं बची और समस्त विशेषताओं का पूर्ण रूप से प्रकटन हो गया है जैसा कि जब बादशाह अपने तख़्त पर बैठता है तो राज्याभिषेक के समय उसका समस्त वैभव प्रकट होता है। एक ओर शाही आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भिन्न-भिन्न प्रकार के सामान तैयार करने का आदेश होता है और वह तुरंत हो जाते हैं और वही सामान्य रबूबियत की वास्तविकता है। दूसरी ओर शाहाना दानशीलता से बिना किसी कर्म के उपस्थित जनों को दान-दक्षिणा से मालामाल किया जाता है। तीसरी ओर जो लोग सेवा कर रहे हैं उनको सेवा करने के कारण उचित वस्तुओं के द्वारा सहायता दी जाती है। चौथी ओर अच्छे बुरे प्रतिफल का द्वार खोला जाता है। किसी की गर्दन काट दी जाती है और कोई आज़ाद किया जाता है। यह चार विशेषताएं राज्याभिषेक के लिए हमेशा अनिवार्य होती हैं। अत: ख़ुदा तआला का चार विशेषताओं को संसार में लागू करना मानो तख़्त पर बैठना है जिसका नाम अर्श है।

अब रही यह बात कि उसके क्या अर्थ हैं कि इस तख्त को चार फरिश्ते उठा रहे

चार देवता अभिप्राय हैं अर्थात आकाश और सूर्य आदि जो ख़ुदा तआला की चार विशेषताओं को उठा रहे हैं। यह वही विशेषताएं हैं जिनको दूसरे शब्दों में अर्श कहा गया है। इस फिलॉसफी का वेद को भी इक़रार है परन्तु यह लोग खूब वेद के ज्ञाता हैं जो अपने घर के विषय से भी इन्कार कर रहे हैं।

अत: वेद के यह चार देवता अर्थात आकाश, सूर्य, चंद्रमा और धरती ख़ुदा के अर्श को जो रबूबियत और रहमानियत और रहीमियत और मालिक-ए-यौमिद्दीन की विशेषता है, उठा रहे हैं और फ़रिश्ते का शब्द पवित्र क़ुरआन

शेष हाशिया- हैं। अत: उसका यही उत्तर है कि इन चार सिफात (विशेषताओं) पर चार फरिश्ते नियुक्त हैं जो संसार पर ख़ुदा तआला की इन विशेषताओं को प्रकट करते हैं। और उनके अधीन चार सितारे हैं जो चार प्रकार के रब कहलाते हैं जिनको वेद में देवता के नाम से पुकारा गया है। अत: वे इन चारों विशेषताओं की वास्तविकता को संसार में फैलाते हैं मानो इस आध्यात्मिक तख्त को उठा रहे हैं। बुत परस्तों का स्पष्ट रूप से यह विचार था जैसा कि वेद से प्रकट है कि यह चार विशेषताएं स्थाई तौर पर देवताओं में पाई जाती हैं। इसी कारण वेद में जगह-जगह उनकी स्तुति और महिमा की गई और उनसे मुरादे मांगी गईं। अत: ख़ुदा तआला ने रूपक के तौर पर यह समझाया कि यह चार देवता जिनको मूर्ति पूजक अपना उपास्य मानते हैं यह सेव्य नहीं हैं बल्कि यह चारों सेवक हैं और ख़ुदा तआला के अर्श को उठा रहे हैं अर्थात सेवकों के समान इन ख़ुदाई विशेषताओं को अपने दर्पणों में प्रकट कर रहे हैं। और अर्श से अभिप्राय तख्त नशीनी की अनिवार्य विशेषताएं हैं जैसा कि अभी मैंने वर्णन किया है। हम अभी लिख चुके हैं कि रब के अर्थ देवता हैं. अत: पवित्र कुरान पहले इसी सूरत से आरंभ हुआ है कि 'अल हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन' अर्थात वे समस्त महिमा और स्तुति उस ख़ुदा की होनी चाहिए जो समस्त ब्रह्मांड का देवता है। वही है जो रब्बुल आलमीन है और रहमान उल आलमीन है और रहीमुल आलमीन है और मालिक जज़ा उल आलमीन (प्रतिफल का मालिक) है। इसके बराबर और कोई देवता नहीं क्योंकि पवित्र कुरान के समय में देवों की पूजा बहुत प्रचलित थी और यूनानी हर एक देवता का नाम रब्बुन्नौ रखते थे और रब्बुन्नौ का शब्द आर्यवर्त में देवता के नाम से नामित था। इसलिए पहले ख़ुदा की वाणी ने उन झूठे देवताओं की ओर ही ध्यान दिया जैसा कि उसने फ़रमाया- 'अल हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन' अर्थात वह जो समस्त ब्रह्मांड का देवता है न केवल एक या दो संसारों का। उसी की उपासना तथा प्रशंसा होनी चाहिए दूसरों की

में सामान्य है प्रत्येक वस्तु जो उसकी आवाज़ सुनती है वह उसका फरिश्ता है। अत: संसार का कण-कण ख़ुदा का फरिश्ता है क्योंकि वे उसकी आवाज़ सुनते हैं और उसका आज्ञापालन करते हैं और यदि कण-कण उसकी आवाज़ सुनता नहीं तो ख़ुदा ने धरती तथा आकाश को किस प्रकार पैदा कर लिया और यह रूपक जो हमने ऊपर वर्णन किया है इसके समान ख़ुदा के कलाम में बहुत से रूपक हैं जो अत्यंत सूक्ष्म ज्ञान और हिकमत पर आधारित हैं। यदि अब भी कोई व्यक्ति अपनी नासमझी से न रुके तो वह किसी ऐतराज़ का चयन करके

शेष हाशिया- महिमा और स्तुति करना ग़लती है इस अवस्था में जो विशेषताएं मूर्तिपूजकों ने 4 देवताओं के लिए निर्धारित कर रखी थीं ख़ुदा तआला ने उन सबको अपने अस्तित्व में एकत्र कर दिया है और केवल अपने अस्तित्व को उन विशेषताओं का मूल स्रोत दर्शाया है। मूर्तिपूजक पहले से यह भी विचार करते थे कि ख़ुदा की मूल विशेषताएं अर्थात जो समस्त विशेषताओं की असल जड़ हैं, वे केवल चार हैं- पैदा करना फिर उचित सामग्री प्रदान करना फिर प्रगति और उन्नति हेतु कर्म करने वालों की सहायता करना फिर अंत में (कर्मानुसार) अच्छा और बुरा प्रतिफल देना और वे इन चार विशेषताओं को 4 देवताओं की ओर संबंध करते थे। इसी आधार पर नूह की क़ौम के भी चार ही देवता थे और उन्हीं विशेषताओं की दृष्टि से अरब के मूर्ति पूजको ने भी लात, मनात, उज़्ज़ा और हुबुल बना रखे थे। उन लोगों का विचार था कि यह 4 देवता स्वेच्छा से संसार में अपने अपने रंगों में भरण पोषण कर रहे हैं और हमारी सिफारिश करने वाले हैं और हमें ख़ुदा तक भी यही पहुंचाते हैं। अत: यह अर्थ-

لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى (सूरः ज़ुमर- 39/4)

से प्रकट है और जैसा कि हम लिख चुके हैं वेद भी इन चारों देवताओं की महिमा और स्तुति की प्रेरणा देता है और वेद में यद्यपि अन्य देवताओं का भी वर्णन है परंतु सैद्धांतिक रूप से मूल देवता जिनसे अन्य समस्त देवता पैदा हुए हैं या यूं कहो कि उनकी शाखा हैं, वे चार ही हैं। क्योंकि काम भी चार ही हैं। अत: पवित्र कुरान का पहला उद्देश्य यही था कि वेद आदि धर्मों के देवताओं को नष्ट करे और बताए कि यह लोगों की ग़लतियां हैं कि अन्य अन्य वस्तुओं को देवता अर्थात् रब्बुन्नौ बना रखा था बल्कि यह चार विशेषताएं मूलत: ख़ुदा तआला की हैं। और इन चार विशेषताओं के अर्श को सेवकों और नौकरों के

इस्लाम पर प्रस्तुत करे फिर इंसानियत तथा धैर्यपूर्वक उसका उत्तर सुने। अन्यथा ऐसे आरोपों से यदि कुछ सिद्ध होता है तो केवल इतना कि आरोप लगाने वाला वास्तविकता से अनभिज्ञ और उसका दिल पक्षपात से भरा हुआ और उसका उद्देश्य केवल अपमान है। धर्म एक ज्ञान है और अपने अंदर रहस्य रखता है। क्या यह अनिवार्य है कि इस प्रकार झूठे तौर पर ऐतराज़ किए जाएं अन्यथा मुसलमान उनसे पहले कह सकते हैं कि जिन ख़ुदाओं को वेद ने प्रस्तुत किया है वह तो यही अर्थात सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, जल और धरती आदि पैदा की हुई चीज़ें हैं। यह सब सीमित और बनाई हुई और निर्जीव हैं। इसलिए आर्य साहिबों का परमेश्वर न केवल सीमित बल्कि निर्जीव वस्तु है। इसीलिए उनकी ध्वनि नहीं सुन सकता और न उत्तर दे सकता है।

फिर जिस परमेश्वर ने कुछ पैदा ही नहीं किया उसका सीमित होना तो बहरहाल स्वीकारना पड़ेगा क्योंकि इस प्रकार समझ लो कि रूहों और परमाणु और परमेश्वर से मानो एक नगर बसा हुआ है जिसके एक मोहल्ले में रूहें

शेष हाशिया- समान यह बेजान देवता उठा रहे हैं। अत: किसी ने कहा है-

حمد را باتو نسبتے است درست
بر در ہر کہ رفت بر در تست ٭

अत: यह ऐतराज़ कि जो आर्य साहिबान हमेशा से करते हैं यह तो वास्तव में उनके वेदों पर ऐतराज़ है क्योंकि मुसलमान तो उस ख़ुदा की उपासना करते हैं जो सेव्य है परंतु आर्य साहिबान उन झूठे देवताओं को ख़ुदा समझ रहे हैं जो सेवकों और नौकर-चाकरों के समान ख़ुदा तआला की चार विशेषताओं का अर्श अपने सिर पर उठा रहे हैं बल्कि वह तो नौकरों के भी नौकर हैं क्योंकि उन पर और शक्तियां भी हावी हैं जो फरिश्तों के नाम से नामित हैं। जो उन देवताओं की शक्तियों को स्थापित रखते हैं जिनमें से शरीयत (अर्थात क़ुरआन) की भाषा में किसी को जिब्राइल कहते हैं और किसी को मीकाईल और किसी को इज़राईल और किसी को इस्राफील और सनातन धर्म वाले इस प्रकार के फरिश्तों के भी समर्थक हैं और उनका नाम जम रखते हैं। इसी से।

٭ अनुवाद- प्रशंसा का सही सम्बन्ध तुझ से ही है मनुष्य किसी के भी द्वार पर चला जाए (वास्तव में) वह तेरे ही द्वार पर होता है- अनुवादक

अर्थात जीव रहते हैं और दूसरे मोहल्ले में परमाणु अर्थात शारीरिक कण रहते हैं और तीसरे मोहल्ले के कोने में परमेश्वर रहता है क्योंकि जो वस्तुएं अनादि और अपना अपना स्थाई अस्तित्व रखती हैं उन में परमेश्वर समा नहीं सकता। क्या तुम सर्वव्यापक हो सकते हो? अत: सोच कर देखो कि अनादि और स्वयंभू होने की हैसियत से तुम में और परमेश्वर में क्या अंतर है। तो फिर वह क्योंकर दूसरों में प्रवेश कर सकता है। अत: अकारण तुम्हारा परमेश्वर सीमित हो गया और सीमित होने के कारण ज्ञान भी उसका सीमित हो गया परन्तु उस ख़ुदा को कौन सीमित कह सकता है जिसको पवित्र क़ुरआन ने प्रस्तुत किया है जिसके बारे में वह कहता है कि प्रत्येक जीव की वही जान है जिसके साथ वह जीवित है और उसके हाथ से निकला और उसी के सहारे से मौजूद है और समस्त वस्तुओं पर उसका आधिपत्य है क्योंकि प्रत्येक वस्तु उसी की पैदा की हुई है।

अज्ञानी मनुष्य जो पक्षपात से भरा हुआ होता है अपने मुंह से एक बात निकालता है और कभी इरादा नहीं रखता कि उसका निर्णय करे, यही आर्य साहिबों का हाल है मानो वे इस संसार में हमेशा रहेंगे अन्यथा हम कहते हैं कि अगर तुम पवित्र क़ुरआन की एक बात को भी रद्द कर सको तो जो जुर्माना चाहो हम पर लगा लो। चाहे तुम हमारी सारी संपत्ति ले लो। परन्तु क्या किसी की नियत है कि शांतिपूर्वक और धैर्य पूर्वक जैसा कि अदालत में मुक़द्दमों का फ़ैसला होता है किसी बात का फ़ैसला करे, कदापि नहीं। **अत: धैर्य रखो जब तक ख़ुदा हमारा और तुम्हारा निर्णय करे।**

नंबर- 2 एक यह भी ऐतराज़ है कि फ़रिश्ते ख़ुदा तआला को जाकर शाश्वत नेकी की सूचना देते हैं और उस समय तक वह अनभिज्ञ रहता है।

उत्तर- इसका उत्तर यह है कि 'झूठों पर ख़ुदा की लानत हो' अन्यथा खोलकर दिखलाओ कि पवित्र क़ुरआन में कहां लिखा है कि मैं लोगों के समाचार से अनभिज्ञ होता हूँ जब तक कोई फरिश्ता मुझे आकर सूचना न दे। वह तो बार-बार पवित्र क़ुरआन में कहता है कि कण-कण की मुझे जानकारी है। एक पत्ता भी मेरे आदेश के बिना नहीं गिरता। मैं आश्चर्य करता हूँ कि यह किस प्रकार

की रूहें हैं कि दिलेरी से इतना झूठ गढ़ती हैं। संपूर्ण क़ुरआन इस बात से भरा हुआ है कि ख़ुदा प्रत्येक वस्तु का व्यक्तिगत ज्ञान रखता है। अत: हम इस झूठ का क्या नाम रखें कि मानो मुसलमानों की यह आस्था है कि ख़ुदा को कुछ भी अपनी सृष्टि की ख़बर नहीं जब तक फ़रिश्ते जाकर रिपोर्ट न दें।

नंबर- 3 एक यह भी ऐतराज़ है कि मुसलमानों की आस्था है कि ख़ुदा पहले कुछ समय तक बेकार रहा क्योंकि संसार शाश्वत नहीं।

उत्तर- यह मुसलमानों की आस्था कदापि नहीं है कि मनुष्य के पैदा करने से पूर्व ख़ुदा बेकार था बल्कि वह पवित्र क़ुरआन में बार-बार कहता है कि मैं अनादिकाल से स्रष्टा हूँ परन्तु इस बात का विवरण कि वह किस प्रजाति को पैदा करता रहा है यह बात इंसान के सामर्थ्य से बाहर है। हम पवित्र क़ुरआन के अनुसार ईमान रखते हैं कि वह कभी बेकार नहीं रहा परन्तु इसके विवरण को हम नहीं जानते। हमें मालूम नहीं कि उसने कितनी बार इस संसार को बनाया और कितनी बार नष्ट किया। यह लंबा और अनंत ज्ञान ख़ुदा को है किसी कार्यालय में यह समा नहीं सकता। हां ईसाइयों की आस्था है कि केवल कुछ अवधि से ख़ुदा ने संसार को पैदा किया है पहले कुछ न था और अनादि से वह सृष्टा नहीं है, अत: यह ऐतराज़ उन पर करो। और फिर आप लोगों को शर्म करनी चाहिए कि हम तो मानते हैं कि हमारा ख़ुदा अनादि से शारीरिक कणों को पैदा करता रहा और अनादिकाल से रूहें भी पैदा करता रहा परन्तु आप लोग तो अनादि को छोड़ एक बार के लिए भी ख़ुदा तआला की इन विशेषताओं को नहीं मानते। फिर क्यों अपने घर से अनभिज्ञ रहकर इस्लाम पर केवल झूठे तौर पर आरोप लगाते हैं। वरना लज्जा और शर्म कर के पवित्र क़ुरआन से हमें दिखा दो कि कहां लिखा है कि मैं अनादिकाल से सृष्टा नहीं हूँ। परन्तु आपका परमेश्वर तो सिवाए राजगीर और बढ़ई की हैसियत से अधिक मर्तबा (पद) नहीं रखता और कैसे मालूम हुआ कि वह परोक्ष का ज्ञाता है? वेद में उसका क्या प्रमाण है ज़रा सोच विचार कर उत्तर दो।

नंबर- 4 एक यह भी ऐतराज़ है कि मुसलमानों का ख़ुदा परिवर्तनशील

है। कभी कोई आदेश देता है कभी कोई।

उत्तर- ख़ुदा आप लोगों को हिदायत दे पवित्र क़ुरआन में कहीं नहीं लिखा कि ख़ुदा परिवर्तनशील है बल्कि यह लिखा है कि इंसान परिवर्तनशील है। इसलिए उसके अनुकूल ख़ुदा उसके लिए परिवर्तन करता है जब बच्चा पेट में होता है तो उसको भोजन स्वरूप खून मिलता है और जब पैदा होता है तो एक समय तक केवल दूध पीता है और फिर उसके बाद अनाज खाता है और ख़ुदा तआला तीनों सामान उसके लिए समय-समय पर पैदा कर देता है। पेट में होने की हालत में पेट के फरिश्तों को जो आंतरिक कण हैं आदेश कर देता है कि उसके भोजन के लिए खून बनाएं और फिर जब पैदा होता है तो उस आदेश को रद्द कर देता है और छाती के फरिश्तों को जो उसके कण हैं, आदेश देता है कि उसके लिए दूध बनाएं और जब वह दूध से परवरिश पा लेता है तो फिर उस आदेश को भी रद्द कर देता है और फिर धरती के फरिश्तों को जो उसके कण हैं आदेश करता है कि उसके लिए अंत तक अनाज तथा जल उत्पन्न करते रहें। अत: हम मानते हैं कि ऐसे परिवर्तन ख़ुदा के आदेश में हैं चाहे क़ानून क़ुदरत के द्वारा और चाहे शरीयत के द्वारा। परन्तु उससे ख़ुदा में कौन सा परिवर्तन अनिवार्य हुआ? शर्म! शर्म! शर्म!

परन्तु अफ़सोस कि वेद की दृष्टि से ख़ुदा इन परिवर्तनों का मालिक नहीं बन सकता क्योंकि वेद तो ख़ुदा के फरिश्तों का इन्कारी है अत: संसार के कण तथा रूहों की शक्तियां उसकी आवाज़ कैसे सुन सकती हैं। भौतिक विज्ञान तथा खगोल विज्ञान की श्रंखला तभी ख़ुदा की ओर संबद्ध हो सकती है कि जब स्वभाविक रूप से प्रत्येक कण सृष्टि का ख़ुदा का फरिश्ता मान लिया जाए अन्यथा फरिश्तों के इन्कार से दहरिया बनना पड़ेगा कि जो कुछ संसार में हो रहा है परमेश्वर को उसका कुछ भी ज्ञान नहीं और न उसकी इच्छा और इरादे से हो रहा है। उदाहरण स्वरूप कानों में सोना-चांदी और पीतल और तांबा और लोहा तैयार होता है और कुछ कानों में से हीरे निकलते हैं और नीलम पत्थर पैदा होता है और कुछ स्थान याकूत (पत्थर) की कानें हैं और कुछ नदियों में से मोती पैदा

होते हैं और प्रत्येक जानवर के पेट से बच्चा या अंडा पैदा होता है। अब ख़ुदा ने तो पवित्र क़ुरआन में हमें यह सिखाया है कि यह क़ुदरती सिलसिला स्वयं नहीं बल्कि इन चीज़ों के समस्त कण ख़ुदा की आवाज़ सुनते हैं और उसके फ़रिश्ते हैं अर्थात उसकी ओर से एक काम के लिए निर्धारित हैं। अत: वे उस काम उसकी इच्छा के अनुसार करते रहते हैं सोने के कण सोना बनाते हैं और मानव अस्तित्व के कण मां के पेट में इंसानी बच्चा तैयार करते हैं और यह कण स्वयं कुछ भी काम नहीं करते बल्कि ख़ुदा की आवाज़ सुनते हैं और उसकी इच्छा के अनुसार काम करते हैं इसीलिए वे उसके फ़रिश्ते कहलाते हैं और फ़रिश्ते कई प्रकार के होते हैं यह तो धरती के फ़रिश्ते हैं परन्तु आसमान के फ़रिश्ते आसमान से अपना प्रभाव डालते हैं जैसा कि सूर्य की गर्मी भी ख़ुदा का एक फरिश्ता है जो फलों का पकाना और दूसरे काम करता है और हवाएं भी ख़ुदा के फ़रिश्ते हैं जो बादलों को इकट्ठा करते और खेतों को अपने विभिन्न प्रभाव पहुंचाते हैं और फिर उनके ऊपर और भी फ़रिश्ते हैं जो उन पर प्रभाव डालते हैं। भौतिक विज्ञान इस बात का गवाह है कि फरिश्तों का अस्तित्व आवश्यक है और उन फरिश्तों को हम अपनी आंखों से देख रहे हैं। अब आर्य साहिबों के कथन अनुसार वेद फरिश्तों का इन्कारी है। अत: इस प्रकार वह इस स्वाभाविक श्रंखला से इन्कारी और निरीश्वरवादी धर्म की बुनियाद डालता है। क्या यह बात स्पष्ट और अनुभव से सिद्ध नहीं कि प्रत्येक सांसारिक कण एक काम में व्यस्त है यहां तक कि शहद की मक्खियां ख़ुदा की वह्यी से एक काम कर रही हैं। अत: वेद यदि इस सिलसिले से इन्कारी है तो फिर उसके लिए उचित नहीं। इस अवस्था में वह निरीश्वरवादी धर्म का समर्थक होगा। अगर यही वेद विद्या का नमूना है तो शाबाश खूब नमूना प्रस्तुत किया।

नंबर- 5 एक यह भी ऐतराज़ है कि शफ़ाअत पर भरोसा करना शिर्क है।

उत्तर- पवित्र क़ुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है-

مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ (अल बकर: 2/256)

अर्थात ख़ुदा के आदेश के अतिरिक्त कोई शफ़ाअत (सिफ़ारिश) नहीं हो सकती।

पवित्र क़ुरआन की दृष्टि से शफ़ाअत के अर्थ यह हैं कि एक व्यक्ति अपने भाई के लिए दुआ करे कि उसका अमुक कार्य सफ़ल हो जाए या कोई मुसीबत टल जाए। अत: पवित्र क़ुरआन का आदेश है कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के समक्ष अधिक सानिध्य प्राप्त है वह अपने कमज़ोर भाई के लिए दुआ करे कि उसको वह मर्तबा प्राप्त हो। यही शफाअत की वास्तविकता है। अत: हम अपने भाइयों के लिए निस्सन्देह दुआ करते हैं कि ख़ुदा उनको शक्ति दे और उनकी मुसीबतें दूर कर दे और यह एक प्रकार की हमदर्दी है। अत: यदि वेद ने इस हमदर्दी को नहीं सिखाया और वेद की दृष्टि से एक भाई दूसरे के लिए दुआ नहीं कर सकता तो यह बात वेद के लिए प्रशंसनीय नहीं बल्कि एक बड़ा दोष है क्योंकि समस्त मनुष्य एक शरीर के समान हैं। इसलिए ख़ुदा ने हमें बार-बार सिखाया है कि यद्यपि शफाअत को स्वीकार करना उसका काम है परन्तु तुम अपने भाइयों के साथ में अर्थात उनके लिए दुआ करने में लगे रहो और शफाअत से अर्थात सहानुभूति पूर्वक दुआ से न रुको कि तुम्हारा एक दूसरे पर अधिकार है। असल में शफाअत का शब्द 'शफअ' से लिया गया है शफ़आ जोड़े को कहते हैं जो एक के विपरीत है। अत: इंसान को उस समय शफ़ी कहा जाता है जबकि वह पूर्ण सहानुभूति से दूसरे का जोड़ा हो कर उसमें फना हो जाता है और दूसरे के लिए ऐसी ही भलाई मांगता है जैसा कि स्वयं के लिए और याद रहे कि किसी व्यक्ति का धर्म पूर्ण नहीं हो सकता जब तक कि शफाअत के रंग में हमदर्दी उसमें पैदा न हो। बल्कि धर्म के दो ही पूर्ण अंग हैं एक ख़ुदा से मोहब्बत करना और दूसरा मानवजाति से इतनी मोहब्बत करना कि उनकी मुसीबत को अपनी मुसीबत समझ लेना और उनके लिए दुआ करना जिस को दूसरे शब्दों में शफाअत कहते हैं।

नंबर- 6 ख़ुदा की कोई आवाज़ दुनिया में सुनाई नहीं देती।

उत्तर- आश्चर्य की बात है कि बावजूद यह कि पण्डित लेखराम की मौत से समस्त आर्य साहिबों ने 6 मार्च के दिन ख़ुदा तआला की आवाज़ सुन ली और ख़ुदा ने संसार में विज्ञापन दे दिया कि लेखराम अपनी गाली-गलौज के

कारण 6 वर्ष तक किसी के हाथ से मारा जाएगा। वह आवाज़ न केवल हमने सुनी बल्कि हमारे द्वारा समस्त आर्य साहिबों ने सुनी। परन्तु क्या अब भी सिद्ध न हुआ कि ख़ुदा की आवाज़ संसार को सुनाई देती है। आप साहिबों में से पक्के आर्य लाला शरमपत और लाला मलावामल क़ादियान निवासी ख़ुदा की बहुत सी आवाज़ों के साक्षी हैं। यदि वह इन्कार करेंगे और क़ौम को ख़ुदा पर प्राथमिकता देंगे और झूठ बोलेंगे तो संभवत: कोई अन्य आसमानी आवाज़ सुन लेंगे।

विज्ञापनकर्ता

विनीत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

★ ★ ★

पारिभाषिक शब्दावली

अर्श- सिंहासन। वह स्थान जहाँ पर अल्लाह का अधिष्ठान है।

अह्ले किताब- यहूदी और ईसाई जो तौरात नामक ग्रंथ को ईशवाणी मानते हैं।

अज़ाब - अल्लाह की अवज्ञा करने पर मिलने वाला दंड। ईशप्रकोप, कष्ट, विपत्ति।

अलैहिस्सलाम- उनपर अल्लाह की कृपा हो। नबियों, रसूलों और अवतारों के नामों के बाद यह वाक्य कहा जाता है।

आयत- पवित्र क़ुर्आन की पंक्ति अथवा वाक्य।

इस्त्राईल- अल्लाह का वीर या सैनिक। हज़रत याक़ूब अलै. का एक गुणवाचक नाम, जिस के कारण उनके वंशज को बनी इस्त्राईल (अर्थात इस्त्राईल की संतान) कहा जाता है। फ़िलिस्तीन का एक भू-भाग जिस में यहूदियों ने अपना राज्य स्थापित करके उस का नाम इस्त्राईल रखा है।

ईमान- अर्थात विश्वास और स्वीकार करना। जैसे अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करना।

उम्मत- संप्रदाय। किसी नबी या रसूल के अनुयायिओं का समूह उसकी उम्मत कहलाता है।

उम्मती नबी- किसी नबी की शिक्षाओं को आगे फैलाने के लिये उसके अनुयायियों में से किसी का नबी पद प्राप्त करना।

उलमा- इस्लामी धर्मज्ञ।

क़यामत- महाप्रलय। मृत्यु के बाद अल्लाह के समक्ष उपस्थित होने का दिन

कश्फ़- जागृत अवस्था में कोई अदृष्ट विषय देखना। स्वप्न और कश्फ़ में यह अंतर है कि स्वप्न सोते में देखा जाता है और कश्फ़ जागते में देखा जाता है। दिव्य-दर्शन। योगनिद्रा, तन्द्रावस्था।

काफ़िर - सच्चाई का इन्कार करने वाला। इस्लाम धर्म का अस्वीकारी।

क़िब्ला - आमने-सामने। जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। ख़ाना काबा मुसलमानों का क़िब्ला है जिसकी ओर सारे संसार के मुसलमान मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं।

कुफ़्र- सच्चाई का इन्कार, इस्लाम का इन्कार करना।

ख़लीफ़ा- उत्तराधिकारी। अधिनायक। नबी और रसूलों के बाद उनका स्थान लेने वाला और उनके काम को चलाने वाला।

ख़िलाफ़त- नबी और रसूल के बाद उनके कामों को आगे चलाने वाली व्यवस्था, जिसका प्रमुख ख़लीफ़ा कहलाता है।

जिब्रील- ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।

जिहाद - प्रबल उद्यम करना। स्वयं को सुधारने के लिये या धर्मप्रचार के लिये प्रयत्न करना। सत्यधर्म की रक्षा के लिये प्रतिरक्षात्मक युद्ध करना।

तक़वा - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करना और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखना। संयम, धर्मपरायणता।

ताबयीन- अनुगमन कारी। वे मुसलमान जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को तो नहीं देखा परंतु हज़रत मुहम्मद सल्ल. के साहाबियों को देखा।

तबअ ताबयीन -ताबयीन के अनुगामी। जिन्होंने केवल ताबयीन को देखा।

तौरात - यहूदियों का धर्मग्रंथ।

दज्जाल- झूठा, धोखेबाज, अंत्ययुग में लोगों को धर्मभ्रष्ट कराने के लिए उत्पन्न होने वाला एक समूह।

दुरूद व सलाम -हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए की जाने वाली दुआ।

नबी- लोगों को सन्मार्ग पर लाने के लिए अल्लाह की ओर से आया हुआ व्यक्ति, जिसे अदृष्ट विषयों से अवगत कराया जाता है। अवतार।

नुबुव्वत- नबी बनने की क्रिया। अवतारत्व।

नूर- अध्यात्म प्रकाश, ज्योति।

नेमत - अल्लाह की देन।

पैग़म्बर - अल्लाह का संदेशवाहक, नबी, रसूल।

बनी इस्राईल- इस्राईल की संतान। (इस्राईल शब्द भी देखें)

बैअत- बिक जाना, धर्मगुरु के हाथ पर हाथ रख कर उसका आनुगत्य स्वीकार करना।

मुश्रिक - शिर्क करने वाला। अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को उपास्य मान कर उसे अल्लाह का समकक्ष ठहराने वाला व्यक्ति।

मुनाफ़िक़- कपटाचारी। वह व्यक्ति जो ईमान लाने का प्रदर्शन तो करे परंतु दिल से उसको अस्वीकार करने वाला हो।

मुत्तक़ी - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाला और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखने वाला व्यक्ति, धर्मपरायण।

मुबाहलः- एक दूसरे को शाप देना। इस्लामी धर्मविधान के अनुसार किसी विवादित धार्मिक विषय को अल्लाह पर छोड़ते हुए एक दूसरे को शाप देना कि जो झूठा है उस पर अल्लाह की लानत हो।

मे'राज - आध्यात्मिक उत्थान। अल्लाह की ओर हज़रत मुहम्मद सल्ल. की अलौकिक यात्रा जो सशरीर नहीं हुई।

मोमिन - अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करने वाला निष्ठावान् व्यक्ति।

याजूज-माजूज-अंत्ययुग में उत्पन्न होने वाली दो महाशक्तियाँ।

रसूल- अल्लाह का भेजा हुआ अवतार, दूत।

रज़ियल्लाहु अन्हु- अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पुरुष सहाबियों के लिए प्रयुक्त होता है। अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ।

रहिमहुल्लाहु- उन पर अल्लाह की कृपा हो। यह वाक्य दिवंगत महापुरुषों के नाम के साथ प्रयुक्त होता है।

रूह- आत्मा।

रूह-उल-क़ुदुस-पवित्रात्मा। ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।

रूह-उल-अमीन-जिब्रील, जो ईशवाणी लाने वाले फ़रिश्ता हैं।

ला'नत - अभिशाप, अमंगल कामना।

वह्यी - अल्लाह की ओर से प्रकाशित होने वाला संदेश, ईशवाणी। ईश्वरीय ग्रन्थों का अवतरण वह्यी के द्वारा होता है। पवित्र क़ुर्आन हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर वह्यी के द्वारा ही उतरा है।

शरीयत- धर्मविधान, इस्लामी धर्मविधान।

शिर्क- अल्लाह के बदले दूसरे को उपास्य मानना, किसी को अल्लाह का समकक्ष ठहराना।

सलाम - शांति और आशीर्वाद सूचक अभिवादन।

सलीब - सूली, जिस पर लटका कर मृत्युदंड दिया जाता था।

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- उनपर अल्लाह की कृपा और शांति अवतरित हो। हज़रत मुहम्मद स० के नाम के साथ यह वाक्य कहा जाता है।

सहाबी - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के वे अनुगामी जिन्हें आपकी संगति प्राप्त हुई।

सूरः / सूरत- पवित्र क़ुर्आन का अध्याय। पवित्र क़ुर्आन में 114 अध्याय हैं।

हज़रत - श्रद्धेय व्यक्तियों के नाम से पूर्व सम्मानार्थ लगाया जाने वाला शब्द।

हदीस - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के कथन जिन्हें कुछ वर्षों के पश्चात इकट्ठा करके ग्रंथबद्ध किया गया। इन में से छः विश्वसनीय हदीस ग्रंथों को **सहा-ए-सित्ता** कहा जाता है। इनके अतिरिक्त और भी हदीस के ग्रंथ हैं।

हिजरत - देशांतरण। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के मक्का से मदीना जाने की घटना हिजरत के नाम से प्रसिद्ध है।

हिदायत- सन्मार्ग प्राप्ति, सही रास्ता।

* * *